नित नेम

प्रकाशक :

शोभाचन्द सोहनलाल चोरड़िया

सरदारशहर (राजस्थान)

सम्पादक :

महालचन्द बयेद

वीर निर्वाणाब्द २४९६

द्वितीय संस्करण २०००] [मूल्य १-७५

प्रकाशक :
शोभाचन्द सोहनलाल चोरड़िया
सरदारशहर (राजस्थान)

प्राप्ति-स्थान :

१—श्री जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा,
सरदारशहर (राजस्थान)

२—शोभाचन्द सोहनलाल चोरड़िया,
सरदारशहर (राजस्थान)

३—शोभाचन्द सोहनलाल,
४, राजा उडमन्ट स्ट्रीट, कलकत्ता-१

४—ओसवाल प्रेस,
१८६, जमुनालाल बजाज स्ट्रीट, कलकत्ता-७

मुद्रक :—महालचन्द बयेद
ओसवाल प्रेस
१८६, जमुनालाल बजाज स्ट्रीट,
कलकत्ता-७

अनुक्रमणिका

नित नेम

मंगलाचरण

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधिशोषणाय ॥

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै-
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश !
दोषैरुपात्तविविधाश्रयजातगर्वैः
स्वप्नान्तरेपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि ॥

नवकार

णमो अरिहंताणं	णमो सिद्धाणं	णमो आयरियाणं
नमस्कार हुवो	नमस्कार हुवो	नमस्कार हुवो
अरिहंत भगवंत ने	सिद्ध भगवंत ने	आचार्यदेव ने

णमो उवज्झायाणं	णमो लोए सव्व साहूणं
नमस्कार हुवो	नमस्कार हुवो लोक ने विषै
उपाध्याय ने	सर्व साधुवों ने

अरिहंतों को नमस्कार करता हूं। सिद्धों को नमस्कार करता हूं। आचार्यों को नमस्कार करता हूं। उपाध्यायों को नमस्कार करता हूं। लोक में जितने साधु हैं उन सब को नमस्कार करता हूं। इसमें पांच श्रेणी की आत्माओं को नमस्कार किया गया है।

अरिहंत शब्द का अर्थ है—शत्रु को मारने वाला। आठ कर्मों के सिवाय जीव का कोई भी दुश्मन नहीं है। इन आठ कर्मों में भी ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, मोहनीय और अन्तराय ये चार कर्म बड़े प्रबल शत्रु हैं। ये चार कर्म जिनके समूल नष्ट हो जाते हैं एवं जो धर्म मार्ग के प्रवर्त्तक होते हैं उनका नाम अरिहंत है।

जो आत्मायें त्याग तपस्या रूप साधना द्वारा आठों ही कर्मों का नाश कर पूर्ण रूप से कर्म रहित हो जाती हैं—वे सिद्ध कहलाते हैं।

आचार्य शब्द से यहाँ धर्म के आचार्य ही लिये जाते हैं। धर्माचार्य वे होते हैं जो स्वयं साधुपन पालते हुए दूसरों को साधुपन पालने में सहायता देते हैं। धर्म-शासन के सब से मुख्य अधिकारी एवं संघ के स्वामी होते हैं। जैसे ६४६ साधु-साध्वी और लाखों श्रावक-श्राविकाओं के अधिनायक श्री श्री १००८ श्री श्री तुलसीरामजी स्वामी हैं।

धार्मिक सिद्धान्तों को पढ़ने और पढ़ाने वाले उपाध्याय कहलाते हैं। आचार्य के द्वारा ये उपाध्याय के पद पर नियुक्त किये जाते हैं।

पांच समिति और तीन गुप्ति सहित पांच महाव्रतों को पालने वाले साधु कहलाते हैं। अरिहंत, आचार्य, उपाध्याय और साधु ये सब ही समिति गुप्ति सहित साधुपन पालते हैं—इसलिये इन्हें नमस्कार करने से लाभ होता है। सिद्ध बिल्कुल कर्म रहित शुद्ध आत्मायें हैं—अतएव वे नमस्कार करने योग्य हैं। अरिहंत, आचार्य एवं उपाध्याय इनको साधु पद से पहले कहने का यह मतलब है कि इनमें उत्तर गुण विशेष होते हैं। आत्मा का उद्धार करने के लिये यह महान् मन्त्र है।

तिक्खुत्तो पाठ

(गुरु वन्दन विधि)

तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं (करेमि) वंदामि
तीन बार दक्षिण पास थी लेइनें प्रदक्षिणा (करूं छूं) स्तुति करूं छूं

नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं
नमस्कार करूं छूं सत्कार करूं छूं सन्मान करूं छूं गुरुदेव केहवा छै, कल्याणकारी

मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि
मङ्गलकारी धर्मदेव ज्ञानवंत चित्त प्रसन्नकारी एहवा गुरु महाराज नी सेवा करूं छूं

मत्थएण वन्दामि ।
वलि मस्तके करी वंदना करूं छूं ।

पांच परमेष्ठियों को वन्दना की विधि इस पाठ में बतलाई गई है। वन्दना करने वाला वन्दना करते समय अपने दोनों हाथों को जोड़ कर तीन बार दांयी ओर से बांयी ओर प्रदक्षिणा करता है। वन्दना करता हूं। नमस्कार करता हूं। सत्कार करता हूं। सम्मान करता हूं। आप कल्याणकारी हैं। मङ्गल करने वाले हैं। दैवत अर्थात देवता के समान हैं। चैत्य—ज्ञानमय हैं अथवा चित्त को आह्लादित करने वाले हैं। मैं

आपकी पर्युपासन अर्थात् सेवा करता हूं और मस्तक से आपकी वन्दना करता हूँ।

सामायिक प्रतिज्ञा

(सामायिक लेवानी विधि)

करेमि भंते सामाइयं सावज्जं जोगं
हूं करूं छूं हे भगवन् समता रूप सावद्य पाप व्यापार
सामायिक सहित नो

पच्चक्खामि जाव नियमं मुहूत्तं (एगं)
त्याग करूं छूँ यावत नियम सामायिक नो मुहूर्त्त (एक)
कालछै तावत् काल पर्यन्त

पज्जुवासामि दुविहं तिविहेणं न करेमि
सेवन करूं छूं दो करण तीन योग थी न करूं
सावद्य योग नो सेवन

न कारवेमि मणसा वयसा कायसा तस्स
न कराऊं मन थी वचन थी काया थी पूर्व कृत सावद्य
व्यापार थी

भंते पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि
हे भगवन् निवृत्त होऊं छूँ निंदा करूं छूँ गर्हा करूं छूँ

अप्पाणं वोसिरामि
आत्मा ने पाप थी दूर करूं छूँ।

हे भगवन् ! मैं आपकी अनुमति से सामायिक करता हूँ। मैं एक मुहूर्त के लिए सावद्य योग का प्रत्याख्यान करता हूँ अर्थात् पापकारी प्रवृत्ति छोड़ता हूँ। मैं पापकारी प्रवृत्ति स्वयं नहीं करूंगा मन से, वचन से, शरीर से। इसी तरह दूसरों के पास कराऊंगा भी नहीं मन से, वचन से, शरीर से। हे भगवन् ! मैंने इस समय से पहले जो पापकारी प्रवृत्ति की है—उससे मेरी आत्मा को दूर हटाता हूं एवं उस पाप में प्रवृत्त आत्मा की निन्दा एवं गर्हा करता हूँ तथा आत्मा को यानें उस पापकारी प्रवृत्ति को छोड़ता हूँ।

सामायिक के कई मुख्य नियम

१—उघाड़े मुंह नहीं बोलना। २—बिना देखे इधर उधर नहीं फिरना। ३—विकथा नहीं करना।

सामायिक में क्या किया जाता है ?

सामायिक में हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन एवं अपने पास जो वस्त्रादि उपकरण रहते हैं, उनके सिवाय अन्य वस्तु रखने का (विचारणीय) परित्याग किया जाता है।

सामायिक में क्या करना चाहिए ?

साधुओं का व्याख्यान सुनना चाहिये। धार्मिक प्रश्न पूछने चाहिये। तत्त्व-चर्चा करनी चाहिये। स्वाध्याय—आत्म-

साधना से सम्बन्धित पठन-पाठन करना चाहिये। ध्यान करना चाहिये। अनित्य अशरण आदि भावनाओं का चिन्तन करना चाहिये। आराध्य देवों का स्मरण करना चाहिये। नमस्कार मन्त्र का स्मरण करना चाहिये। उसमें भी अनुपूर्वी से नमस्कार मन्त्र का स्मरण करना मन को स्थिर रखने के लिए महान् उपयोगी है।

सामाइय पारण विहि

(सामायिक पारवानी विधि)

नवमा सामायिक व्रत ने विषे जो कोई अतिचार दोष लागो होय तो आलोऊं।

१—मन जोग सावद्य प्रवर्त्तायो होय

२—वचन जोग सावद्य प्रवर्त्तायो होय

३—काय जोग सावद्य प्रवर्त्तायो होय

४—सामायिक नी सार संभाल न करी होय

५—अणपूरी सामायिक पारी होय

सामायिक में स्त्री कथा, भत्त कथा, देश कथा, राज कथा, कीधी होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

सामायिक काल एक मुहूर्त्त का है। सामायिक में एक मुहूर्त्त तक पापकारी प्रवृत्तियों का त्याग किया जाता है जब वह एक मुहूर्त्त का समय पूरा हो जाता है—तब उस सामायिक में भूल से या जान कर कोई मामूली गल्ती हो गई हो, तो उसकी विशुद्धि के लिये प्रायश्चित स्वरूप यह पाठ किया जाता है। (विशेष गल्ती के लिये साधु साध्वियों के पास प्रायश्चित करना चाहिये)।

इस पाठ का अर्थ यह है—श्रावक के बारह व्रतों में से सामायिक नौवाँ व्रत है। इस व्रत में अर्थात् जो मैंने सामायिक व्रत का पालन किया है—उसमें यदि कोई अतिचार दोष लगा हो, तो उसकी आलोचना करता हूँ। अतिचार शब्द का अर्थ है—जिसका परित्याग किया है, उसीको करने के लिए तैयार हो जाना। सामायिक में यदि मैंने इतने काम किये हों तो उन सब का मैं प्रायश्चित करता हूं अर्थात् मेरे किये हुए सब पाप निष्फल हों, मिथ्या हों।

(१) मन की पाप सहित प्रवृत्ति की हो।
(२) वचन की ,, ,, ,, —
(३) शरीर की ,, ,, ,, —
(४) सामायिक की सार—अर्थात् मेरे किये हुए सब पाप नहीं करने के होते वे यदि किये हों।
(५) एक मुहूर्त्त तक सावद्य पाप सहित प्रवृत्ति छोड़ी हुई है उसे एक मुहूर्त्त पहले शुरू की हो।

(६) सामायिक में स्त्री सम्बन्धी, भोजन-सम्बन्धी, देश सम्बन्धी, राज-सम्बन्धी कथा की हो।

८४ लाख जीवायोनि

सात लाख पृथ्वीकाय, सात लाख अप्काय, सात लाख तेजस्काय, सात लाख वायुकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पतिकाय, चौदह लाख साधारण वनस्पतिकाय, दो लाख बेइन्द्रिय, दो लाख तेइन्द्रिय, दो लाख चतुरिंद्रिय, चार लाख नारकी, चार लाख देवता, चार लाख तिर्यञ्च पंचेंद्रिय, चौदह लाख मनुष्य की जाति, चार गति चौरासी लाख जीवायोनि ऊपरै राग द्वेष आयो होय तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

चत्तारि मंगलं

चत्तारि मंगलं—अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं केवलीपन्नतो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवली पन्नत्तोधम्मो

लोगुत्तमा। चत्तारि सरणं पवज्जामि—अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि, केवली पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि।

ए च्यारूं शरणा सगा, और न सगो कोय।
जे भवि प्राणी आदरै, अक्षय अमर पद होय॥

चउविस्थव

इरियावहियाए

इच्छामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए, विराहणाए। गमणागमणे, पाणक्कमणे, वीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टी-मकड़ा संताणा संकमणे। जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, वेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचीदिया अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

मैं इच्छा करता हूँ। निवृत्त होना, (बचना) मार्ग पर चलने आदि से होनेवाली विराधना से। जाने आने में, किसी प्राणी को दवाकर। वनस्पति को दवाकर। ओस, कीड़ियों के बिल, पांच वर्ण की काई, पानी, मिट्टी, मकड़ी का जाला, आक्रमण हुआ। जो मेरे से जीवों की विराधना हुई हो, एक इन्द्रियवाले, दो इन्द्रियवाले, तीन इन्द्रियवाले, चार इन्द्रियवाले, पांच इन्द्रियवाले, सन्मुख आते चोट पहुँचाई हो, धूल आदि से ढके हों, भूमि पर मसले हों, इकट्ठे किये हों, छुए हों, मृत तुल्य किये हों, भयभीत किये हों, एक स्थान से दूसरे स्थान में अयत्ना से रखे हों। जीवन से रहित किये हो। उसका निष्फल हो मेरे पाप।

तस्सउत्तरी

तस्सउत्तरीकरणेणं, पायच्छित्तकरणेणं विसोहिकरणेणं, विसल्लीकरणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं। अन्नत्थ ऊससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाईएणं, उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए, सुहुमेहिं अङ्गसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउ-

स्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, णमुक्कारेणं नपारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।

उसको श्रेष्ठ उत्कृष्ट बनाने के निमित्त। प्रायश्चित-आलोचना करने के लिये। विशेष रूप से शुद्धि करने के लिये। तीन शल्य का त्याग करने के लिये। पाप-कर्मों का, नाश करने के लिये, करता हूं, कायोत्सर्ग (ध्यान)। इन आगारों के बिना उच्छ्वास, निःश्वास, खांसी, छींक, जम्भाई (बगासी) डकार, अधोवायु, चक्कर, पित्तविकार जनित मूर्च्छा, सूक्ष्म (थोड़ा), अङ्ग सञ्चार, सूक्ष्मश्लेष्म (कफ़) संचार, सूक्ष्म दृष्टि सञ्चार इत्यादि आगारों से भंग नहीं (विराधना नहीं अखण्डित) हो मेरा ध्यान (कायोत्सर्ग) जब तक अरिहन्त भगवन्त को नमस्कार करके न पारूं ध्यान (समाप्त) तब तक काया को स्थिर रखकर, मौन रहकर, ध्यान धरकर, आत्मा को पाप कर्म से त्यागता हुआ छोड़ता हूँ।

लोगस्स

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरेजिणे, अरिहंतेकित्तइस्सं, चउव्वीसंपि केवली १ उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च

पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे २ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयलसिज्जंसवासुपुज्जं च, विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ३ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च, वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ४ एवं मए अभिथुआ, विहूयरयमला पहीणजरमरणा, चउव्वीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ५ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्ग वोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ६ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ; सागरवरगंभीरा ; सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

लोक में उद्योत करने वाले, धर्मरूपी तीर्थ को स्थापित करने वाले, राग द्वेष जीतने वाले, तीर्थङ्करों का मैं स्तवन करता हूं, चौवीस केवली। ऋृषभ को—अजित को और वन्दना करता हूं। सम्भवनाथ को अभिनन्दन स्वामी को पुनः सुमतिनाथ को, पद्म प्रभू को, सुपार्श्वनाथ जिन को, और चन्द्रप्रभु को वन्दना करता हूँ। सुविधिनाथ (दूसरा नाम) पुष्पदन्त को शीतलनाथ को, श्रेयांसनाथ को वासुपूज्य को और विमलनाथ को और अनन्तनाथ जिनको, धर्मनाथ को, शान्तिनाथ को वन्दना करता

स्सग्गो, जाव अरिहंताणं भगवंताणं, णमुक्कारेणं नपारेमि, ताव कायं ठाणेणं, मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि ।

उसको श्रेष्ठ उत्कृष्ट बनाने के निमित्त। प्रायश्चित-आलोचना करने के लिये। विशेष रूप से शुद्धि करने के लिये। तीन शल्य का त्याग करने के लिये। पाप-कर्मों का, नाश करने के लिये, करता हूं, कायोत्सर्ग (ध्यान)। इन आगारों के बिना उच्छ्वास, निःश्वास, खांसी, छींक, जम्भाई (बगासी) डकार, अधोवायु, चक्कर, पित्तविकार जनित मूर्च्छा, सूक्ष्म (थोड़ा), अङ्ग सञ्चार, सूक्ष्मश्लेष्म (कफ़) संचार, सूक्ष्म दृष्टि सञ्चार इत्यादि आगारों से भंग नहीं (विराधना नहीं अखण्डित) हो मेरा ध्यान (कायोत्सर्ग) जब तक अरिहन्त भगवन्त को नमस्कार करके न पारूं ध्यान (समाप्त) तब तक काया को स्थिर रखकर, मौन रहकर, ध्यान धरकर, आत्मा को पाप कर्म से त्यागता हुआ छोड़ता हूँ।

लोगस्स

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरेजिणे, अरिहंतेकित्तइस्सं, चउव्वीसंपि केवली १ उसभमजियं च वंदे, संभवमभिनंदणं च सुमइं च

पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे २ सुविहिं च पुप्फदंतं, सीयलसिज्जंसवासुपुज्जं च, विमल-मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ३ कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमि जिणं च, वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ४ एवं मए अभित्थुआ, विहूयरयमला पहीणजरमरणा, चउव्वीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ५ कित्तिय-वंदिय-महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा, आरुग्ग बोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ६ चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ; सागरवरगंभीरा ; सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥७॥

लोक में उद्योत करने वाले, धर्मरूपी तीर्थ को स्थापित करने वाले, राग द्वेप जीतने वाले, तीर्थङ्करों का मैं स्तवन करता हूं, चौवीस केवली। ऋृपभ को—अजित को और वन्दना करता हूं। सम्भवनाथ को अभिनन्दन स्वामी को पुनः सुमतिनाथ को, पद्म प्रभू को, सुपार्श्वनाथ जिन को, और चन्द्रप्रभु को वन्दना करता हूँ। सुविधिनाथ (दूसरा नाम) पुप्पदन्त को शीतलनाथ को, श्रेयांसनाथ को वासुपूज्य को और विमलनाथ को और अनन्तनाथ जिनको, धर्मनाथ को, शान्तिनाथ को वन्दना करता

हूँ। कुंथुंनाथ को, अरनाथ को, मल्लिनाथ को वन्दना करता हूं। मुनिसुव्रत को, नमिनाथ जिनको पुनः वन्दना करता हूं। अरिष्टनेमि, पार्श्वनाथ तथा वर्द्धमान (महावीर भगवान) को। इस प्रकार मेरे द्वारा स्तवन किये गये, पाप रूप रज के मल से रहित। जरा बृद्धावस्था और मरण से मुक्त। चौवीसों जिनवर तीर्थङ्कर देव मुझ पर प्रसन्न हो कीर्त्तन वन्दन और भाव से पूजन को प्राप्त हुए हैं। जो वे लोक के प्रधान सिद्ध हैं। आरोग्य-सम्यक्त्व का लाभ। समाधि का वर उत्तम-श्रेष्ठ देवें। चन्द्रों से विशेष निर्मल। सूर्यों से अधिक प्रकाश करनेवाले। महासमुद्र के समान गम्भीर। सिद्ध भगवान मोक्ष मुझ को देवें।

सक्कथुई

णमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुतमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुण्डरीयाणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्त-माणं, लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोयगराणं-अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्ग-दयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, जीवदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्म-सारहीणं, धम्मवर-चाउरंत-चक्कवट्टीणं, दीवोत्ताणं,

सरणगइपइट्ठाणं, अप्पडिहयवर—नाणदंसण—धाराणं, विअट्टछउम्माणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं, तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोयगाणं ; सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिव-मयल मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणराविति सिद्धिगइनामधेयं, ठाणं (संपाविउकामाणं) संपताणं, नमो जिणाणं जियभयाणं।

नमस्कार हो। अरिहन्त भगवन् को, वे भगवान कैसे हैं ? धर्म के आदि कर्त्ता, धर्म-तीर्थ की स्थापना करने वाले। अपने आप बोध को प्राप्त हुये, पुरुषों में उत्तम, पुरुषों में सिंह के समान, पुरुषों में पुण्डरीक कमल के समान निर्लेप। पुरुषों में प्रधान गंधहस्ती के समान, लोक में उत्तम, लोक के नाथ, लोक के हितकारी, लोक में प्रदीप के समान, लोक में उद्योत् करने वाले। अभय दान देने वाले। ज्ञान रूप नेत्रों को देने वाले। मोक्ष मार्ग के देने वाले। सर्व जीवों के शरण-भूत। बोध बीज के देने वाले (संयम रूपी) जीवन के दाता। धर्म के दाता। धर्मोपदेशक धर्म के नायक। धर्म रूप रथ के सारथी। धर्म में प्रधान और चार गति का अन्त करने वाले। अतएव चक्रवर्ती के समान। संसार समुद्र में द्वीप के समान और रक्षक। शरणागतों की वत्सलता करने वाले। अप्रतिहत, ऐसे श्रेष्ट ज्ञान दर्शन के धरने

वाले। छद्म अर्थात् घातिक कर्मों से रहित। राग द्वेष को जीतने वाले। संसार समुद्र से स्वयं तैरते हुए, दूसरों को तारने वाले। आप बुद्ध हैं। दूसरों को बोध देने वाले। स्वयं कर्मों से मुक्त औरों को मुक्त करने वाले। सर्वज्ञ सर्वदर्शी कल्याणरूप स्थिर रोग से रहित। अनन्त। अक्षय। बाधा पीड़ा रहित। पुनर्जन्म रहित। (ऐसे) सिद्धिगति, नामक स्थान को प्राप्त हुए हैं। नमस्कार हो जिन भगवान को।

---

२४ तीर्थङ्करों के नाम

नाम	पिता का नाम	माता का नाम	नगरी
१ श्री ऋषभदेवजी	नाभिराजा	मरुदेवी	वनिता
२ ,, अजितनाथजी	जितशत्रुराजा	विजयारानी	अयोध्या
३ ,, संभवनाथजी	जितारथराजा	सेनादे	श्रावस्ति
४ ,, अभिनन्दनजी	संवर राजा	सिद्धार्थरानी	अयोध्या
५ ,, सुमतिनाथजी	मेघरथ राजा	सुमंगलारानी	अयोध्या
६ ,, पद्मप्रभजी	धर राजा	सुषमारानी	कौशम्बी
७ ,, सुपार्श्वनाथजी	प्रतिष्ठसेन	पृथ्वीरानी	वाराणसी
८ ,, चन्द्रप्रभजी	महासेन	लक्ष्मणा	चन्द्रपुरी
९ ,, सुविधिनाथजी	सुग्रीव	रामारानी	काकन्दी
१० ,, शीतलनाथजी	दृढरथ	नन्दारानी	भद्दिलपुर
११ ,, श्रेयांसनाथजी	विष्णुराजा	विष्णारानी	सिंहपुर

नाम	पिता का नाम	माता का नाम	नगरी
१२ श्री वासुपूज्यजी	वसुसेन	जयारानी	चम्पानगरी
१३ ,, विमलनाथजी	कृतवर्मा	श्यामारानी	कम्पिलपुर
१४ ,, अनन्तनाथजी	सिंहसेन	सुयशारानी	अयोध्या
१५ ,, धर्मनाथजी	भानु	सुव्रतारानी	रत्नपुर
१६ ,, शान्तिनाथजी	विश्वसेन	अचिरारानी	हस्तिनापुर
१७ ,, कुन्थुनाथजी	सूर	श्री देवी	हस्तिनापुर
१८ ,, अरनाथजी	सुदर्शन	देवीरानी	हस्तिनापुर
१९ ,, मल्लिनाथजी	कुम्भ	प्रभावती	मिथिला
२० ,, मुनिसुव्रतस्वामी	सुमित्र	पद्मावती	राजगृह
२१ ,, नमिनाथजी	विजय	विप्रा	मिथिला
२२ ,, अरिष्टनेमिजी	समुद्रविजय	सेवादे	सौरीपुर
२३ ,, पार्श्वनाथजी	अश्वसेन	वामा	वाराणसी
२४ ,, महावीरस्वामी	सिद्धार्थ	त्रिशला	क्षत्रियकुण्डग्राम

वीस विरहमानों के नाम

१ श्रीसीमंधरस्वामी
२ श्रीयुगमंधरस्वामी
३ श्रीबाहुस्वामी
४ श्रीसुबाहुस्वामी
५ सुजातिस्वामी
६ श्रीस्वयंप्रभस्वामी
७ श्रीऋृषभाननस्वामी
८ श्री अनन्तवीर्यस्वामी
९ श्रीसूरप्रभस्वामी
१० श्रीविशालधरस्वामी
११ श्रीवज्रधरस्वामी
१२ श्रीचन्द्राननस्वामी
१३ श्रीचन्द्रबाहुस्वामी
१४ श्रीभुजंगमस्वामी
१५ श्रीईश्वरस्वामी
१६ श्रीनेमिप्रभस्वामी
१७ श्रीवीरसेनस्वामी
१८ श्रीमहाभद्रस्वामी
१९ श्री देवयशस्वामी
२० श्रीअजितवीर्यस्वामी

वर्तमान काल में पांचों विदेह क्षेत्र में वीस तीर्थङ्कर विद्यमान हैं। वर्तमान समय में विचरने के कारण इन्हें विहरमान कहा जाता है।

सोलह सतियों के नाम

नाम	नगर	पिता	पति
१ ब्राह्मी	वनिता	भ० ऋषभदेव	कुमारी
२ सुन्दरी	वनिता	,,	,,
३ चन्दनबाला	चम्पानगरी	राजा दधिवाहन	,,
४ राजिमती	मथुरा	राजा उग्रसेन	,,

	नाम	नगर	पिता	पति
५	द्रौपदी	कम्पिलपुर	राजा द्रुपद	पांचपाण्डव (हस्तिनापुर)
६	कौशल्या	कुशस्थल	राजा सुकोशल	राजा दशरथ (अयोध्या)
७	मृगावती	वैशाली	राजाचेटक	राजा शतानिक (कौशम्बी)
८	सुलसा	राजगृह		नाग रथिक (राजगृह)
९	सीता	मिथिला	राजा जनक	राजा रामचन्द्र (अयोध्या)
१०	सुभद्रा	बसन्तपुर	श्रेष्ठि जिनदास	बुद्धदास (चम्पानगरी)
११	शिवा	वैशाली	राजा चेटक	राजा चण्डप्रद्योत (उज्जैन)
१२	कुन्ती	सौरीपुर	शूरसेन	राजा पाण्डु (हस्तिनापुर)
१३	दमयन्ती	कुण्डिनपुर	राजा भीम	राजा नल (अयोध्या)
१४	पुष्पचूला	पुष्पभद्र	राजा पुष्पकेतु	विवाहित
१५	प्रभावती	वैशाली	राजा चेटक	राजा उदायन (वितभय)
१६	पद्मावती	,,	,,	राजा दधिवाहन (चम्पानगरी)

ग्यारह गणधरों के नाम

भगवान् महावीर के नौ गण और ग्यारह गणधर थे। दो गण ऐसे थे जिनमें दो-दो गणधर सम्मिलित थे। भगवान् महावीर के शिष्य होने के पहले ग्यारहों ही गणधर वैदिक ब्राह्मण विद्वान थे। इन्द्रभूति, अग्निभूति और वायुभूति ये तीनों भाई थे। ये अपने मत की पुष्टि के लिए भगवान् महावीर के पास आये थे। अपने-अपने संशय का भगवान से उत्तर पाकर सभी उनके शिष्य हो गये। उनके संशय निम्न थे।

१ इन्द्रभूति—जीव है या नहीं।
२ अग्निभूति—ज्ञानावरणीय आदि कर्म हैं या नहीं।
३ वायुभूति—शरीर और जीव एक है या भिन्न २।
४ व्यक्त—पृथ्वी आदि भूत है या नहीं।
५ सुधर्मा—इस लोक में जो जैसा है, परलोक में भी वह वैसा ही रहता है या नहीं।
६ मंडित—बंध और मोक्ष है या नहीं।
७ मौर्यपुत्र—देवता है या नहीं।
८ अकम्पित—नारकी है या नहीं।
९ अचलभ्राता—पुण्य बढ़ने पर सुख और घटने पर दुख का कारण हो जाता है या दुख का कारण पाप पुण्य से अलग है।
१० मेतार्य—आत्मा की सत्ता होने पर भी परलोक है या नहीं।
११ प्रभास—मोक्ष है या नहीं।

दश श्रावकों के नाम

	नाम	ग्राम
१	आनन्द	वाणिज्यग्राम
२	कामदेव	चम्पानगरी
३	चूलनीपिता	वाराणसी
४	सुरादेव	वाराणसी
५	चुल्लशतक	आलंभिका
६	कुण्डकोलिक	कम्पिलपुर
७	सद्दालपुत्र	पोलासपुर
८	महाशतक	राजगृह
६	नन्दिनीपिता	श्रावस्ति
१०	सालिहीपिता	श्रावस्ति

नव आचार्यों के नाम

नाम	पिताजी का नाम	माताजी का नाम	ग्राम
श्री भीखनजी स्वामी	बलुजी	दीपाँजी	कंटालिया
श्री भारीमलजी स्वामी	किशनोजी	धारिणीजी	मूंहो
श्री रायचन्दजी स्वामी	चतुरोजी	कुशलांजी	बड़ीरावलिया
श्री जीतमलजी स्वामी	आईदानजी	बलुजी	रोयट
श्री मघराजजी स्वामी	पूरणमलजी	वन्नाँजी	बीदासर
श्री माणिकलालजी स्वामी	हुकमचन्दजी	छोटाँजी	जयपुर
श्री डालचन्दजी स्वामी	कनीरामजी	जड़ावाँजी	उज्जैन
श्री कालूरामजी स्वामी	मूलचन्दजी	छोगाँजी	छापर
श्री तुलसीरामजी स्वामी	झूमरमलजी	वदनाँजी	लाडनूँ

पंच पद वन्दना

अरिहन्त वन्दना

पहिले पदे श्री सीमंधर स्वामी आदिदेई जघन्य वीस तीर्थङ्कर देवाधिदेवजी उत्कृष्ट एक सौ साठ तीर्थङ्कर देवाधिदेवजी, पंच महाविदेह क्षेत्र में विचरे छै। अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र, अनन्त बल, अशोक वृक्ष, पुष्प वृष्टि दिव्यध्वनि, देव-दुन्दुभि, स्फटिक सिंहासन, भामण्डल, छत्र, चामर एवं द्वादश गुणना धारक, एक हजार आठ शुभ लक्षण युक्त शरीर, चउसठ इन्द्राँना पूजनीय, चौतीस अतिशय, पैंतीस वचनातिशय करी शोभित, एहवा श्री अरिहन्त देवाँ प्रते हाथ जोड़ मानमोड़ तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मङ्गलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि॥१॥

सिद्ध वन्दना

दूजै पदे अनन्त सिद्ध पन्द्रह भेदे अनन्त चउवीसी अष्ट कर्म खपावीने मोक्ष पहुँता—केवल ज्ञान, केवल दर्शन, आत्मिक सुख क्षायक सम्यक्त्व, अटल अवगाहना, अमूर्तिपणो, अगुरुलघुपणो, अन्तराय रहित, एवं अष्ट गुण संयुक्त जन्म, मरण, जरा, रोग, सोग, दुख, दारिद्र रहित सदा काल शाश्वत सुखाँ में विराजमान छै ते सिद्ध भगवन्त प्रते हाथ जोड़ मानमकोड़ तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥२॥

धर्माचार्य वन्दना

तीजै पदे म्हारा धर्माचार्य गुरु पूज्यजी महाराजाधिराज श्री श्री १००८ श्री तुलसीरामजी स्वामी आदि ते आचार्य भगवान केहवा छै पञ्च महाव्रतना पालणहार, चार कषायना टालणहार, पञ्चाचारना पालणहार, पंच समिति समिता, त्रिण गुप्तिगुप्ता, पंचेन्द्रियना जीतणहार, नवबाड़ सहित ब्रह्मचर्यना पालणहार एवं छत्तीस गुणना धरणहार, शासन-शृङ्गार, गच्छाधार, धर्मधुरंधर सयल शुभङ्कर, भुवन-भास्क, मिथ्यात्व-नाशक, तीर्थङ्करदेव वत् धर्मोद्योतकारी एहवा महापुरुष आचार्यजी प्रते हाथजोड़ मानमोड़ तिक्खत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मङ्गलं देवयंचेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि॥३॥

उपाध्याय वन्दना

चउथे पदे उपाध्यायजी महाराज इग्यारह अङ्ग बारह उपाङ्ग भणै भणावै एवं पचीस गुणयुक्त विराजमान छ ते महापुरुष उपाध्यायजी प्रते हाथ जोड़ मानमोड़ तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥४॥

मुनि वन्दना

पंचमें पदे जघन्य दोय हजार करोड़ साधु साध्वी उत्कृष्ट नव हजार करोड़ साधु साध्वी अढाई द्वीप पन्द्रह क्षेत्रों में

विचरै छै। ते महा मुनिराज केहवा छै पंच महाव्रतना पालणहार, पंचेन्द्रियना जीतणहार, चार कषाय ना टालनहार, भावसत्य, करणसत्य, योगसत्य, क्षमावन्त, वैराग्यवन्त, मन समाधारणता, वचन समाधारणता, काय समाधारणता, ज्ञान सम्पन्न, दर्शन सम्पन्न, चारित्र सम्पन्न, वेदनी आयां समभावे सहै, मरण आयां समभावे सहै, एवं सत्तावीस गुणना धरणहार, बावीस परिषहना जीतणहार, बयांलीस दोष टाल आहार पाणी ना लेवणहार, बावन अणाचारना टालनहार, निर्लोभी, निर्लालची ; संसार सूँ उदासी, मोक्षना अभिलाषी संसार सूं अपूठा मोक्ष सूं साहमा, सचित्तना त्यागी अचित्तना भोगी, नूंतिया जीमै नहीं, तेड़िया आवे नहीं, वायुवत् अप्रतिबन्ध बिहारी, एहवा महा उत्तम मुनिराज प्रते हाथजोड़ मानमोड़ तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं वंदामि नमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि मत्थएण वंदामि ॥५॥

पंचपद वन्दना समाप्त ॥

खामेसि सव्वेजीवा

खामेमि सव्वजीवे, सव्वेजीवा खमंतु मे ।
मित्ति मे सव्वभूएसु, वैरंमज्झ न केणई ॥

पच्चीस बोल

(१) पहले बोले गति चार—

(१) नरक गति (२) तिर्यञ्च गति
(३) मनुष्य गति (४) देवगति

(२) दूजे बोले जाति पांच—

(१) एकेन्द्रिय (२) द्विन्द्रिय (३) त्रीन्द्रिय
(४) चतुरिन्द्रिय (५) पञ्चेन्द्रिय।

(३) तीजे बोले काया छः—

(१) पृथ्वीकाय (२) अप्काय (३) तेजस्काय
(४) वायुकाय (५) वनस्पतिकाय (६) त्रसकाय।

(४) चौथे बोले इन्द्रियाँ पांच—

(१) श्रोत्रेन्द्रिय (२) चक्षुरिन्द्रिय (३) घ्राणेन्द्रिय
(४) रसेनेन्द्रिय (५) स्पर्शनेन्द्रिय।

(५) पांचवें बोले पर्याप्ति छः—

(१) आहार पर्याप्ति (२) शरीर पर्याप्ति (३) इन्द्रिय पर्याप्ति (४) श्वासोछ्वास पर्याप्ति (५) भाषा पर्याप्ति (६) मनः पर्याप्ति।

(६) छट्ठे बोले प्राण दश—

(१) श्रोत्रेन्द्रिय प्राण (२) चक्षुरिन्द्रिय प्राण (३) घ्राणेन्द्रिय प्राण (४) रसनेन्द्रिय प्राण (५) स्पर्शनेन्द्रिय प्राण (६) मनोबल (७) वचन बल (८) काय बल (९) श्वासोछ्वास प्राण (१०) आयुष्य प्राण।

(७) सातवें बोले शरीर पांच—

(१) औदारिक शरीर (२) वैक्रिय शरीर (३) आहारक शरीर (४) तैजस शरीर (५) कार्मण शरीर ।

(८) आठवें बोले योग पन्द्रहः—

चार मन का—(१) सत्य मनोयोग (२) असत्य मनोयोग (३) मिश्र मनोयोग (४) व्यवहार मनोयोग

चार वचन का—(५) सत्य वचनयोग (६) असत्य वचनयोग (७) मिश्र वचनयोग (८) व्यवहार वचनयोग।

सात काया का—(९) औदारिक काय योग।
(१०) औदारिक मिश्र काय योग।
(११) वैक्रिय काय योग।
(१२) वैक्रिय मिश्र काय योग।
(१३) आहारक काय योग।
(१४) आहारक मिश्र काय योग।
(१५) कार्मण काय योग।

(९) नवमें बोले उपयोग बारह—

पांच ज्ञान—(१) मति ज्ञान (२) श्रुत ज्ञान (३) अवधि ज्ञान (४) मनः पर्यव ज्ञान (५) केवल ज्ञान

तीन अज्ञान—(६) मति अज्ञान (७) श्रुत अज्ञान (८) विभंग अज्ञान।

चार दर्शन—(९) चक्षुः दर्शन (१०) अचक्षुः दर्शन (११) अवधि दर्शन (१२) केवल दर्शन।

(१०) दशमें बोले कर्म आठ—

(१) ज्ञानावरणीय कर्म (२) दर्शनावरणीय कर्म (३) वेदनीय कर्म (४) मोहनीय कर्म (५) आयुष्य कर्म (६) नाम कर्म (७) गोत्रकर्म (८) अन्तराय कर्म

(११) ग्यारहवें बोले गुण स्थान चौदह—

(१) मिथ्या दृष्टि गुणस्थान (२) सास्वादन सम्यग् दृष्टि गुणस्थान (३) मिश्र गुणस्थान (४) अविरति सम्यगदृष्टि गुणस्थान (५) देशविरति गुणस्थान (६) प्रमत्त संयत गुणस्थान (७) अप्रमत्त संयत गुणस्थान (८) निवृत्ति बादर गुणस्थान (९) अनिवृत्ति बादर गुणस्थान (१०) सूक्ष्मसम्पराय गुणस्थान (११) उपशान्तमोह गुणस्थान (१२) क्षीणमोह गुणस्थान (१३) संयोगीकेवली गुणस्थान (१४) अयोगीकेवली गुणस्थान।

(१२) बारहवें बोले पांच इन्द्रियोंके तेवीसविषय-

श्रोत्रेन्द्रियों के तीन विषय—(१) जीव शब्द (२) अजीव शब्द (३) मिश्र शब्द।

चक्षुरिन्द्रिय के पांच विषय—(४) कृष्ण वर्ण (५) नील वर्ण (६) रक्त वर्ण (७) पीत वर्ण (८) श्वेत वर्ण।

घ्राणेन्द्रिय के दो विषय—(९) सुगन्ध (१०) दुर्गन्ध।

रसनेन्द्रिय के पांच विषय—(११) तिक्त रस (१२) कटु रस (१३) कषाय रस (१४) आम्ल रस (१५) मधु रस।

स्पर्शनेन्द्रिय के आठ विषय—(१६) शीत स्पर्श (१७) उष्ण स्पर्श (१८) रूक्ष स्पर्श (१९) स्निग्ध स्पर्श (२०) लघु स्पर्श (२१) गुरु स्पर्श (२२) मृदु स्पर्श (२३) कर्कश स्पर्श।

(१३) तेरहवें बोले दश प्रकार के मिथ्यात्व—

(१) धर्म को अधर्म समझने वाला मिथ्यात्वी
(२) अधर्म को धर्म समझने वाला मिथ्यात्वी
(३) साधु को असाधु समझने वाला मिथ्यात्वी
(४) असाधु को साधु समझने वाला मिथ्यात्वी
(५) मार्ग को कुमार्ग समझने वाला मिथ्यात्वी

(६) कुमार्ग को मार्ग समझने वाला मिथ्यात्वी
(७) जीव को अजीव समझने वाला मिथ्यात्वी
(८) अजीव को जीव समझने वाला मिथ्यात्वी
(९) मुक्त को अमुक्त समझने वाला मिथ्यात्वी
(१०) अमुक्त को मुक्त समझने वाला मिथ्यात्वी

(१४) चौदहवें बोले नव तत्व के ११५ भेद—

जीव तत्व के चौदह भेद—

सूक्ष्म एकेन्द्रिय के दो भेद—(१) अपर्याप्त और (२) पर्याप्त।

बादर एकेन्द्रिय के दो भेद—(३) अपर्याप्त और (४) पर्याप्त।

द्विन्द्रिय के दो भेद—(५) अपर्याप्त और (६) पर्याप्त

त्रीन्द्रिय के दो भेद—(७) अपर्याप्त और (८) पर्याप्त

चतुरिन्द्रिय के दो भेद—(९) अपर्याप्त और (१०) पर्याप्त।

असंज्ञी पंचेन्द्रिय के दो भेद—(११) अपर्याप्त और (१२) पर्याप्त।

संज्ञी पंचेन्द्रिय के दो भेद—(१३) अपर्याप्त और (१४) पर्याप्त।

अजीव तत्व के चौदह भेद—

धर्मास्तिकाय के तीन भेद—(१) स्कन्ध (२) देश (३) प्रदेश।

अधर्मास्तिकाय के तीन भेद—(४) स्कन्ध (५) देश (६) प्रदेश।

आकाशास्तिकाय के तीन भेद—(७) स्कन्ध (८) देश (९) प्रदेश।

काल का एक भेद—(१०) काल।

पुद्गलास्तिकाय के चार भेद—(११) स्कन्ध (१२) देश (१३) प्रदेश (१४) परमाणु।

पुण्य तत्व—पुण्य बंध के कारण नौ—

(१) अन्न पुण्य (२) पानी पुण्य (३) स्थान पुण्य (४) शय्या पुण्य (५) वस्त्र पुण्य (६) मन पुण्य (७) वचन पुण्य (८) काय पुण्य (९) नमस्कार पुण्य।

पाप तत्व—पाप बंध के कारण अठारह—

(१) प्राणातिपात पाप (२) मृषावाद पाप (३) अदत्ता दान पाप (४) मैथुन पाप (५) परिग्रह पाप (६) क्रोध पाप (७) मान पाप (८) माया पाप (९) लोभ पाप (१०) राग पाप (११) द्वेष पाप (१२) कलह पाप (१३) अभ्याख्यान पाप (१४) पैशुन्य पाप (१५) पर परिवाद पाप (१६) रति अरति पाप (१७) माया मृषा पाप (१८) मिथ्या दर्शन शल्य पाप।

आस्रव तत्व के भेद बीस—

(१) मिथ्यात्व आस्रव (२) अव्रत आस्रव (३) प्रमाद

आस्रव (४) कषाय आस्रव (५) योग आस्रव (६) प्राणातिपात आस्रव (७) मृषावाद आस्रव (८) अदत्ता दान आस्रव (९) मैथुन आस्रव (१०) परिग्रह आस्रव (११) श्रोत्रेन्द्रिय प्रवृत्ति आस्रव (१२) चक्षुरिन्द्रिय प्रवृत्ति आस्रव (१३) घ्राणेन्द्रिय प्रवृत्ति आस्रव (१४) रसनेन्द्रिय प्रवृत्ति आस्रव (१५) स्पर्शनेन्द्रिय प्रवृत्ति आस्रव (१६) मन प्रवृत्ति आस्रव (१७) वचन प्रवृत्ति आस्रव (१८) काय प्रवृत्ति आस्रव (१९) भण्डोपकरण आस्रव (२०) शुचिकुशाग्र मात्र आस्रव ।

संवर तत्व के भेद वीस—

(१) सम्यक्त्व संवर (२) व्रत संवर (३) अप्रमाद संवर (४) अकषाय संवर (५) अयोग संवर (६) प्राणातिपात विरमण संवर (७) मृषावाद विरमण संवर (८) अदत्तादान विरमण संवर (९) अब्रह्मचर्य विरमण संवर (१०) परिग्रह विरमण संवर (११) श्रोत्रेन्द्रिय निग्रह संवर (१२) चक्षुरिन्द्रिय निग्रह संवर (१३) घ्राणेन्द्रिय निग्रह संवर (१४) रसनेन्द्रिय निग्रह संवर (१५) स्पर्शनेन्द्रिय निग्रह संवर (१६) मनो निग्रह संवर (१७) वचन निग्रह संवर (१८) काय निग्रह संवर (१९) भण्डोपकरण रखने में अयत्ना न करना संवर (२०) शुचि कुशाग्र मात्र दोष सेवन न करना संवर ।

निर्जरा तत्व के भेद बारह—

(१) अनशन (२) उनोदरी (३) भिक्षाचरी (४) रस परित्याग (५) कायाक्लेश (६) प्रतिसंलीनता (७) प्रायश्चित (८) विनय (९) वैयावृत्य (१०) स्वाध्याय (११) ध्यान (१२) व्युत्सर्ग।

बन्ध तत्व के भेद चार—

(१) प्रकृति बंध (२) स्थिति बंध (३) अनुभाग बंध (४) प्रदेश बंध।

मोक्ष तत्व के भेद चार—

(१) ज्ञान (२) दर्शन (३) चारित्र (४) तप।

(१५) पन्द्रहवें बोले आत्मा आठ—

(१) द्रव्य आत्मा
(२) कषाय आत्मा
(३) योग आत्मा
(४) उपयोग आत्मा
(५) ज्ञान आत्मा
(६) दर्शन आत्मा
(७) चारित्र आत्मा
(८) वीर्य आत्मा

(१६) सोलहवें बोले दण्डक चौवीस—

सात नारकी का दण्डक एक— पहला

सात नारकी के नाम—

रत्न प्रभा

शर्करा प्रभा

बालुका प्रभा

पंक प्रभा

धूम प्रभा

तम प्रभा

तमतमः प्रभा

भवनपति देवों के दण्डक दश—

असुर कुमार	का दण्डक	दूसरा
नाग कुमार	,, ,,	तीसरा
सुवर्ण कुमार	,, ,,	चौथा
विद्युत् कुमार	,, ,,	पांचवाँ
अग्नि कुमार	,, ,,	छट्ठा
द्वीप कुमार	,, ,,	सातवाँ
उद्धि कुमार	,, ,,	आठवाँ
दिग् कुमार	,, ,,	नवमाँ
वात कुमार	,, ,,	दशवाँ
स्तनित कुमार	,, ,,	ग्यारहवाँ

पाँच स्थावर जीवों के दण्डक पांच—

पृथ्वी काय	का दण्डक	बारहवाँ
अप् काय	,, ,,	तेरहवाँ
तेजस् काय	,, ,,	चौदहवाँ
वायु काय	,, ,,	पन्द्रहवाँ
वनस्पति काय	,, ,,	सोलहवाँ

द्विन्द्रिय	का दण्डक	सतरहवाँ
त्रीन्द्रिय	” ”	अठारहवाँ
चतुरिन्द्रिय	” ”	उन्नीसवाँ
तिर्यञ्च पंचेन्द्रिय	” ”	वीसवाँ
मनुष्य पंचेन्द्रिय	” ”	इक्कीसवाँ
व्यन्तर देवों	” ”	बाईसवाँ
ज्योतिष्क देवों	” ”	तेवीसवाँ
वैमानिक देवों	” ”	चौवीसवाँ

(१७) सतरहवें बोले लेश्या छव :—

(१) कृष्ण लेश्या (२) नील लेश्या (३) कापोत लेश्या (४) तेजस् लेश्या (५) पद्म लेश्या (६) शुक्ल लेश्या।

(१८) अठारहवें बोले दृष्टि तीन :—

(१) सम्यक् दृष्टि (२) मिथ्या दृष्टि (३) सम्यक् मिथ्या दृष्टि।

(१९) उन्नीसवें बोले ध्यान चार :—

(१) आर्त्त ध्यान (२) रौद्र ध्यान (३) धर्म ध्यान (४) शुक्ल ध्यान।

(२०) वीसवें बोले षट् द्रव्यों का ज्ञान :—

(१) धर्मास्तिकाय—

द्रव्य से—एक द्रव्य।

क्षेत्र से—लोक परिमाण।

काल से—आदि अन्त रहित अर्थात् अनादि और अनन्त।

भाव से—अरूपी।

गुण से—गतिशील पदार्थों की गति में उपेक्षित सहायता करना।

(२) अधर्मास्तिकाय—

द्रव्य से—एक द्रव्य।

क्षेत्र से—लोक परिमाण।

काल से—अनादि और अनन्त।

भाव से—अरूपी।

गुण से—पदार्थों के स्थिर रहने में अपेक्षित सहायता करना।

(३) आकाशास्तिकाय—

द्रव्य से—एक द्रव्य।

क्षेत्र से—लोक अलोक परिमाण।

काल से—अनादि और अनन्त।

भाव से—अरूपी।

गुण से—समस्त पदार्थों को अवकाश देना, स्थान देना। भाजन गुण।

(४) काल—

द्रव्य से—अनन्त द्रव्य।

क्षेत्र से—अड़ाई द्वीप परिमाण।

काल से—अनादि और अनन्त।

भाव से—अरूपी।

गुण से—वर्तमान गुण।

(५) पुद्गलास्तिकाय—

द्रव्य से—अनन्त द्रव्य।

क्षेत्र से—लोक परिमाण।

काल से—अनादि और अनन्त।

भाव से—रूपी।

गुण से—गलन मिलन स्वभाव।

(६) जीवास्तिकाय—

द्रव्य से—अनन्त द्रव्य।

क्षेत्र से—लोक परिमाण।

काल से—अनादि और अनन्त।

भाव से—अरूपी।

गुण से—चैतन्य गुण।

(२१) इकवीसवें बोले राशि दो :—

(१) जीव राशि (२) अजीव राशि।

(२२) बावीसवें बोले श्रावक के बारह व्रत :—

(१) पहिले व्रत में श्रावक स्थावर जीव हनन करने का प्रमाण करे एवं चलने फिरनेवाले त्रस जीव हनन करने का स-उपयोग त्याग करे।

(२) दूसरे व्रत में श्रावक मोटी झूठ बोलने का स-उपयोग त्याग करे।

(३) तीसरे व्रत में श्रावक ऐसी मोटी चोरी करने का त्याग करे जिस से राजा दण्ड दे व लोग निन्दा करे।

(४) चौथे व्रत में श्रावक मर्यादा उपरान्त मैथुन का त्याग करे।

(५) पांचवें व्रत में श्रावक मर्यादा उपरान्त परिग्रह रखने का त्याग करे।

(६) छट्ठे व्रत में श्रावक दशों दिशाओं में मर्यादा उपरान्त जाने का त्याग करे।

(७) सातव व्रत में श्रावक छवीस प्रकार की उपभोग परिभोग सामग्री का मर्यादा उपरान्त त्याग करे एवं पन्द्रह प्रकार के कर्मादान का भी मर्यादा उपरान्त त्याग करे।

(८) आठवें व्रत में श्रावक मर्यादा उपरान्त अनर्थ दण्ड का त्याग करे।

(९) नवमें व्रत में श्रावक सामायिक की मर्यादा करे।

(१०) दशवें व्रत में श्रावक देशावकाशिक संवर की मर्यादा करे।

(११) इग्यारहवें व्रत में श्रावक पौषध की मर्यादा करे।

तीन करण—करूँ नहीं, कराऊँ नहीं, अनुमोदूं नहीं।

तीन योग—मन, वचन, काय।

आँक ११ का भांगा ६—

यहाँ पहले १ का अर्थ है एक करण और दूसरे १ का अर्थ है एक योग। अर्थात् एक करण और एक योग से ६ भाँगे हो सकते हैं जैसे—

(क) (१) करूँ नहीं मन से।
(२) करूँ नहीं वचन से।
(३) करूँ नहीं काया से।
(ख) (४) कराऊँ नहीं मन से।
(५) कराऊँ नहीं वचन से।
(६) कराऊँ नहीं काया से।
(ग) (७) अनुमोदूं नहीं मन से।
(८) अनुमोदूं नहीं वचन से।
(६) अनुमोदूं नहीं काया से।

आंक १२ का भांगा ६—

यहाँ पहले अङ्क १ का अर्थ है एक करण एवं दूसरे अङ्क २ का अर्थ है दो योग। अर्थात् एक करण एवं दो योग से ६ भांगे हो सकते हैं जैसे :—

(क) (१) करूँ नहीं मन से वचन से।
(२) करूँ नहीं मन से काया से।
(३) करूँ नहीं वचन से काया से।

(ख) (४) कराऊँ नहीं मन से वचन से।
(५) कराऊँ नहीं मन से काया से।
(६) कराऊँ नहीं वचन से काया से।
(ग) (७) अनुमोदूं नहीं मन से वचन से।
(८) अनुमोदूं नहीं मन से काया से।
(९) अनुमोदूं नहीं वचन से काया से।

आंक १३ का भांगा ३—

यहाँ पहले अङ्क १ का अर्थ है एक करण और दूसरे अंक ३ का अर्थ है तीन योग। अर्थात् एक करण तीन योग से सिर्फ ३ भाँगे हो सकते हैं जैसे—

(क) करूं नहीं मन से, वचन से, काया से।
(ख) कराऊं नहीं मन से, वचन से, काया से।
(ग) अनुमोदूं नहीं मन से, वचन से, काया से।

आंक २१ का भांगा ९—

यहाँ पहले २ का अर्थ है दो करण एवं दूसरे अंक १ का अर्थ है एक योग। अर्थात् दो करण एक योग से ९ भाँगे हो सकते हैं जैसे—

(क) (१) करूं नहीं कराऊं नहीं मन से।
(२) करूं नहीं कराऊं नहीं वचन से।
(३) करूं नहीं कराऊं नहीं काया से।
(ख) (४) करूं नहीं अनुमोदूं नहीं मन से।
(५) करूं नहीं अनुमोदूं नहीं वचन से।

(६) करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं काया से।
(ग) (७) कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं मन से।
(८) कराऊं नही, अनुमोदूं नहीं वचन से।
(९) कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं काया से।

आंक २२ का भांगा ९—

यहां पहले अङ्क २ का अर्थ है दो करण और दूसरे अङ्क २ का अर्थ है दो योग। अर्थात् दो करण एवं दो योग से ९ भांगे हो सकते हैं जैसे—

(क) (१) करूं नहीं, कराऊं नहीं, मन से, वचन से।
(२) करूं नहीं, कराऊं नहीं, मन से, काया से।
(३) करूं नहीं, कराऊं नहीं, वचन से, काया से।
(ख) (४) करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं, मन से, वचन से।
(५) करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं, मन से, काया से।
(६) करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं, बचन से, काया से।
(ग) (७) कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, मन से, वचन से।

(८) कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, मन से, काया से।

(९) कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, वचन से, काया से।

आँक २३ का भागा ३—

यहाँ पहले अंक २ का अर्थ है दो करण, और दूसरे अंक ३ का अर्थ है तीन योग। अर्थात् दो करण ३ योग से सिर्फ ३ ही भाँगे हो सकते हैं जैसे :—

(क) करूं नहीं, कराऊं नहीं, मन से, वचन से काया से।

(ख) करूं नहीं, अनुमोदूं नहीं, मन से, वचन से, काया से।

(ग) कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, मन से, वचन से, काया से।

आंक ३१ का भांगा ३—

यहाँ पहले अङ्क ३ का अर्थ है तीन करण और दूसरे अङ्क १ का अर्थ है एक योग। अर्थात् तीन करण एवं एक योग से सिर्फ ३ भांगे हो सकते हैं जैसे—

(क) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, वचन से।

(ख) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, वचन से।

(ग) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, काया से।

आंक ३२ का भांगा ३—

यहाँ पहले ३ का अर्थ है तीन करण एवं दूसरे अङ्क २ का अर्थ है दो योग। अर्थात् तीन करण एवं दो योग से सिर्फ तीन भांगे हो सकते हैं जैसे :—

(क) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, मन से, वचन से।

(ख) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, मन से, काया से।

(ग) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, वचन से, काया से।

आँक ३३ का भाँगा—१

यहाँ पहले अंक ३ का अर्थ है तीन करण और दूसरे अंक ३ का अर्थ है तीन योग। अर्थात् तीन करण एवं तीन योग से सिर्फ एक ही भाँगा हो सकता है जैसे :—

(१) करूं नहीं, कराऊं नहीं, अनुमोदूं नहीं, मन, से वचन से, काया से।

(२५) पचीसवें बोले चारित्र पांच—

(१) सामायिक चारत्रि।

(२) छेदोपस्थापन चारित्र।

(३) परिहार विशुद्धि चारित्र।
(४) सूक्ष्म सम्पराय चारित्र।
(५) यथाख्यात चारित्र।

नित्य चितारने के १४ नियम

१ सचित्त—

माटी, पाणी, अग्नि, वनस्पति, फल, फूल, छाल्य, काष्ट, मूल, पत्र, बीज, त्वचा तथा अग्नि प्रमुख अनेरुं शस्त्र लाग्युं न होय ते, इलायची, लोंग, बादाम इत्यादिक सचित्तनुं वजन धारवुं।

२ द्रव्य—

धातु वस्तुनी शली तथा अपनी आँगली के सिवाय जो वस्तु मुख में दीजै सो सर्व द्रव्य की गिनती में आवै। नामान्तर, स्वादान्तर, स्वरूपान्तर, परिणामान्तर, द्रव्यांतर होने से द्रव्यांतर होई। जिम गेहूँ एक द्रव्य किन्तु उसकी रोटी, फीणा रोटी, वेढवा रोटी और बाटी यह सर्व द्रव्य जूदा कहिये। इसी प्रकारे भात, दाल, रोटी, मांडियो, पलेब, तरकारी, पापड़, खीचिया, लड्डू, फीणी, घेवर, खाजा इत्यादि! यहां उत्कृष्ट द्रव्य को नाम लेई राखै तो एक ही द्रव्य कहिये। जैसे— मेवे की खिचड़ी अनेक द्रव्य निष्पन्न है, किन्तु नाम लेके रखने से एक ही द्रव्य है।

३ विगई—

दूध, दही, घी, गोल, (चीनी, गुड़) तेल तथा जे चीज कढ़ाइमां तलायवे तेहनी गणत्री धारवी।

४ पन्नही—

पगरखाँ (जूता) अथवा जोड़ा तथा मोजा, चट्टी खड़ाऊ (जो पाँव में पहना जाय)।

५ तंबोल—

पान, सुपारी, इलायची, लवंग, चूरण, गोली, खाटो इत्यादिकनुं वजन धारवुं।

६ वत्थ—

वस्त्र (रेशमी, सूती, शण तथा ऊनना), पगड़ी, टोपी, कोट, जाकीट, गंजी, चोला, कमीज, धोती, पायजामा, दुपट्टा, चद्दर, शाल, अङ्गोछा और रूमाल। (मर्दाना और जनाना कपड़ा) वगैरहनी गणत्री धारवी।

७ कुसुमेसु—

जे वस्तु नाके सुंघवामां आवे तेहना तोलनुं प्रमाण करवुं उदाहरण—फूल, फूलकी चीजों जैसे—माला, हार, गजरा, तुर्रा, सेहरा, पंखा, सिझया (शैया), इत्र, तैल, सेण्ट, घी, छींकणी वगैरहनों नियम करवो।

८ वाहण—

चरतुं, फरतुं, तरतुं, उदाहरण—हाथी, घोड़ा, ऊंट, इक्का,

गाड़ी, रथ, पालकी, रिक्सो, रेल, ट्राम, साईकल, मोटर, मोटर-साईकल, हवाई जहाज, नाव, अने बोट वगैरह नों नियम करवो।

९ सयन—

सूवानी सभ्या (शैया), पाट, पाटला, बिछाना, कुरसी, गद्दी, पलंग, छपर-खाट, मेज, तखत, सुखासन, सतरंजी, चौकी, जाजम, वगैरह नी गणत्री धारवी।

१० विलेवण—

जे वस्तु शरीरे चौपड़वा मां आवै तेहना वजननुं परिमाण उदाहरण—सूखड़ चन्दन, केशर, तेल, सोडो, मसालो, कंपूर, कस्तूरी, रोली, काजल, सुरमा वगैरह।

११ बंभ—

ब्रह्मचर्यनो नियम करवो :—स्त्री पुरुषने सूई डोरे के न्याय तथा बाह्य विनोद की गणत्री धारवी, श्रावक परदारा त्याग और स्वदारा से ही संतोष राखै, उसका भी परिमाण करै, अन्तराय देणी नहीं।

१२ दिशि—

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, नीचुं अने ऊंचुं ए छः दिशाएँ जावा आवाना कोसनुं परिमाण धारवुं चिट्ठी, तार, आदमी, माल, इतने कोस, भेजना तथा मंगाना।

१३ नहाण—

सर्व अंगे नहावुं तेहनी गणत्री तथा पाणीनो वजन धारवुं।

१४ भत्तेसु—

भोजन तथा पाणी वापरवुं तेहना वजननुँ परिमाण करवुँ इतना घर उपरान्त जीमणो तथा पाणी पीणो नहीं।

चवदै नियम की ढाल

रचयिता ऋषिराजजी

(देशी—सोई रे सयाणा अवसर साधै०)

सचित १ द्रव्य २ विगय ३ परिहार, पन्नही ४ तंबोल ५ वस्त्र ६ सुविचार। फूल ७ बाहन ८ सयन ६ सुखकार, विलेपन १० ब्रह्मचर्य ११ धार॥ सोई रे सयाणा नेम चितारे, श्रावक ते आतम निस्तारै॥ १॥ दिशि १२ तणो करै परिमाण, स्नान १३ तणी मर्यादा आण। भात १४ तणो नियम बले जाण, ए चवदै नियम सीखै गुणखाण॥ २॥ पृथ्वी अप तेऊ बले वाय, वनस्पति त्रस ए छहुं काय। कूटण पीटण छेदन करै काय, परिमाण करे मन समता लाय॥ ३॥ असनादिक ना द्रव्य अनेक, परिमाण करै मन समता छेक। दूध दही घृत ने मिष्टान, तैल बले विविध पक्वान॥ ४॥ मद्य मांस अभक्ष कहाय, श्रावक तो नहीं सेवै ताय। माखण मधु नो करै परिमाण, श्रावक ते कहिये गुण खाण॥ ५॥ विगय तणो करै पचखाण, समता बसावै दिल मां

आण। चर्म तणी तथा वस्त्र नी जोय, पन्नी पावड़ियादिक अवलोय ॥ ६ ॥ पान सुपारी एलायची पेख, वस्त्र वासना द्रव्य अनेक। चित में समता धारै चङ्ग, तांबुल नेम धारै मन रङ्ग ॥७॥ सूत ऊनुँ रेशम नो जोय, वस्त्र अभिग्रह धारै सोय। फूलादिक सुगन्ध अपार, सूंघन मेरा करै सुखसार ॥ ८ ॥ अश्व रथादिक नी असवारी, बाहनाभिग्रह करै मन बारी। पल्यंकादिक सयण सुजान, बैसण सोवण विध परिमाण ॥ ९ ॥ केशर चन्दण ने घणसार, विलेपन मर्याद विचार। देव मनुष्य तिर्यञ्च ना जोय, भोग छांड़ी ब्रह्मचारी होय ॥ १० ॥ पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण, उर्द्ध अधो धारै विचक्षण। भ्रमण तणो मन मेटी भ्रम, पाप सेवन त्यागै दिल नर्म ॥ ११ ॥ एक दोय उपरान्त उदार, अंग पखालण करै परिहार, हस्त पाद धोवण विध जोय, ते पिण त्यागै समता वसोय ॥ १२ ॥ अशनादिक चिहुं विधि आहार, त्यांमें एक बे आदि त्यागै सार। तथा तोल मान करै जेह, भात गिनत संख्या धारेह ॥ १३ ॥ एह चवदै नेम कहीजै, त्यामें लेन वेचन बहु काम गिणिजै। खावण पीवण मर्याद करीजै, करण जोग दिल मांह धरीजै ॥ १४ ॥ अनन्त काल भव भ्रमण मिटावै, सुख सम्पत्ति आनन्द उपावै। चवदै नेम हृदय जे ध्यावै, नरक निगोद मांहें नहीं जावै ॥ १५ ॥ दुर्लभ लाधो मनुष्य जमारो, आर्य क्षेत्र सुकुल अवतारो। आण अखंडित सूं आराधो, तो शिव-रमणि ना सुख साधो ॥ १६ ॥ अङ्ग अश्व ग्रह चन्द कहावै, भाद्र कृष्ण पञ्चम दरशावै। श्री कालू करुणा सुपसायो, ऋषि-

राम आनन्द निधि पायो ॥ १७ ॥ अल्प मात्र विस्तार ए कीधो
बुद्धिवन्त जाण लेवै बहु विधो । गंगापुर श्रावक गुण गाया
ढाल जोड़ी ए युक्ति लगाया ॥ १८ ॥

श्रावक के नित्य चिन्तवने के तीन मनोरथ

रचयिता—श्रावक गुलाबचन्दजी लुणिया

दोहा

प्रणमूं अरिहन्त सिद्ध बलि, आचारज उवज्झाय ।
साधु सकल पद वन्दताँ, आनन्द मङ्गल थाय ॥ १ ॥
श्रीजिनवर स्वमुख थकी ; तीजा अङ्ग मझार ।
तीजै ठाणै भाखिया, तीन मनोरथ सार ॥ २ ॥
श्रावक-व्रत धारक जिके, चितवन्ताँ सुखकार ।
कर्म महा अघ निरजरै, पामै भव नो पार ॥ ३ ॥

ढाल पहली

(देशी—भाखै कृष्ण मुरार, धिक्कार संसार नें)

प्रथम मनोरथ मांहि, श्रावक इम चिन्तवै ।
ये आरम्भ दुःखदाय, परिग्रह थी हुवै ॥ १ ॥
महा अनरथ नुं मूल, परिग्रह जिन कह्यो ।
किंचित् ने बलि स्थूल, पंच भेदे ग्रह्यो ॥ २ ॥
खेतु वथु दिक जान, हिरण्य सुवर्ण सही ।
कुम्भिधातु धन धान, द्विपद चौपद मही ॥ ३ ॥

यथा शक्ति परिणाम, त्याग उपरांत ही।
पञ्चम व्रत गुण खाण, करण योगवन्त ही ॥ ४ ॥

जे राख्यो आगार, ते अव्रत द्वार है।
देयाँ देवायाँ तार, पाप संचार है ॥ ५ ॥

सचित अचित जे वस्तु, आहारनें पाणियाँ।
सावद्य कार्य समस्त, भोगायाँ भलो जाणियाँ ॥ ६ ॥

हिन्सा हुवै षटकाय, तणी गृहवास में।
जिन मुनि आण न ताय, धर्म नहीं जास में ॥ ७ ॥

आरम्भ परिग्रह एह, कुगति दातार है।
क्रोध मान माया लोभ, तणुं करण हार है ॥ ८ ॥

संयम समकित कल्प-तरु, नो भंजनुँ।
महा मन्द बुद्धि अज्ञान, तणो मन रञ्जनुं ॥ ९ ॥

माठी लेश्या होय, आर्त्त रौद्र ध्यान में।
न्याय न सूझै कोय, लिप्त धनवान नें ॥१०॥

सुमति शुचि सौभाग्य, विनाशण एह ही।
जन्म मरण भय अथाग, हुवै परिग्रह थकी ॥११॥

कड़वा कर्म विपाक, तणो हेतु सधै।
सींचै तृष्णा-वेल, विषै इन्द्री वधै ॥१२॥

दारुण, कर्कश दुःख, वेदन असराल ही।
कूड़ कपट परपञ्च, करै विकराल ही ॥१३॥

इण सरीखो नहीं मोह-पाश, प्रतिबन्ध है।
स्नेह राग करि [illegible], [illegible] [illegible] है ॥१४॥

दान कुपात्र दुरगति दायक जिन कहै।
परिग्रह थी देवाय, तेह थी शिव किम लहै ॥१५॥
घणा काल री प्रीत, विनाशै स्यात में।
कुल-मर्याद नी रीत, छांड़े बलि न्यात में ॥१६॥
एहवो आरम्भ परिग्रह, जे दिन त्यागस्यूं।
थासे ते दिन धन्य, अंतस वैराग सूं ॥१७॥
बाह्य अभ्यन्तर ग्रन्थ तणी मूर्च्छा तजूँ।
प्रगटै भल रवि तेह, नाम प्रभू नुं भजूँ ॥१८॥

दोहा

दूजो मनोरथ चिन्तवै, श्रावक जे व्रतधार।
तन धन जोबन कारमुं, विणशंताँ नहीं बार ॥ १ ॥
मात पिता बंधव त्रिया, पुत्रादिक परिवार।
स्वारथ लग सहु को सगा, सही संसार असार ॥ २ ॥
गृहवासे हिवड़ाँ बसूं, चारित मोह जे कर्म।
क्षय उपशमियाँ थी कदा, लेस्यूं चारित्र धर्म ॥ ३ ॥

ढाल दूसरी

[देशी—वैरागे मन वालियो तथा कृष्ण भावै रूड़ी भावना]

धन २ संजम धर मुनि, त्याग्यो ते संसार।
पञ्च महाव्रत धारका, पालै पंच आचार ॥
धन २ संयम धर मुनि ॥ १ ॥

श्री जिन आज्ञा बाहिरो, सावद्य कारज ताय।
नहीं आदेश दे तेहनुं, मौन धारै मुनिराय॥
धन २ संयम धर मुनि॥२॥

दश विध यति धर्म धारियो, यति नाम कहिवाय।
जीत्या विषय इन्द्रियाँ तणी, द्वितीय अर्थ सुखदाय॥
धन २ संयम धर मुनि॥३॥

दोष बयालिस टालके, ले भिक्षु शुद्ध आहार।
कह्यो भिक्षु ए गुण थकी, भेदै कर्म अपार॥
धन २ संयम धर मुनि॥४॥

साधै शिव-मग साधना, साधु महा गुण खान।
द्वादश भेदे तप करै, तपसी नाम बखान॥
धन २ संयम धर मुनि॥५॥

मत हणो २ जीवने, दे उपदेश महन्त।
माहण महा गुण आगला, शान्ति-भाव ते सन्त॥
धन २ संयम धर मुनि॥६॥

कल्याणकारी ते भणी, कल्याणिक मुनि नाम।
विघ्नोपशमकारी पणे, मंगलीक अभिराम॥
धन २ संयम धर मुनि॥७॥

धर्मोपदेशक गुण थकी, पूजनीक तसु पाय।
तीन लोक ना अधिपति, धर्म-देव मुनिराय॥
धन २ संयम धर मुनि॥८॥

चित्त प्रसन्न दरशन तसु , चैत्य सदा सुखकार।
नव विध पालै ब्रह्म क्रिया , बलिहारी ब्रह्मचार॥
धन २ संयम धर मुनि॥ ९॥

जन्म सफल कियो महाऋषि , षट् काया प्रतिपाल।
भव सागर में डूबतां , जहाज समान दयाल॥
धन २ संयम धर मुनि॥१०॥

स्नेह पाश नहिं केह सूं , संवेगी वैराग।
ग्रन्थी त्याग निग्रन्थ है , महकत सुयश अथाग॥
धन २ संयम धर मुनि॥११॥

शुद्ध क्रिया में श्रम करै , श्रमण कहीजै तेह।
योग विमल साधै सदा , तिण स्यूं योगी कहेह॥
धन २ संयम धर मुनि॥१२॥

आर्जव २ भाव थी , मार्दव २ भाव।
शौच शुची क्रिया भली , करता मुक्ति उपाय॥
धन २ संयम धर मुनि॥१३॥

धर्म-विणज विणजै सदा , सार्थबाह सुविचार।
कर्म-कटक दल जीतवा , सेनापति व्रतधार॥
धन २ संयम धर मुनि॥१४॥

मन वच काया गोपवै , सुमति पञ्च प्रकार।
इन्द्रादिक स्वमुख करी , न लहै गुण नो पार॥
धन २ संयम धर मुनि॥१५॥

सबला इकवीस दोष जे, टालै ते भल रीत।
तीन तीस आशातना, करै नहीं सुविनीत॥
धन २ संयम धर मुनि॥१६॥

आचारज उवज्झाय री, व्यावच से धर प्यार।
तपसी लघु पुनः ग्लान नें, वस्त्रादिक दे आहार॥
धन २ संयम धर मुनि॥१७॥

भव भ्रम भमता जीव नें, तारण तरण समान।
गहन कन्तार संसार थी, ल्यावै शिव मग स्थान॥
धन २ संयम धर मुनि॥१८॥

चन्द्र तणी पर निरमला, तम मिथ्या मति नाश।
अडिग अमर गिरि सारीषा, रविवत् ज्ञान प्रकाश॥
धन २ संयम धर मुनि॥१६॥

जिन भाषित दाखित सदा, साधु श्रावकनुं धर्म।
अव्रत विष सम लेखवी, पालै क्रिया पर्म॥
धन २ संयम धर मुनि॥२०॥

आतम भावे विचरता, ध्यावै निज ध्येय ध्यान।
अकर्ता पद परिणमै, धन्य धन्य ते गुणवान॥
धन २ संयम धर मुनि॥२१॥

निन्दित वन्दित सम पणै, राग द्वेष नहिं होय।
जश अपयश जीवण मरण में, हर्ष शोग नहिं कोय॥
धन २ संयम धर मुनि॥२२॥

सफल जमारो धन्य घड़ी, भावे जागृत जेह।
अप्रतिबन्ध वायु परै, तजी कुटुम्ब थी नेह॥
धन २ संयम धर मुनि ॥२३॥

चारित मोह क्षयोपशम्यां, हूं एहवो व्रत धार।
थाँस्यूं ते दिन धन्य घड़ी, आनन्द हर्ष अपार॥
धन २ संयम धर मुनि ॥२४॥

दोहा

तीजो मनोरथ चिन्तवै, मन में श्रावक एम।
संयम ग्रही शुभ भाव से, लिया निभाऊँ नेम॥ १॥
ए संसार अगाध में, भमियो काल अनन्त।
बहु षटरस भोजन किया, समता नहिं उपजंत॥ २॥
मरण सहित अणशण करूं, पादोपगमन संथार।
अवसर मरण तणै बलि, होयजो शरणा च्यार॥ ३॥

ढाल ३ जी

[देशी—हूं तुझ आगल स्यूं कहूं कन्हैया]

शुभाशुभ पुद्गल फरशिया। गुणवन्ता। षटत्रण दिशानूँ आहार हो। गुणवन्ता श्रावक। दुगन्ध सुगंध फर्श आठ ही।गु०। पंच बरण रस धार हो। गु०। श्रावक। भावै एहवी भावना गुणबन्ता॥ १॥ मोटी माया मोहणी। गु०। खोटी पुद्गल पर्याय हो। गु० श्रा०। उदय थयाँ दुख नीपजै। गु०। वेदै चेतन

राय हो। गु०। श्रा० भावै० ॥ २ ॥ प्रकृति अठवीसे करी। गु०। क्रोध मान माया लोभ हो। गु०। चिहुं २ भेदे संचरै। गु०। पामै चेतन क्षोभ हो। गु०। श्रा०। भावै० ॥ ३ ॥ हास्य रतारत भय बलि। गु०। शोग दुगंछा थाय हो। गु०। श्रा०। स्त्री पुरुष नपुँ-सक तिहुं। गु०। मोह चारित कहिवाय हो। गु०। श्रा०। भावै। ॥ ४ ॥ दरशन मोह उदय थकी। गु०। मिच्छत समकित जान हो। गु०। श्रा०। मिश्र मोहिनी ए तिहुं। गु०। दाबै निज गुण खान हो। गु०। श्रा०। भावै० ॥ ५ ॥ असाता वेदनोदय। गु०। भूख तृषादि पीडंत हो। गु०। श्रा०। लाभ भोगंतर क्षयोपशम्याँ। गु०। भोग शक्ति पावंत हो। गु०। श्रा०। भावै० ॥ ६ ॥ नाम उदय थी सहु मिलै। गु०। गमता अणगमता भोग हो। गु०। ॥ श्रा० ॥ विविध प्रकारे भोगवै। गु०। शरीरादि रोग आरोग हो। गु०। श्रा०। भावै ॥ ७ ॥ बार अनन्त सुख दुःख सह्या। गु०। भव-भव भमियो जीव हो। गु० श्रा०। स्वर्ग नरक फुन मनुष्य में। गु०। तिर्यंच गति में अतीव हो। गु०। श्रा०। भावै ॥ ८ ॥ अनन्त मेरु सम आहारिया। गु०। अनन्त पुद्गल पर्याय हो। गु०। श्रा०। कई इक लोकाकाश में। गु०। बार अनन्त कहिवाय हो। गु०। श्रा०। भावै० ॥९॥ भोजन किया इण आतमा। गु०। बहु मूल्य नो तंत हो। गु० श्रा०। इम जाणी अणसण करै। गु०। छेहले अवसर संत हो। गु०। श्रा०। भावै ॥ १० ॥ अष्टादश जे पाप ना। गु०। थानक प्रते आलोय हो। गु०। श्रा०। निन्दै दुकृत जे थया। गु०। शल्य रहित सहुकोय हो। गु०। श्रा०। भावै।

॥११॥ लाख चौरासी योनि नें। गु० । बारम्बार खमाय हो ।गु०। । श्रा० । राग द्वेष तज सहु थकी । गु० । हर्ष शोग नहीं कांय हो । गु० । श्रा० । भावै० ॥१२॥ च्यार प्रकारे आहार जे । गु० । त्यागै ममता रहित हो । गु० । श्रा० । पञ्च आस्रव पचखी करी । गु० । पादोपगमन सहित हो । गु० । श्रा० । भावै० ॥१३॥ जंगम स्थावर सम्पत्ति । गु० । द्विपद चौपद वोसराय हो । गु० । श्रा० । अरिहन्त सिद्ध साधु ध्यान थी । गु० । शिवगति नेड़ी थाय हो । गु० । श्रा० । भावै ॥१४॥ इहलोक परलोक नी । गु० । जीवितव्य मरण सधीर हो । गु० । श्रा० । आशा नहीं काम भोग री । गु० । सम परिणाम सुथिर हो । गु० । श्रा० । भावै ॥ १५ ॥ अन्त समा में एहवो । गु० । पण्डित मरण जे थाय हो । गु० । । श्रा० । मनरा मनोरथ जद फलै । गु० । आनन्द हर्ष सवाय हो । गु० । श्रा० । भावै ॥ १६ ॥ धन्य दिवस धन्य जे घड़ी । गु० । आराधक पद पाय हो । गु० । श्रा० । अल्प भवाँ रे आंतरै । गु०। सिद्ध गति में ते जाय हो । गु० । श्रा० । भावै ॥ १७ ॥ श्री भिक्षु गुण आगला । गु० । प्रकट बतायो राह हो । गु० । जिन धर्म जिन आज्ञा माहिं । गु० । आज्ञा बाहेर नांहि हो । गु० । श्रा० । ॥ भावै ॥ १८ ॥ भारीमाल गणि तस पटे । गु० । तृतीय तख्त ऋषिराय हो । गु० । श्रा० । जय वर पट तूर्य सूर्य-सा । गु० । पञ्चम मघवा कहवाय हो । गु० । श्रा० । भावै ॥ १६ ॥ माणक माणक सारिखा ।गु०। बर्तमान गच्छ-स्थम्भ हो । गु० । श्रा० । नामें डाल शशि भला । गु० । भविजन निरख अचम्भ हो । गु० ।

श्रा० ॥ भावै ॥ २० ॥ उगणीसै पैंसठ बलि । गु० । मृगशर सित पख पेख हो । गु० । श्रा० । श्रावक गुलाब कहै भलैं । गु० आनन्द हर्ष विशेष हो । गु० । श्रा० । भावै ॥ २१ ॥

गीतक छंद

इम त्रण मनोरथ चिन्तवै, जे भविक नित प्रते जाण ही
अघ-राशि कर्म विनाश थावै, पावै पद निर्वाण ही ।
गणी डालचन्द दिनन्द सम, मम गुरु तास पसाय ही
कहै श्रमणोपासक गुलाबचन्द, आनन्द हर्ष अथाय ही ॥ १ ॥

बारह भावना

१ अनित्य भावना

दोहा

राजा राणा छत्रपति, हाथिन के असवार ।
मरना सब को एक दिन, अपनी-अपनी बार ॥

२ अशरण भावना

दल बल देवी देवता, मात पिता परिवार ।
मरती विरियाँ जीव को, कोई न राखनहार ॥

३ संसार भावना

दाम बिना निर्धन दुखी, तृष्णा वश धनवान ।
कहूं न सुख संसार में, सब जग देख्यो छान ॥

४ एकत्व भावना

आप अकेला अवतरै, मरे अकेला होय।
यों कबहूँ या जीव को, साथी सगो न कोय॥

५ अन्यत्व भावना

जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपना कोय।
घर सम्पत्ति पर प्रकट ये, पर हैं परिजन लोय॥

६ अशुचि भावना

दीपै चाम चादर मढ़ी, हाड पींजरा देह।
भीतर या सम जगत में, और नहीं घिन गेह॥

७ आस्रव भावना

जगवासी घूमै सदा, मोह नींद के जोर।
सब लूटै, नहीं दीसता, कर्म चोर चहुँ ओर॥

८ संवर भावना

मोह नींद जब उपशमै, सतगुरु देय जगाय।
कर्म चोर आवत रुकै, तब कुछ बने उपाय॥

९ निर्जरा भावना

ज्ञान दीप तप तेल भर, घर शोधे-भ्रम छोर।
या विधि बिन निकसै नहीं, पैठे पूरव चोर॥
पंच महाव्रत संचरण, समिति पंच प्रकार।
प्रबल पंच इन्द्रिय विजय, धार निर्जरा सार॥

१० लोक भावना

चौदह राजु उतंग नभ, लोक पुरुष संठान।
तामें जीव अनादि तैं, भरमत है बिन ज्ञान॥

११ बोधिदुर्लभ भावना

धन जन कंचन राज सुख, सबहिं सुलभ कर जान।
दुर्लभ है संसार में, एक यथारथ ज्ञान॥

१२ धर्म भावना

जाचे सुरतरु देय सुख, चिंतित चिन्ता रैन।
बिन जाचे बिन चिन्तये, धर्म सकल सुख दैन॥

बारै भावना की ढाल

(देशी—नमिनाथ अनाथां रो नाथो रे०)

आदिनाथ अरिहन्त आख्यातो रे। बड़ो पुत्र भरत विख्यातो रे। अनित्य भावना भाई साख्यातो। महामुनि मोटका नित्य वन्दो रे॥ १॥ गढ़ मढ़ मन्दिर पोल प्रकारो रे। नर इन्द्र सुरेन्द्र सारो रे॥ नित्य नहीं सहु नर नारो॥ २॥ अशरण भावना ऋषि अनाथी रे। एक जिन धर्म जीव रो साथी रे॥ संयम पाली मुगत संघाती॥ महा०॥ ३॥ संसार भावना शालिभद्र भाई रे। अधिक वैराग मन आई रे॥ संयम लेइ सर्वार्थसिद्ध

पाई ॥ महा० ॥ ४ ॥ नमिराय ऋषेश्वर जाणी रे। एकत्व भावना उर आणी रे॥ मुनि जाय पहुंता निरवाणी ॥ महा० ॥ ५ ॥ पंखी नी पर भावना भल भाई रे। कुंवर मृघापुत्र उर आई रे॥ संयम लियो परिवार समझाई ॥ महा० ॥ ६ ॥ चौथो चक्री सनत कुमारो रे॥ अशुच भावना भाई अपारो रे॥ राज छांड़ि संयम व्रत धारो ॥ महा० ॥ ७ ॥ समुद्रपाल एलाची दोई रे॥ आस्रव भावना जोई रे॥ दोनूं मुगत गया कर्म खोई ॥ महा० ॥ ८ ॥ बागणी केशी हर केशी रे। संवर भावना उर वेसी रे॥ हर केशी मुगत बरेसी ॥ महा० ॥ ९ ॥ निर्मल निर्जरा भावना भाई रे। छव मासे कर्म खपाई रे॥ अरजुन माली अनन्त सुख पाई ॥ महा० ॥ १० ॥ लोक सार भावना लीव लागी रे। शिवराज ऋषेश्वर जागी रे॥ प्रभु पे संयम लेई वैरागी ॥ महा० ॥ ११ ॥ अठाणवै पुत्र आया रे। आदेश्वरजी समझाया रे॥ बोध दुर्लभ भावना भाया ॥ महा० ॥ १२ ॥ धर्मरुची ऋषिरायो रे। धर्म भावना ते भायो रे॥ दया पाली सर्वार्थसिद्ध पायो ॥ महा० ॥ १३ ॥ ए बारह भावना जे भावै रे। ते नर महा सुख पावै रे॥ वेगो मुगत नगर में जावै ॥ महा० ॥ १४ ॥ संवत् त्रेणवे बरस अठारो रे। काती बद नवमी भोमवारो रे। जोड़ कीधी मालवा गांव मझारो ॥ महा० ॥ १५ ॥

रेकारा तूंकारा किण नें, राग द्वेष वश दीध।
तेह थी खमत खामणा म्हांरा, एम वदै सुप्रसिद्ध ॥ ८ ॥
कठिन सीख दीधी हुवै किण नें, लहर वैर मन आण।
खमत खामणा म्हांरा तेह थी, वदै नरम इम वाण ॥ ९ ॥
महा उपकारी गणपति भारी, सम्यक्त चरण दातार।
बारम्बार खमावै त्यांनें, अविनय कियो किंवार ॥ १० ॥
स्वारथ अणपूगाँ गणपति ना, बोल्या अवर्णवाद।
ते पिण बारम्बार खमावै, मेटी मन असमाध ॥ ११ ॥
विनयवन्त गणपति ना त्यां थी, धस्या कलुष परिणाम।
बारम्बार खमावै तेह नें, लेई जूजूआ नाम ॥ १२ ॥
च्यार तीरथ अथवा अन्य जन थी, मेटी मच्छर भाव।
इह विधि खमत खामणा करतो, ते मुनि तरणी न्याव ॥ १३ ॥
परम नरम इम आतम करवी धरवी समता सार।
एह विधि बारुं रीत बताई, तीजा द्वार मझार ॥ १४ ॥

अनुपूर्वी पढ़ने की विधि

जहाँ १ है वहाँ णमो अरिहंताणं बोलना चाहिए।
जहाँ २ है वहाँ णमो सिद्धाणं बोलना चाहिए।
जहाँ ३ है वहाँ णमो आयरियाणं बोलना चाहिए।
जहाँ ४ है वहाँ णमो उवज्झायाणं बोलना चाहिए।
जहाँ ५ है वहाँ णमो लोए सव्वसाहूणं बोलना चाहिए।

१	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

१

१	२	४	३	५
२	१	४	३	५
१	४	२	३	५
४	१	२	३	५
२	४	१	३	५
४	२	१	३	५

२

१	३	४	२	५
३	१	४	२	५
१	४	३	२	५
४	१	३	२	५
३	४	१	२	५
४	३	१	२	५

३

२	३	४	१	५
३	२	४	१	५
२	४	३	१	५
४	२	३	१	५
३	४	२	१	५
४	३	२	१	५

४

१	२	३	५	४
२	१	३	५	४
१	३	२	५	४
३	१	२	५	४
२	३	१	५	४
३	२	१	५	४

५

१	२	५	३	४
२	१	५	३	४
१	५	२	३	४
५	१	२	३	४
२	५	१	३	४
५	२	१	३	४

६

१	३	५	२	४
३	१	५	२	४
१	५	३	२	४
५	१	३	२	४
३	५	१	२	४
५	३	१	२	४

२	३	५	१	४
३	२	५	१	४
२	५	३	१	४
५	२	३	१	४
३	५	२	१	४
५	३	२	१	४

१	२	४	५	३
२	१	४	५	३
१	४	२	५	३
४	१	२	५	३
२	४	१	५	३
४	२	१	५	३

९

१	२	५	४	३
२	१	५	४	३
१	५	२	४	३
५	१	२	४	३
२	५	१	४	३
५	२	१	४	३

१०

१	४	५	२	३
४	१	५	२	३
१	५	४	२	३
५	१	४	२	३
४	५	१	२	३
५	४	१	२	३

११

२	४	५	१	३
४	२	५	१	३
२	५	४	१	३
५	२	४	१	३
४	५	२	१	३
५	४	२	१	३

१२

१	३	४	५	२
३	१	४	५	२
१	४	३	५	२
४	१	३	५	२
३	४	१	५	२
४	३	१	५	२

२३

१	३	५	४	२
३	१	५	४	२
१	५	३	४	२
५	१	३	४	२
३	५	१	४	२
५	३	१	४	२

२४

१	४	५	३	२
४	१	५	३	२
१	५	४	३	२
५	१	४	३	२
४	५	१	३	२
५	४	१	३	२

१५

३	४	५	१	२
४	३	५	१	२
३	५	४	१	२
५	३	४	१	२
४	५	३	१	२
५	४	३	१	२

१६

२	३	४	५	१
३	२	४	५	१
२	४	३	५	१
४	२	३	५	१
३	४	२	५	१
४	३	२	५	१

२	३	५	४	१
३	२	५	४	१
२	५	३	४	१
५	२	३	४	१
३	५	२	४	१
५	३	२	४	१

२	४	५	३	१
४	२	५	३	१
२	५	४	३	१
५	२	४	३	१
४	५	२	३	१
५	४	२	३	१

१९

३	४	५	२	१
४	३	५	२	१
३	५	४	२	१
५	३	४	२	१
४	५	३	२	१
५	४	३	२	१

२०

जैन सिद्धान्त

जीव जीवै ते दया नहीं, मरै ते हिंसा मत जान।
मारणवाला नें हिंसक कह्यो, नहिं मारै ते दया गुण खान।

क्षमत क्षमापना की ढाल

दोहा

(रचयिता—श्रावक गुलाबचन्दजी लूणिया)

व्रत-धारक भवि शुद्ध मन, खमत खामना सार।
निरमल आतम किम करै, आखूं ते अधिकार॥ १॥
सरल पणै वच काय सूं, मन थी कपट निवार।
नमन भाव दिल आणि नें, खमाविये तज खार॥ २॥

ढाल

(लय—संभव साहिब समरिये)

सात लाख योनि महीधरा, सात लाख अप् पाणी नी जोणिकै।
सात लाख तेउ अग्नि नी, वायु पिण इतनी कही गोणिकै॥
खमत खामना तेह थी॥ १॥

एक जीव इक तनु महीं, तेह प्रत्येक वनस्पति कायकै।
दश लाख योनि जिन कही, चौदह लाख साधारण तायकै॥
खमत खामना तेह थी॥ २॥

जीव अनन्ता एक-सा, एक शरीर में रह्या तिण न्यायकै।
लीलण फूलण आदि में, जमीकन्द अंकुरा मांयकै।
खमत खामना तेह थी ॥ ३ ॥

सूक्ष्म बादर बिहुं परै, क्रोध भाव आण्या हुवै कोयकै।
त्रिविध २ म्हांयरै, मिच्छामि दुक्कडं छै अवलोयकै॥
खमत खामना तेह थी ॥ ४ ॥

बादर पांचूँ काय नें, हणी हणाई निज पर काजकै।
अनुमोदी हणताँ प्रते, ते तिहुं जोग आलोऊँ आजकै॥
खमत खामना तेह थी ॥ ५ ॥

लट गिनोला बेइन्द्रिय, क्रीड़ादिक तेइन्द्री ना जीवकै।
खटमल प्रमुख बिणासिया, कलुष भाव करी पाड़ी रींवकै॥
खमत खामना तेह थी ॥ ६ ॥

माखी माछर चौरिन्द्री, बिच्छु प्रमुख हण्या हुवै सोयकै।
ये तिहुं बिकलेन्द्रि तणी, योनि लख जाणो दोय दोयकै॥
खमत खामना तेह थी ॥ ७ ॥

रत्नप्रभा जाव तमतमा, सात नरक में नेरीया जेहकै।
च्यार लाख योनि तेहनी, तास खमाऊँ सरल पणेहकै॥
खमत खामना तेह थी ॥ ८ ॥

च्यार प्रकारे देवता, भुवनपति व्यन्तर सुविचारकै।
ज्योतिषी अनें विमानका, चिहुं लख योनि घणो अधिकारकै॥
खमत खामना तेह थी ॥ ९ ॥

द्वेष भाव किण अवसरे, आण्या हुवै बलि कलुष परिणामकै।
तास खमाऊँ भली परै, खमज्यो तुम्हें देवा अभिरामकै॥
खमत खामना तेह थी॥ १० ॥

तूर्य लाख तिर्यञ्च नीं, जलचर में मच्छादिक जाणकै।
थलचर थल पै चालता, हाथी आश्वादिक बहु प्राणकै।
खमत खामना तेह थी॥ ११ ॥

उरपर उरु से गति करै, सर्पादिक बलि विविध प्रकारकै।
भुजपर उन्दर आदि हैं, तासु खमाऊँ तज चित्त खारकै॥
खमत खामना तेह थी॥ १२ ॥

गमन आकाश करै तसु, खेचर पंखी कहीजे जासकै।
हास्य कौतुहल दिक करी, हण्या हणाया हुवै बलि तासकै॥
खमत खामना तेह थी॥ १३ ॥

पाँच भेद तिर्यञ्च ये, मन बिमना इन्द्रिय धर पाँचकै।
सब प्रते तीन जोग सूं, खमत खामना करूं तज खाँचकै॥
खमत खामना तेह थी॥ १४ ॥

चौदह लख योनि मनुष्य नीं, सूत्र विषै भाषी जिनरायकै।
तसु मल मूत्रादि महीं, समूर्छिम मनु, उपजै आयकै॥
खमत खामना तेह थी॥ १५ ॥

ये चौरासी लख जाणिये, जीवा जोणि जे उपजण ठामकै।
बारम्बार ते सब प्रते, खमत खामना छै अभिरामकै॥
खमत खामना तेह थी॥ १६ ॥

देव अरिहन्त जे केवली, अनन्त चौबीसी हुई भर्त जेहकै।
इम हिज ऐरवय पंचमें, वर्तमान जिन पंच विदेहकै॥
खमत खामना तेह थी॥ १७॥

विनय करी कर जोड़ नें, मन शुद्ध थी खमज्यो अपराधकै।
भव-भव शरणो तुम तणो, तिण सूं थावै परम समाधिकै॥
खमत खामना तेह थी॥ १८॥

दूजै पद सिद्ध सुखकरू, पूर्व प्रयोगे गति परिणामकै।
सर्वारथसिद्ध थी अछै, द्वादश योजन इसी प्रभाः नामकै॥
खमत खामना तेह थी॥ १९॥

ते थी उर्द्ध लोकान्तकै, गाऊ इक रै छट्ठे भागकै।
अनन्त गुणी तुम्हें जई वस्या, हिव पायो मैं तुम तणो मागकै॥
खमत खामना तेह थी॥ २०॥

जे कोई जाण अजाणता, आशातना हुई तासु खमायकै।
आवण तिहाँ मन लग रह्यो, तुम सरिषो तुम जपियाँ थायकै॥
खमत खामना तेह थी॥ २१॥

आचारज तीजै पदे, सम्यक्त्व चरण तणा दातारकै।
शुद्ध प्ररूपण जेहनी, महा उपगारी महा सुखकारकै॥
खमत खामना तेह थी॥ २२॥

उवज्झाया गण-वत्सलू, भणै भणावै निरमल ज्ञानकै।
गणी आणा न उलंवता, पालै पंच महाव्रत मानकै॥
खमत खामना तेह थी॥ २३॥

निज स्त्री पुत्र पुत्री नें, हित-शिक्षा देताँ किण वारकै।
करड़ा वचन कह्या हुवै, कारज घर ना करावण सारकै॥
खमत खामना तेह थी ॥ ३१ ॥

नाम लेई नें जुवा जुवा, सर्व भणी इम खमत खमाय कै।
मन वच कायाइं करी, दिलमें मच्छर भाव मिटायकै॥
खमत खामना तेह थी ॥ ३२ ॥

धर्म जिनेश्वर भाषियो, पायो इन भव में सुविशालकै।
विघ्न मिटै संकट कटै, तास प्रसादे मंगल मालकै॥
खमत खामना तेह थी ॥ ३३ ॥

तीजै द्वार आराधना, खमाविये कही छट्ठी ढाल कै।
आराधना पद पाविये, जिन वच स्हामो नयण निहालकै॥
खमत खामना इम करै ॥ ३४ ॥

कलश

इम खमत खामन अतहि पावन, विमल भावन नित धरै।
बहु अघ खपावै सुणै सुणावै, आत्म हित चित सुख करै॥
श्री जिनेश्वर महाराज भव-दधि, पाज काज सेयाँ सरै।
कहै श्रावक गुलाब सु आत्र गुण युत, अति ही आनन्द निज घरै॥

पद्मावती आराधना

(लय—रे जीवा जिनधर्म कीजिए)

हिवै राणी पद्मावती, जीवरास खमावै ।
जाणपणो जग दोहिलो, इण वेलाँ आवै ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ १ ॥
अरिहन्तनी साख, जे मैं जीव विराधिया ।
चौरासी लाख, ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥ २ ॥
सात लाख पृथ्वी तणा, साते अपकाय ।
सात लाख तेउ काय ना, साते वली वाय ॥ ३ ॥
दश प्रत्येक वनस्पति, चवदे साधारण धार ।
बी ती चउरिंद्री जीवना, वे वे लाख विचार ॥ ४ ॥
देवता तिर्यंच नारकी, चार चार प्रकाशी ।
चउदे लाख मनुष्य ना, ए लाख चौरासी ॥ ५ ॥
इण भवे परभवे सेविया, जे मैं पाप अठार ।
त्रिविध त्रिविध करी परिहरूं, दुर्गति ना दातार ॥ ६ ॥
हिंसा कीधी जीवनी, बोल्या मृषावाद ।
दोष अदत्ता दान ना, मैथुन ने उन्माद ॥ ७ ॥
परिग्रह मेल्यो कारमो, कीधो क्रोध विशेष ।
मान माया लोभ मैं किया, वली राग ने द्वेष ॥ ८ ॥
कलह करी जीव दुहव्या, दीधा कूड़ा कलंक ।
निन्दा कीधी पारकी, रति अरति निशंक ॥ ९ ॥

चाड़ी कीधी चौंतरे, कीधो थापण मोसो।
कुगुरु कुदेव कुधर्म नो, भलो आण्यो भरोसो॥ १०॥
खटिक ने भवे मैं किया, जीव नाना विध घात।
चिड़ीमार ने भवे चिड़कला, मार्या दिन नें रात॥ ११॥
काजी मुल्ला ने भवे, पढ़ी मन्त्र कठोर।
जीव अनेक जंबै किया, कीधा पाप अघोर॥ १२॥
मच्छीमार ने भवे माछला, जाल्या जल वास।
धीवर भील कोली भवे, मृग पाड़्या पाश॥ १३॥
कोटवाल ने भवे जे किया, आकरा कर दण्ड।
बन्दीवान मराविया, कोरड़ा छड़ी दण्ड॥ १४॥
परमाधामी ने भवे, दीधा नारकी दुःख।
छेदन भेदन वेदना, ताड़न अति तिख॥ १५॥
कुम्भार ने भवे मैं किया, नीमाह पचाव्या।
तेली भवे तिल पीलिया, पापे पिण्ड भराव्या॥ १६॥
हाली भवे हल खेड़िया, फाड़्या पृथ्वी ना पेट।
सूड़ निनाण घणा किया, दीधी बलदाँ चपेट॥ १७॥
माली ने भवे रोपिया, नाना विध वृक्ष।
मूल पत्र फल फूल ना, लागा पाप ते लक्ष॥ १८॥
अद्धोवाइयाने भवे, भर्या अधिका भार।
पोठी पुठे कीड़ा पड़्या, दया नाणी लिगार॥ १९॥
छींपा ने भवे छेतर्या, कीधा रङ्गण पास।
अग्नि आरम्भ कीधा घणा, धातुर्वाद अभ्यास॥ २०॥

सूरपणे रण झुंझता, मार्या माणस वृन्द।
मदिरा मांस माखण भख्या, खाधा मूल ने कंद ॥ २१ ॥
खाण खणावी धातु नी, पाणी उलंच्या।
आरम्भ किया अति घणा, पोते पापज संच्या ॥ २२ ॥
करम अङ्गार किया वली, घर ने दव दीधा।
सम खाधा वीतराग ना, कूड़ा कोलज कीधा ॥ २३ ॥
बिल्ली भवे, उंदर लिया, गिलोरी हत्यारी।
मूढ़ गंवार तणै भवे, मैं जुवाँ लीखाँ मारी ॥ २४ ॥
भडभुंजा तणे भवे, एकेन्द्री जीव।
जुवार चणा बहु सेकिया, पाडंता रींव ॥ २५ ॥
खांडण पीसण गारना, आरम्भ अनेक।
रांधण इंधण अग्निना, कीधा पाप अनेक ॥ २६ ॥
विकथा चार कीधी वली, सेव्या पांच प्रमाद।
इष्ट वियोग पाड़्या किया, रूदन ने विपवाद ॥ २७ ॥
साधु अने श्रावक तणा, व्रत लही ने भांग्या।
मूल अने उत्तर तणा, मुझ दूषण लाग्या ॥ २८ ॥
सांप विच्छू सिंह चीतरा, सिकरा ने सामलि।
हिंसक-जीव तणे भवे, हिंसा कीधी सवली ॥ २९ ॥
सुआवड़ दुपण घणा, वली गरभ गलाव्या।
जीवाणी ढोल्या घणा, शीलव्रत भंगाव्या ॥ ३० ॥
रांगण पास मैं किया, जीव नहीं जाणी।
हिंसा कीधी जीवनी, दया न उर आणी ॥ ३१ ॥

धोबी ने भवे धोविया, काढ्या कपड़ा ना कीट।
अणगल नीर ढोल्या घणा, आई आँख्याँ मीट ॥ ३२ ॥
कन्दोई ना भवे मैं किया, भट्टी. बाली न जोय।
जीव आरम्भ किया घणा, लाग्या पातक मोय ॥ ३३ ॥
वणिज किया बाणिया भवे, धड़ियाँ दीवी उड़ाय।
छैतरी (पतरे) वस्तु मारी घणी, पाप पुग्या आय ॥ ३४ ॥
उनाले हल हांकिया, वर्षाले गाडा।
नीलण फूलण चाम्पी घणी, भूखाँ मार्या छै पाडा ॥ ३५ ॥
गूजर ना भवे मैं किया, बांध्या पाप रा भारा।
पाडी ने बेलो छोड़ियो, पाडा ने पकड़्या ॥ ३६ ॥
खाती ना भवे मैं किया, घणा रूंख बाढ्या।
थोड़ा ने बली घणा, मुझ दूषण लाग्या ॥ ३७ ॥
हाथी ना भवे मैं किया, किया रुंखा रा खोगाल।
पंखियाँ रा माला पाड़िया, भाँजी तरुवर डाल ॥ ३८ ॥
लोहार ना भवे मैं किया, घणा घवण धमाया।
कसी कुदाला. पावड़ा, खड़ग कटारी कराव्या ॥ ३९ ॥
ब्राह्मण ना भवे मैं किया, अणगल नीर स्नान।
ज्योतिष निमित्त भाखिया, लिया बर्जित दान ॥ ४० ॥
सती ने कुसती कही, कायर ने शूरा।
वेश्या ना दोय डीकरा, कह्या दोनूं पख पूरा ॥ ४१ ॥
बजाज ना भवे मैं किया, जूना नया कर वेच्या।
कूड़ कपट केलव्या घणा, पोते पापज संच्या ॥ ४२ ॥

सराफी ना भवे मैं किया, भेली करवा आय।
गालणी घणी करावता, धन चाल्यो ना साथ ॥ ४३ ॥
अणछाण्या आधण दिया, अण पूंजे चूले।
अणजोया धानज ऊरिया, मुझ पाप न भूले ॥ ४४ ॥
मेला तमासा देखताँ, विषय नजर भर जोय।
कितोल हांसी नें मशकरी, करता नर कोय ॥ ४५ ॥
जोर करी हींडै हींडता, तोड़ी तरुवर डाल।
काचा फल फूल चूँटिया, फोड़ी सरवर पाल ॥ ४६ ॥
भोया भरढ़ा ने भवे, अणहुंता नचाया।
बकरी भैंसा बापड़ा, दोसे मिस मराया ॥ ४७ ॥
नावण धोवण मैं किया, बागा वेस बनाया।
आरीसे मुख जोइया, बहु दोष लगाया ॥ ४८ ॥
सूल्या धान दलाविया, घणा घुण मसलाया।
ईली दुःखी अति घणी, पोते पाप कमाया ॥ ४९ ॥
फड़िया ना भवे मैं किया, सूल्या धानज विणज्या।
लोभ तणे वश परिग्रह, कारज कोई न सिज्या ॥ ५० ॥
पढ़वारी रा काम में, घणा कर्मज बाँध्या।
घीचारी ने भोलाविया, क्षण साचा सांध्या ॥ ५१ ॥
वेपार कीनो पसारी तणो, घणी औषधियाँ राखी।
जीवाँ रा नाश किया घणा, कीकर रेसी नांखी ॥ ५२ ॥
गुड़ खाण्ड तेल घृत ना, विणज चौमासे कीना।
जीवहत्या लागी घणी, कर्म खोटा कीना ॥ ५३ ॥

धोबी ने भवे धोविया, काढ्या कपड़ा ना कीट।
अणगल नीर ढोल्या घणा, आई आँख्याँ मीट॥ ३२॥
कन्दोई ना भवे मैं किया, भट्टी बाली न जोय।
जीव आरम्भ किया घणा, लाग्या पातक मोय॥ ३३॥
वणिज किया बाणिया भवे, घड़ियाँ दीवी उड़ाय।
छैतरी (पतरे) वस्तु मारी घणी, पाप पुग्या आय॥ ३४॥
उनाले हल हांकिया, वर्षाले गाडा।
नीलण फूलण चाम्पी घणी, भूखाँ मार्या छै पाडा॥ ३५॥
गूजर ना भवे मैं किया, बांध्या पाप रा भारा।
पाडी ने वेलो छोड़ियो, पाडा ने पकड़्या॥ ३६॥
खाती ना भवे मैं किया, घणा रूंख वाढ्या।
थोड़ा ने बली घणा, मुझ दूषण लाग्या॥ ३७॥
हाथी ना भवे मैं किया, किया रुंखा रा खोगाल।
पंखियाँ रा माला पाड़िया, भाँजी तरुवर डाल॥ ३८॥
लोहार ना भवे मैं किया, घणा घवण धमाया।
कसी कुदाला. पावड़ा, खड़ग कटारी कराव्या॥ ३६॥
ब्राह्मण ना भवे मैं किया, अणगल नीर स्नान।
ज्योतिष निमित्त भाखिया, लिया बर्जित दान॥ ४०॥
सती ने कुसती कही, कायर ने शूरा।
वेश्या ना दोय डीकरा, कह्या दोनूं पख पूरा॥ ४१॥
बजाज ना भवे मैं किया, जूना नया कर वेच्या।
कूड़ कपट केलव्या घणा, पोते पापज संच्या॥ ४२॥

सराफी ना भवे मैं किया, भेली करवा आय ।
गालणी घणी करावता, धन चाल्यो ना साथ ॥ ४३ ॥
अणछाण्या आधण दिया, अण पूंजे चूले ।
अणजोया धानज ऊरिया, मुझ पाप न भूले ॥ ४४ ॥
मेला तमासा देखताँ, विषय नजर भर जोय ।
कितोल हांसी नें मशकरी, करता नर कोय ॥ ४५ ॥
जोर करी हींडै हींडता, तोड़ी तरुवर डाल ।
काचा फल फूल चूँटिया, फोड़ी सरवर पाल ॥ ४६ ॥
भोया भरढ़ा ने भवे, अणहुंता नचाया ।
वकरी भैंसा बापड़ा, दोसे मिस मराया ॥ ४७ ॥
नावण धोवण मैं किया, बागा वेस वनाया ।
आरीसे मुख जोइया, बहु दोष लगाया ॥ ४८ ॥
सूल्या धान दलाविया, घणा घुण मसलाया ।
ईली दुःखी अति घणी, पोते पाप कमाया ॥ ४९ ॥
फड़िया ना भवे मैं किया, सूल्या धानज विणज्या ।
लोभ तणे वश परिग्रह, कारज कोई न सिज्या ॥ ५० ॥
पढ़वारी रा काम में, घणा कर्मज बाँध्या ।
घीचारी ने भोलाविया, क्षण साचा सांध्या ॥ ५१ ॥
वेपार कीनो पसारी तणो, घणी औषधियाँ राखी ।
जीवाँ रा नाश किया घणा, कीकर रेसी नांखी ॥ ५२ ॥
गुड़ खाण्ड तेल घृत ना, विणज चौमासे कीना ।
जीवहत्या लागी घणी, कर्म खोटा कीना ॥ ५३ ॥

रंगरेजा ने भवे मैं किया, कसुम्बा रंग्या।
अणछाण्या पाणी ढोलिया, लाभ तणी संज्ञा॥ ५४॥
सोनी रा भवे मैं किया, सोना रूपा में भेल।
पूरी तोल रे वाणिया, धरत लोग्यो तेल॥ ५५॥
वाघरी ने घरे जद वस्या, सब जीव संहार।
रुधिर मांस भख्या रह्या, करता मांस आहार॥ ५६॥
दासी वेश्या ने कुले, चोरी जारी पाई।
साते व्यसन सेविया, कुबुद्धि कुड़ कमाई॥ ५७॥
दाई ना भव देखिया, आंवल मल असज्झाय।
झूंठ जाचक ने जिहाँ राखिया सराय॥ ५८॥
काग चिड़ी कूकड़ कुले, कीटक भखिया कोड़।
मांखी जुवाँ गिगेड़ला, उदेई इण्डा फोड़॥ ५६॥
लखारा भवे लाख लेई, बड़ पींपल बाढ़ी।
पूरण प्राण धोई ने, अगन चढ़ाई गाढ़ी॥ ६०॥
भील मेणा थोरी भवे, लगाया दव लायाँ।
भैंसा एवड़ बाढिया, डंभाई टोगर गायाँ॥ ६१॥
असुर तणै भव उपना, मुर्गा गाय मरावी।
पंखी पिंजर पाड़िया, कट गिलोल करावी॥ ६२॥
केई जुहर कराया, धोरी केई धरणा।
दुरबल लोक केई दुहव्या, करमां स्यूं कोई न डरणा॥ ६३॥
खेत बाग खेड़ाविया, होय हाकम हुजदार।
सर दह केई शोषाविया, भरिया पापाँ रा भार॥ ६४॥

कबाड़ी भवे कर्म मैं किया, केई कठोता कराया ।
सालर गूलर बड़ कातिया, पापे पेट भराया ॥ ६५ ॥
कलाल कुञ्जड़ा कुले, दारू भट्ट चढ़ाया ।
भाजी केकरे कारणे, केई रोप रोपाया ॥ ६६ ॥
भाठा सिलावट भांजिया, केई मन्दिर कराया ।
माटी ईंटा कारणै, केई चाव लगाया ॥ ६७ ॥
भैरूं भवानी मानिया, महारुद्र हनुमान ।
आठ मद छके करी, दीधा वलिदान ॥ ६८ ॥
पंखी माळा खोसिया, भंवरा घर ढाया ।
सूल्या धान दलाविया, पापे पिण्ड भराया ॥ ६९ ॥
निन्दा कीधी साधु की, सुधा साधु सताया ।
कुगुरु संगे लाग ने, कर्म वहुला वंधाया ॥ ७० ॥
दान्तण ने ते कारणे, केई रूंख कटाया ।
धोयण दाड़ी ने मीसे, केई गोठ कराया ॥ ७१ ॥
कावड डुबड केतला, रावल रात रमाया ।
वले हरपे पात्री योखने, केई चिरत कराया ॥ ७२ ॥
रे रे कर्म किया कैसा, पाप कीधा अपार ।
ये दोप उदय आविया, अवै कुण आधार ॥ ७३ ॥
सिद्ध भगवन्त अरु साधु नो, हिवे शरणो होईज्यो ।
भगवन्त नो भजन कीजिये, सुर स्हामो जोईज्यो ॥ ७४ ॥
समदृष्टि जीव ते सरधसी, सुणताँ समता आवै ।
भारीकर्मा जीवना, सुणताँ दुःख पावै ॥ ७५ ॥

भव अनन्ता भमताँ थकाँ, कीधा देह सम्बन्ध ।
त्रिविध २ करी बोसरूं, तिण सूँ प्रतिबन्ध ॥ ७६ ॥
भव अनन्त भमताँ थकाँ, कीधा कुटुम्ब सम्बन्ध ।
त्रिविध २ करी बोसरूं, तिण सूं प्रतिबन्ध ॥ ७७ ॥
भव अनन्त भमताँ थकाँ, कीधो परिग्रह सम्बन्ध ।
त्रिविध २ करी बोसरूं, तिण सूं प्रतिबन्ध ॥ ७८ ॥
इण परे इह भवे पर भवे कीधा पाप अक्षत्र ।
त्रिविध २ करी बोसरूं, करूं जन्म पवित्र ॥ ७६ ॥
इण विधि ए आराधना, भावे करसे जेह ।
समयसुन्दर कहे पाप थी, इह भव छूटसे तेह ॥ ८० ॥
राग बैराड़ी जे सुणे, यह त्रिजी ढाल ।
समय सुन्दर कहे पाप थी, छूटे भव तत्काल ॥ ८१ ॥
ते मुझ मिच्छामि दुक्कड़ं ॥

अरिहन्त पञ्चक

(लय—आसावरी)

प्रभु म्हांरे मन-मन्दिर में पधारो, करूँ स्वागत-गान गुणां रो ।
करूँ पल-पल पूजन प्यारो, प्रभु म्हांरै मन-मन्दिर में पधारो ॥
[ध्रुव पद]

चिन्मय ने पाषाण बणाऊँ ? नहिं मैं जड पूजारो ।
अगर, तगर, चन्दन क्यूँ चरचूँ ? कण-कण सुरभित थांरो ॥ १ ॥

नहिं फल, कुसुम की भेंट चढ़ाऊँ, मैं भाव भेंट करनारो ।
आप अमल अविकार प्रभूजी, (तो) स्नान कराऊँ क्यांरो ॥ २ ॥

नहिं तत, ताल कंसाल बजाऊँ, नहिं टोकर टणकारो ।
केवल जस झालर झणणाऊँ, धूप ध्यान धरणारो ॥ ३ ॥

म्लान स्थान चंचलता निरखी, न करो नाथ ! नकारो ।
तुम थिरवासे निरमलता पा, होसी थिरचावारो ॥ ४ ॥

बीतराग, मोह, माया त्यागी, मतनाँ मोहि विसारो ।
अशरण-शरण, पतित-पावन प्रभु, 'तुलसी' अब तो तारो ॥ ५ ॥

सिद्ध पञ्चक

(लय—आये आयेजी बदरवा)

देवो देवोजी डगर जो सिद्धि नगर पहुंचावै।
भवि पलक-पलक थांरो अपलक ध्यान लगावै॥

[ध्रुव पद]

किण मारग स्यूँ श्री जिनवरजी, शिवपुर धाम सिधावै ?
सर्वदर्शी, सर्वज्ञ, स्वभावे, आतम सुख अपणावै॥ १ ॥

अक्षय अरुज अनन्त अचल अज, अव्याबाध कहावै।
अजरामर-पद अनुपम सम्पद, आवागमन मिटावै॥ २ ॥

निकट अलोक प्रदेश अनन्ता, क्यूं हतभाग रहावै ?
पैंतालीस लाख योजन में, क्यूँ कर सकल समावै॥ ३ ॥

साक्षात्कार हुवै यदि साहिब, दया-दृष्टि दिखलावै।
वीर पुत्र जो 'भील-पुत्र' ज्यूं, नहिं घबराट मचावै॥ ४ ॥

ज्योतिर्मय सच्चिदानन्द पद, प्रणम्यॉं पाप पलावै।
तन्मय तन मन हुलसी 'तुलसी' सिद्ध स्तवन सुणावै॥ ५ ॥

आचार्य पञ्चक

(लय—पानी में मीन पियासी)

धर्माचारज अब तारो, प्रभु लीन्हों शरण तुम्हारो । ध० ।
कुछ करुणा-दृष्टि निहारो, धर्माचारज अब तारो ॥
[ध्रुव पद]

भव-सागर है अथग अमित जल, नहिं कहिं निजर किनारो ।
काल अनन्तो बीत्यो भमताँ, भगवन् अबै उबारो ॥ १ ॥

सास्रव आतम नाव पुराणी, पल-पल जल पैसारो ।
डगमग-डगमग डोल रही है, नहिं कोई खेवण हारो ॥ २ ॥

डगर - डगर में मगर भयङ्कर, पग-पग पर डर बाँ रो ।
तरुण तूफान उठै हड़बड़कै, धड़कै दिल दुनियाँ रो ॥ ३ ॥

भटक रह्यो मन भँवर-भँवर में, माँझी बण मतवारो ।
आप बिना इण विषम समय में, गुरुवर ! कवण सहारो ॥ ४ ॥

प्रतिनिधि आप प्रथम पद रा हो, सबल शक्ति संचारो ।
करुण पुकार सुणो भगताँ री 'तुलसी' पार उतारो ॥ ५ ॥

उपाध्याय पञ्चक

(लय—नाथ कैसे कर्मको फन्द छुड़ायो)

भविक उपाध्यायजी नें नित ध्यावो ।
निज जीवन ध्येय बणावो ॥
[ध्रुव पद]

परमेष्ठी पंचक में न्यांरो, चौथो पद है चावो ।
'णमो उवज्झायणं सुजनां, सुमर-सुमर सुख पावो ॥ १ ॥

सूत्र, अर्थ, तदुभय आगम रो, गहन ज्ञान यदि चाहवो ।
तो तुम उपाध्यायजी रै चरणाँ, बलि-बलि भक्ति बढ़ावो ॥ २ ॥

पंच महाव्रत पंचाचार निपुण गुण-गरिमा गावो ।
आचारज री भुजा दाहिणी, सुधिजन शीश झुकावो ॥ ३ ॥

शान्त, दान्त उपशान्त, गुणागर, शासणदेव दृढ़ावो ।
अमृत-वागर, ज्ञान-उजागर, कर-कर विनय रिझावो ॥ ४ ॥

परम प्रभात समय हो सम्मुख, मंगल-गान सुणावो ।
'तुलसी' विमल भावनाँ स्यूँ भज, करमाँ री कौड़ खपावो ॥ ५ ॥

साधु पञ्चक

(लय—असल दुपट्टो फूल रे गुलाबी)

दोन्यूं हाथ जोड़ कर करो, साधुजी रै चरणाँ में परणाम ।
चरणाँ में परणाम रें सुजन जन, करतां पाप पलावै ।
पावै अजरामर शिव-धाम ।। दो० ।।
[ध्रुव पद]

आत्म-साधना करै रे निरन्तर, वै साधु कहिवावै ।
भावै विमल भाव अविराम ।। १ ।।

पंच महाव्रत करण जोग जुत, आजीवन सुध पालै ।
भालै शिव-मग आठूं याम ।। २ ।।

निज जीवन-धनगुरु-अनुशासन, शीश चढ़ाता विचरै ।
करणी करै सदा निष्काम ।। ३ ।।

पर उपकार परायण पल-पल, भल उपदेश सुणावै ।।
ध्यावै भविजन ज्यांरो नाम ।। ४ ।।

अप्रतिबन्ध - विहारी भारी, निज, पर आतम तारै ।
सारै 'तुलसी' बंछित काम ।। ५ ।।

परमेष्ठी सप्तक

(लय—मैं ढूंढ़ फिरी जग सारा)

परमेष्ठी पंच सुप्यारा, जीवन-धन प्राण सहारा।
आध्यात्मिक जगत उजारा, परमेष्ठी पंच सुप्यारा॥
[ध्रुव पद]

अरिहन्त प्रथम लहै ख्याति, संहार च्यार घनघाती।
द्वादश गुण है संघाती, शिव-पंथ बतावणहारा॥ १॥

है सिद्ध, सिद्ध-शिल वासी, अज अजरामर अविनाशी।
क्षय अखिल कर्म री राशी, वास्तव वसु गुण वसनारा॥ २॥

धर्माचारज धृति - धारी, निष्कारण पर-उपकारी।
लाखाँ री नैया तारी, छव युक्त तीस गुणवारा॥ ३॥

है उपाध्याय अधिकारी, गणिपिटका रा भण्डारी।
गणना पच्चीस गुणाँ री, जिन-शासन गगन सितारा॥ ४॥

महाव्रत धर मुनि वड़भागी, कान्ता कांचन रा त्यागी।
गुण सप्तवीस वैरागी, गुरु अनुशासन में सारा॥ ५॥

सहु निर्विकार निर्मोही, तजि आस्रव आतम-विसोही।
जड़ स्यूँ जग-जडता खोई, गूँजै पग-पग जय नारा॥ ६॥

संवत् एके सुविलासै, निज जन्म-भूमि सुख वासै।
'तुलसी गणि' स्वमुख प्रकाशै, गुण पांच पदाँ रा सारा॥ ७॥

अरिहन्त पञ्चक

(लय—पर घर लाज न मारो)

मोहि स्वाम सम्भारो, मोहि स्वाम ।
स्वाम सम्भारो नाथ सम्भारो, मैं शरणागत थांरो ।
भगवन्! मति रे विसारो, मोहि स्वाम सम्भारो ॥
[ध्रुव पद]

पल २ छिन २ घड़ी २ निश-दिन, ध्याऊँ ध्यान तुम्हारो ।
सर्वदर्शी समदर्शी तुम हो, आन्तर भाव निहारो ॥ १ ॥

तीन तत्व और पाँच पदाँ में, प्रमुख स्थान स्वीकारो ।
और देव देवाधिदेव प्रभु, अनन्त चतुष्टय धारो ॥ २ ॥

बिहरमाण तुम वीस निरन्तर, लेखो उत्कृष्टाँ रो ।
इक सौ सित्तर एक समय में, भाग बड़ो दुनियाँ रो ॥ ३ ॥

सहज रूप कर करुणा, शरणागत रा कारज सारो ।
भव-सागर में नैया म्हारी, अब तो पार उतारो ॥ ४ ॥

मन-मन्दिर में सदा विराजित, ल्यो प्रभु-पूजन म्हांरो ।
'तुलसी' तुम चरणाम्बुज-लोलुप, भ्रमर-भाव बहनारो ॥ ५ ॥

चतुर्विंशति जिन स्तवन

रचयिता—श्री मज्जयाचार्यजी

दोहा

ॐ नमः अरिहन्त अतनु, आचार्य उवज्झाय ।
मुनि पंच परमेष्ठि ए, ॐकार रै मांहि ॥ १ ॥

वलि प्रणमुं गुणवन्त गुरु, भिक्षु भरत मझार ।
दान दया न्याय छाण नें, लीधो मारग सार ॥ २ ॥

भारीमाल पट झलकता, तीजै पट ऋषिराय ।
प्रणमुं मन वच काय करी, पांचूं अंग नमाय ॥ ३ ॥

(इम) सिद्ध साधु प्रणमी करी, ऋषभादिक चौबीस ।
स्तवन करूं प्रमोद करी, जय जश कर जगदीश ॥ ४ ॥

मल्लि नेम ए दोय जिन, पाणि ग्रहण न कीध ।
शेष बावीस जिनेश्वरू, रमण छांड़ व्रत लीध ॥ ५ ॥

वासुपूज्य मल्लि नेम जिन, पारस अनें वर्द्धमान ।
कुमर पदै अरू प्रथम वय, धार्‍यो चरण निधान ॥ ६ ॥

छत्रपति उगणीस जिन, व्रत तीजी वय सार ।
उत्कृष्ट आयु जिह समय, तसु त्रिण भाग विचार ॥ ७ ॥

वीर समय उत्कृष्ट स्थिति, वर्ष सवा सय होय।
भाग तीन कीजै तसु, ए तीनूं वय जोय ॥ ८ ॥

इम सगलै उत्कृष्ट स्थिति, त्रिण भागे वय तीन।
अंतिम वय उगणीस जिन, धुर वय पंच सुचीन ॥ ९ ॥

श्वेत वरण चंद सुविधि जिन, पद्म वासुपूज्य लाल।
मुनि सुव्रत रिठनेम प्रभु, कृष्ण वरण सुविशाल ॥ १० ॥

मल्लिनाथ फुन पार्श्व प्रभु, नील वरण वर अङ्ग।
षोड़श शेष जिनेश तनु, सोवन वरण सुचङ्ग ॥ ११ ॥

श्रेयांस मल्लि मुनिसुव्रत जिन, नेम पार्श्व जगदीश।
प्रथम पहर दीक्षा ग्रही, पिछलै पोहर अन्नीस ॥ १२ ॥

सुमति जीम दीक्षा ग्रही, अठम भक्त मल्लि पास।
छठ भक्त जिन वीस वर, वासुपूज्य उपवास ॥ १३ ॥

ऋषभ अष्टापद शिवगमन, वीर पावापुरी दीस।
नेम गिरनारे वासु चम्पा, शिखर सम्मेत सु वीस ॥ १४ ॥

ऋषभ संथारै शिव गमन, चउदश भक्त उदार।
चरम छठ्ठ अणशण पवर, बावीस मास संथार ॥ १५ ॥

ऋषभ वीर अरु नेम जिन, पल्यंक आसण शिव पेख।
शेष इकवीस जिनेश्वरु, काउसग मुद्रा देख ॥ १६ ॥

जिन चौवीस तण सुगुण, रचियै वचन रसाल।
ध्यान सुधा वर सार रस, जय जश करण विशाल ॥ १७ ॥

प्रथम ऋषभ जिन स्तवन

(लय—ऐसे गुरु किम पाविये)

वन्दुं वेकर जोड़ नें, जुग आदि जिनेन्दा ।
कर्म - रिपु गज ऊपरै, मृगराज मुनिन्दा ॥
प्रणमूँ प्रथम जिनन्द नें, जय २ जिनचंदा ॥ ए आंकड़ी ॥ १ ॥

अनुकूल प्रतिकूल सम सही, तप विविध तपिन्दा ।
चेतन तनु भिन्न लेखवी, ध्यान शुक्ल ध्यावंदा ॥ २ ॥

पुद्गल सुख अरि पेखिया, दुःख हेतु भयाला ।
विरक्त चित्त विगट्यो इसो, जाण्या प्रत्यक्ष जाला ॥ ३ ॥

संवेग सरवर झूलताँ, उपशम रस लीना ।
निन्दा स्तुति सुख दुःखे, सम भाव सुचीना ॥ ४ ॥

वांसी चन्दन सम पणें, थिर चित जिन ध्याया ।
इम तन सार तजी करी, प्रभु केवल पाया ॥ ५ ॥

हूँ बलिहारी ताँहरी, वाह ! वाह !! जिन राया ।
इवा दशा किण दिन आवसी, मुझ मन उमाया ॥ ६ ॥

उगणीसै सुदि भाद्रवे, दशमी दीतवारं ।
ऋषभदेव स्तवे करी, हुवो हर्ष अपारं ॥ ७ ॥

श्री अजित जिन स्तवन

(लय—अहो प्रिय तुम वट पाडी)

अहो प्रभु अजित जिनेश्वर आपरो, ध्याऊँ ध्यान हमेश हो ।
अहो प्रभु अशरण शरण तूँही सही, मेटण सकल कलेश हो ॥
अहो प्रभु तुम ही दायक शिव-पंथ ना ॥१॥

अहो प्रभु उपशम रस भरी आपरी, वाणी सरस विशाल हो ।
अहो प्रभु मुगत निसरणी महा मनोहरु,
सुण्याँ मिटै भ्रम जाल हो ॥२॥

अहो प्रभु उभय बन्धण आप आखिया, राग-द्वेष विकराल हो ।
अहो प्रभु हेतु ए नरक निगोद ना, राच्या मूरख बाल हो ॥३॥

अहो प्रभु रमणी राक्षसणी समी कही, विष-वेली मोह जाल हो ।
अहो प्रभु काम नें भोग किम्पाक-सा, दाख्या दीनदयाल हो ॥४॥

अहो प्रभु विविध उपदेश देई करी, तें तार्या नर नार हो ।
अहो प्रभु भव-सिन्धु पोत तूँ ही सही, तूँ ही जगत आधार हो ॥५॥

अहो प्रभु शरण आयो तुझ साहिवा, बस रह्या हीया मांय हो ।
अहो प्रभु आगम-वयण अङ्गी करी, रह्यो ध्यान तुझ ध्याय हो ॥६॥

अहो प्रभु सम्वत् उगणीसै नें भाद्रवै, दशमी आदित्यवार हो ।
अहो प्रभु आप तणा गुण गाविया, बर्त्या जय जयकार हो ॥७॥

श्री सम्भव जिन स्तवन

(लय—हूं वलिहारी हो जादवाँ)

सम्भव साहिब समरिये, धास्यो हो जिण निर्मल ध्यानकै ।
इक पुद्गल दृष्टि थाप नें, कीधो हे मन मेरु समानकै ॥
सम्भव साहिब समरिये ॥ १ ॥ ए आंकड़ी ॥

तन चञ्चलता मेट नें, हुवा हे जग थी उदासीनकै ।
धर्म शुक्ल थिर चित्त धरै, उपशम रस में होय रह्या लीनकै ॥
सम्भव साहिब समरिये ॥ २ ॥

सुख इन्द्रादिक नाँ सहु, जाण्या हे प्रभु अनित्य आसारकै ।
भोग भयंकर कटुक फल, देख्या हे दुर्गति दातारकै ॥
सम्भव साहिब समरिये ॥ ३ ॥

सुधा संवेग रसे भस्या, पेख्या हे पुद्गल मोह पाशकै ।
अरुचि अनादर आण नें, आतम ध्यानें करता विलासकै ॥
सम्भव साहिब समरिये ॥ ४ ॥

सङ्ग छाँड़ मन वश करी, इन्द्रिय दमन करी दुर्दन्तकै ।
विविध तपे करी स्वामजी, घातीकर्म नो कीधो अन्तकै ॥
सम्भव साहिब समरिये ॥ ५ ॥

हूँ तुझ शरणे आवियो, कर्म विदारन तूं प्रभु वीरकै ।
तैं तन मन वच वश किया, दुःकर करणी करण महाधीरकै ॥
सम्भव साहिब समरिये ॥ ६ ॥

सम्वत् उगणीसै भाद्रवै, सुदि इग्यारस आण विनोदकै ।
सम्भव साहिब समरिया, पाम्यो हे मन अधिक प्रमोदकै ॥
सम्भव साहिब समरिये ॥ ७ ॥

श्री अभिनन्दन जिन स्तवन

(लय—सती कलूजी हो हुवा संजम नै त्यार)

तीर्थङ्कर हो चोथा जग भाण, छांडि गृहवास करी मति निरमली ।
विषय विटम्बण हो तजिया विष - फल जाण ।
अभिनन्दन वान्दूं नित्य मनरली ॥ ए आंकड़ी ॥ १ ॥

दुःकर करणी हो कीधी आप दयाल,
ध्यान सुधारस सम दम मन गली ।
संग त्यागो हो जाणी माया जाल ॥ २ ॥

वीर रसे करी हो कीधी तपस्या विशाल,
अनित्य अशरण भावन अशुभ निरदली ।
जग भूठो हो जाण्यो आप कृपाल ॥ ३ ॥

आत्म मन्त्री हो सुख दाता सम परिणाम,
एहिज अमित्र अशुभ भावे कलकली ।
एहवी भावन हो भाया जिन गुण धाम ॥ ४ ॥

लीन संवेगे हो ध्याया शुक्ल ध्यान,
क्षायक श्रेणी चढ़ी हुवा केवली ।
प्रभु पाम्या हो निरावरण सुज्ञान ॥ ५ ॥

उपशम रस भरी हो वागरी प्रभु वाण
तन मन प्रेम पाया जन सांभली ।
तुम वच धारी हो पाम्या परम कल्याण ॥ ६ ॥

जिन अभिनन्दन हो गाया तन मन प्यार,
संवत् उगणीसै नें भाद्रवे अघदली ।
सुदी इग्यारस हो हुवो हर्ष अपार ॥ ७ ॥

श्री सुमति जिन स्तवन

(लय—मूरख जीवड़ा रे गाफल मत रहे)

सुमति जिनेश्वर साहेब शोभता, सुमति करण संसार ।
सुमति जप्यां थी सुमति वधै घणी, सुमति सुमति-दातार ॥
सुमति जिनेश्वर साहेब शोभता ॥ ए आंकड़ी ॥ १ ॥

ध्यान सुधारस निर्मल ध्याय नें, पाम्या केवल नाण ।
वाण सरस वर जन बहु तारिया, तिमिर हरण जग भाण ॥
सुमति जिनेश्वर साहेब शोभता ॥ २ ॥

फटिक सिंहासण जिनजी फावता, तरु अशोक उदार ।
छत्र चामर भामण्डल झलकतो, सुर दुन्दुभि झिणकार ॥
सुमति जिनेश्वर साहेब शोभता ॥ ३ ॥

पुष्प वृष्टि वर सुर ध्वनि दीपती, साहिब जग शिणगार ।
अनन्त ज्ञान दर्शन सुख बल घणुं, ए द्वादश गुण श्रीकार ॥
सुमति जिनेश्वर साहेब शोभता ॥ ४ ॥

वाणी अमी सम उपशम रस भरी, दुर्गती मूल कषाय ।
शिव सुखना अरि शब्दादिक कह्या, जग तारक जिनराय ॥
सुमति जिनेश्वर साहेब शोभता ॥ ५ ॥

अन्तरजामी रे शरणै आप रै, हूँ आयो अवधार।
जाप तुमारो रे निश दिन संभरूँ, शरणागत सुखकार॥
सुमति जिनेश्वर साहेब शोभता॥ ६॥

सम्वत् उगणीसै रे सुदि पक्ष भाद्रवै, बारस मङ्गलवार।
सुमति जिनेश्वर तन मन स्यूं रट्या, आनन्द उपनो अपार॥
सुमति जिनेश्वर साहेब शोभता॥ ७॥

पद्म जिन स्तवन

(लय—जिन्दवेरी देशी छै सुण भगते भगवन्त के)

निर्लेप पद्म जिसा प्रभु, पद्म प्रभु पिछाण २। संयम लीधो तिण समै,
पाया चौथो नाण पद्म प्रभु नित्य समरिये॥ ए आंकड़ी॥ १॥

ध्यान शुक्ल प्रभु ध्याय नें, पाया केवल सोय २।
दीनदयाल तणी दिशा, कहणी नावै कोय॥
पद्म प्रभु नित्य समरिये॥ २॥

सम दम उपशम रस भरी, प्रभु आपरी वाण २।
त्रिभुवन तिलक तूं ही सही, तूँ ही जनक समान॥
पद्म प्रभु नित्य समरिये॥ ३॥

तूं प्रभु कल्प-तरु समो, तूँ चिन्तामणि जोय २।
समरण करताँ आपरो, मन बंछित होय॥
पद्म प्रभु नित्य समरिये॥ ४॥

सुखदायक सहु जग भणी, तूँ ही दीन दयाल २।
शरणे आयो तुझ साहिबा, तूँ ही परम कृपाल॥
पद्म प्रभु नित्य समरिये॥ ५॥

गुण गाताँ मन गहगहे, सुख सम्पत्ति जाण २।
विघ्न मिटै स्मरण कियाँ, पामै परम कल्याण॥
पद्म प्रभु नित्य समरिये॥ ६॥

सम्वत् उगणीसै नें भाद्रवै, सुदि बारस देख।
पद्म प्रभु रट्या लाडनूं, हुवो हर्ष विशेष॥
पद्म प्रभु नित्य समरिये॥ ७॥

श्री सुपास जिन स्तवन

(लय—कृपण दीन अनाथ ए)

सुपास सातमाँ जिणन्द ए, ज्यांने सेवै सुर नर वृन्द ए।
सेवक पूरण आश ए, भजिये नित्य स्वामि सुपास ए॥ आंकड़ी॥१॥

जन प्रतिबोधण काम ए, प्रभु वागरै वाण अमाम ए।
संसार स्यूं हुवै उदास ए, भजिए नित्य स्वामि सुपास ए॥२॥

पामै काम भोग थी उद्वेग ए, वलि उपजै परम संवेग ए।
एहवा तुम वच सरस विलास ए, भजिए नित्य स्वामी सुपास ए॥३॥

घणी मिठी चक्री नी खीर ए, वलि खीर समुद्र नो नीर ए।
एह थी तुम वच अधिक विमास ए, भजिये नित्य स्वामि सुपास ए॥४॥

सांभल नें जन वृन्द ए, रोम रोम में पामें आनन्द ए।
ज्यांरी मिटै नरकादिक त्रास ए, भजिए नित्य स्वामि सुपास ए॥५॥

अन्तरजामी रे शरणै आप रै, हूँ आयो अवधार।
जाप तुमारो रे निश दिन संभरूँ, शरणागत सुखकार॥
सुमति जिनेश्वर साहेब शोभता॥ ६॥
सम्वत् उगणीसै रे सुदि पक्ष भाद्रवै, बारस मङ्गलवार।
सुमति जिनेश्वर तन मन स्यूं रम्या, आनन्द उपनो अपार॥
सुमति जिनेश्वर साहेब शोभता॥ ७॥

पद्म जिन स्तवन

(लय—जिन्दवेरी देशी छै सुण भगते भगवन्त के)

निर्लेप पद्म जिसा प्रभु, पद्म प्रभु पिछाण २। संयम लीधो तिण समै,
पाया चौथो नाण पद्म प्रभु नित्य समरिये॥ ए आंकड़ी॥ १॥
ध्यान शुक्ल प्रभु ध्याय नें, पाया केवल सोय २।
दीनदयाल तणी दिशा, कहणी नावै कोय॥
पद्म प्रभु नित्य समरिये॥ २॥
सम दम उपशम रस भरी, प्रभु आपरी वाण २।
त्रिभुवन तिलक तूं ही सही, तूँ ही जनक समान॥
पद्म प्रभु नित्य समरिये॥ ३॥
तूं प्रभु कल्प-तरु समो, तूँ चिन्तामणि जोय २।
समरण करताँ आपरो, मन बंछित होय॥
पद्म प्रभु नित्य समरिये॥ ४॥
सुखदायक सहु जग भणी, तूँ ही दीन दयाल २।
शरणे आयो तुझ साहिबा, तूँ ही परम कृपाल॥
पद्म प्रभु नित्य समरिये॥ ५॥

गुण गाताँ मन गहगहे, सुख सम्पत्ति जाण २ ।
विघ्न मिटै स्मरण कियाँ, पामै परम कल्याण ।।
पद्म प्रभु नित्य समरिये ।। ६ ।।

सम्वत् उगणीसै नें भाद्रवै, सुदि बारस देख ।
पद्म प्रभु रट्या लाडनूं, हुवो हर्ष विशेष ।।
पद्म प्रभु नित्य समरिये ।। ७ ।।

श्री सुपास जिन स्तवन

(लय—कृपण दीन अनाथ ए)

सुपास सातमाँ जिणन्द ए, ज्यांने सेवै सुर नर वृन्द ए ।
सेवक पूरण आश ए, भजिये नित्य स्वामि सुपास ए ।। आंकड़ी ।।१।।

जन प्रतिबोधण काम ए, प्रभु बागरै वाण अमाम ए ।
संसार स्यूं हुवै उदास ए, भजिए नित्य स्वामि सुपास ए ।।२।।

पामै काम भोग थी उद्वेग ए, बलि उपजै परम संवेग ए ।
एहवा तुम वच सरस विलास ए, भजिए नित्य स्वामी सुपास ए।।३।।

घणी मिठी चक्री नी खीर ए, बलि खीर समुद्र नो नीर ए ।
एह थी तुम वच अधिक विमास ए, भजिये नित्य स्वामि सुपासए ।।४।।

सांभल नें जन वृन्द ए, रोम रोम में पामें आनन्द ए ।
ज्यांरी मिटै नरकादिक त्रास ए, भजिए नित्य स्वामि सुपास ए ।।५।।

तू प्रभु दीनदयाल ए, तूँ ही अशरण शरण निहाल ए।
हूँ छूँ तुमारो दास ए, भजिए नित्य स्वामि सुपास ए ॥६॥

संवत् उगणीसै सोय ए, भाद्रवा सुदि तेरस जोय ए।
पहुंची मनंनी आशा ए, भजिये नित्य स्वामि सुपास ए ॥७॥

श्री चन्द्रप्रभ जिन स्तवन

(लय—शिवपुर नगर सुहामणो)

हो प्रभु चन्द जिनेश्वर चन्द जिस्या,
वाणी शीतल चन्द - सी न्हाल हो।
प्रभु उपशम रस जन सांभलै,
मिटै कर्म भ्रम मोह जाल हो॥
प्रभु चन्द जिनेश्वर चन्द जिस्या॥ ए आं०॥१॥

हो प्रभु सूरत मुद्रा सोहनी,
वारु रूप अनूप विशाल हो।
प्रभु इन्द्र शची जिन निरखती,
ते तो तृप्त न होवे निहाल हो। प्र० ॥ २ ॥

अहो वीतराग प्रभु तूं सही,
तुम ध्यान ध्यावै चित्त रोक हो।
प्रभु तुम तुल्य ते हुवै ध्यान स्यूं,
मन पाया परम सन्तोष हो। प्र० ॥ ३ ॥

हो प्रभु लीन पणै तुम ध्यावियाँ,
पामै इन्द्रादिक नी ऋद्धि हो।
बले विविध भोग सुख सम्पदा,
लहे आमोसही आदि लब्धि हो। प्र० ॥ ४ ॥
हो प्रभु नरेन्द्र पद पामै सहि,
चरण सहित ध्यान तन मन हो।
प्रभु अहमिंद्र पद पावै बलि,
कियाँ निश्चल थारो भजन हो। प्र० ॥ ५ ॥
हो प्रभु शरणै आयो तुझ साहिबा,
तुम ध्यान धरूं दिन रैन हो।
तुझ मिलवा मुझ मन उमह्यो,
तुम शरणा स्यूं सुख चैन हो। प्र० ॥ ६ ॥
सम्वत् उगणीसै नें भाद्रवै,
सुदि तेरस नें बुधवार हो।
प्रभु चन्द्र जिनेश्वर समरिया,
हुवो आनन्द हर्ष अपार हो। प्र० ॥ ७ ॥

श्री सुविधि जिन स्तवन

(लय—सोही तेरा पंथ पावै हो)

सुविधि करी भजिये सदा, सुविधि जिनेश्वर स्वामी हो।
पुष्पदन्त नाम दूसरो, प्रभु अन्तरजामी हो ॥
सुविधि भजिये शिरनामी हो ॥ ए आं० ॥ १ ॥

श्वेत वरण प्रभु शोभता, वारू वाण अमामी हो ।
उपशाम रस गुण आगली, मेटण भव भव खामी हो ॥ २ ॥

समवसरण विच फाबता, त्रिभुवन तिलक तमामी हो ।
इन्द्र थकी ओपै घणाँ, शिवदायक स्वामी हो ॥ ३ ॥

सुरेन्द्र नरेन्द्र चन्द्र ते, इन्द्राणी अभिरामी हो ।
निरख निरख धापै नहीं, एहवो रूप अमामी हो ॥ ४ ॥

मधु मकरंद तणी परें, सुर नर करत सलामी हो ।
तो पिण राग व्यापै नहीं, जीत्यो मोह हरामी हो ॥ ५ ॥

जे जोधा जग में घणा, सिंघ साथे संग्रामी हो ।
तैं मन इन्द्रिय वश करी, जोड़ी केवल पामी हो ॥ ६ ॥

उगणीसै पुनम भाद्रवी, प्रणमुं शिर नामी हो ।
मन-चिन्तित वस्तु मिलै, रटियाँ जिन स्वामी हो ॥ ७ ॥

श्री शीतल जिन स्तवन

(लय—हूं देवा आई ओलंभड़ो सासुजी)

शीतल जिन शिवदायका, साहेबजी ।
शीतल चन्द समान हो, निस्नेही ॥
शीतल अमृत सारिखा, साहेबजी ।
तप्त मिटै तुम ध्यान हो, निस्नेही ॥
सूरत थाँरी मन बसी, साहेबजी ॥ १ ॥

वंदै निंदै तो भणी, साहेबजी ।
राग द्वेष नहीं ताम हो, निस्नेही ॥
मोह दावानल तैं मेटियो, साहेबजी ।
गुणनिष्पन्न तुम नाम हो, निस्नेही ॥
सूरत थांरी मन वसी, साहेबजी ॥ २ ॥
नृत्य करै तुझ आगलै, साहेबजी ।
इन्द्राणी सुरनार हो, निस्नेही ॥
राग भाव नहीं उपजै, साहेबजी ।
ते अंतर तम निवार हो, निस्नेही ॥
सूरत थाँरी मन वसी, साहेबजी ॥ ३ ॥
क्रोध मान माया लोभ ए, साहेबजी ।
अग्नि सूं अधिकी आग हो, निस्नेही ॥
शुक्ल ध्यान रूप जल करी, साहेबजी ।
थया शीतलिभूत महाभाग्य हो, निस्नेही ॥
सूरत थांरी मन वसी, साहेबजी ॥ ४ ॥
इन्द्रिय नोइन्द्रिय आकरा, साहेबजी ।
दुर्जय ने दुर्दान्त हो, निस्नेही ॥
ते जीता मन थिर करी, साहेबजी ।
धरि उपशम चित शांत हो, निस्नेही ॥
सूरत थांरी मनवसी, साहेबजी ॥ ५ ॥
अन्तरजामी आपरो, साहेबजी ।
ध्यान धरूँ दिन रैन हो, निस्नेही ॥

उवाही दिशा कद आवसी, साहेबजी ।
होसी उत्कृष्टो चैन हो, निस्नेही ॥
सूरत थांरी मन वसी, साहेबजी ॥ ६ ॥

उगणीसै पूनम भाद्रवी, साहेबजी ।
शीतल मिलवा काज हो, निस्नेही ॥
शीतल जिनजी नें समरिया, साहेबजी ।
हियो शीतल हुवो आज हो, निस्नेही ॥
सूरत थांरी मन वसी साहेबजी ॥ ७ ॥

श्री श्रेयांस जिन स्तवन

(लय—पुत्र वसुदेवनो)

मोक्षमार्ग श्रेय शोभता, धार्‌या स्वाम श्रेयांस उदार रे ।
जे जे श्रेय वस्तु संसार में, ते ते आप करी अङ्गीकार रे ॥
ते ते आप करी अङ्गीकार, श्रेयांस जिनेश्वरू,
प्रणमूं नित्य बेकर जोड़ रे । ए आं० ॥ १ ॥

समिति गुप्ति दुःधर घणा, धर्म शुक्ल ध्यान उदार रे ।
ए श्रेय वस्तु शिव दायनी, आप आदरी हर्ष अपार रे ॥ २ ॥

तन चंचलता मेट नें, पद्मासन आप विराजे रे ।
उत्कृष्टो ध्यान तणो कियो, आलम्बन श्री जिनराज रे ॥ ३ ॥

इन्द्रिय विषय विकार थी, नरकादिक रुलियो जीव रे ।
किम्पाक फल नी उपमा, रहिये दूर थी दूर सदीव रे ॥ ४ ॥

संयम तप जप शील ए, शिव साधन महा सुखकार रे।
अनित्य अशरण अनंत ए, ध्यायो निर्मल ध्यान उदार रे॥ ५॥
स्त्रियादिक ना सङ्ग ते, आलम्बन दुःख दातार रे।
अशुद्ध आलम्बन छाँड़ ने, धस्यो ध्यान आलम्बन सार रे॥ ६॥
शरणे आयो तुझ साहिबा, करूँ बारम्बार नमस्कार रे
उगणीसै पूनम भाद्रवी, मुझ वर्त्या जय जयकार रे॥ ७॥

श्री वासुपूज्य जिन स्तवन

(लय—इम जाप जपो श्री नवकारं)

द्वादशमा जिनवर भजिये, राग द्वेष मच्छर माया तजिये।
प्रभु लाल वरण तन छिब जाणी, प्रभु वासुपूज्य भजले प्राणी॥१॥
बनिता जाणी वैतरणी, शिव सुन्दर वरवा हूंस घणी।
काम भोग तज्या किम्पाक जाणी, प्रभु वासुपूज्य भजले प्राणी॥२॥
अञ्जन मञ्जन स्यूं अलगा, बलि पुष्प बिलेपन नहीं विलगा।
कर्म काट्या ध्यान मुद्रा ठाणी, प्रभु वासुपूज्य भजले प्राणी॥३॥
इन्द्र थकी अधिका ओपै, करुणागर कदेइ नहीं कोपै।
वर शाकर दूध जिसी वाणी, प्रभु वासुपूज्य भजले प्राणी॥४॥
स्त्री स्नेह पाशा दुर्दन्ता, कह्या नरक निगोद तणा पंथा।
इह भव परभव दुःखदाणी, प्रभु वासुपूज्य भजले प्राणी॥५॥
गजकुम्भ दलै मृगराज हणी, पिण दोहिली निज आत्मा दमणी।
इम सुण बहु जीब चेत्या जाणी, प्रभु वासुपूज्य भजले प्राणी॥६॥

भाद्रवी पूनम उगणीसो, कर जोड़ नमुं वासुपूज्य इसो ।
प्रभु गाताँ रोक राय हुलसाणी, प्रभु वासुपूज्य भजले प्राणी ॥७॥

श्री विमल जिन स्तवन

(लय—कांय न मांगाँ कांय न मांगाँ हो राजाजी मांगाँ पूरण प्रीत वीजूं०)

शरणे तिहारे ३ हो विमल प्रभु, सेवक नी अरदास ।
आयो शरण तिहारे हो ॥

विमल करण प्रभु विमलनाथ जी, विमल आप मल रहित ।
विमल ध्यान धरताँ हुवे निर्मल, तन मन लागी प्रीत ।
साहब शरणे तिहारे हो । ए आं० ॥ १ ॥

विमल ध्यान प्रभु आप ध्याया, तिण सूं हुवा विमल जगदीश ।
विमल ध्यान बलि जे कोई ध्यासी, होसी विमल सरीस ॥ २ ॥

विमल गृहवासे द्रव्य जिनेन्द्र था, दीक्षा लीयाँ भावे साध ।
केवल उपना भावे जिनेश्वर, भावे विमल आराध ॥ ३ ॥

नाम स्थापना द्रव्य विमल थी, कारज न सरै कोय ।
भाव विमल थी कारज सुधरै, भाव जप्याँ शिव होय ॥ ४ ॥

गुण गरीवो गंभीर धीर तूँ, तूँ मेटण जम त्रास ।
मैं तुम वयण आगम शिर धार्या, तूं मुझ पूरण आश ॥ ५ ॥

तूँ ही कृपाल दयाल तूँ साहेब, शिवदायक तूं जगनाथ ।
निश्चल ध्यान करै तुझ ओलख, ते मिले तुझ संघात ॥ ६ ॥

अंतरजामी आप उजागर, मैं तुझ शरणो लीध ।
संवत उगणीसै भाद्रवी पूनम, वंछित कार्य सिद्ध ॥ ७ ॥

श्री अनंत जिन स्तवन

(लय—पायो युवराज पद मुनि)

अनंत नाम जिन चउदमा रे, द्रव्य चौथे गुणठाण भलांजी कांई द्रव्य०
भावे जिन हुवै तेरमें रे, इतले द्रव्य जिन जाण ॥
भळाँजी कांई इतलै द्रव्य जिन जाण, पायो पद जिनराजनु रे।
शुद्ध ध्यान निरमल ध्याय। भलांजी काँई शुभ ध्यान निरमल ध्याय।
पायो पद जिनराजनु रे ॥ १ ॥

जिन चक्री सुर जुगलिया रे, वासुदेव बलदेव। भलाँ० वा०।
ए पञ्चम गुण पावै नहीं रे, ए रीत अनादि स्वमेव ॥ भलाँ ॥ए०॥
पायो पद जिनराजनु रे ॥ २ ॥

संयम लीधो तिण समै रे, आया सातमें गुणठाण। भलाँ० ।आ०।
अंतर मुहूर्त्त तिहाँ रही रे, छठे बहुस्थिति जाण ॥ भलाँ छ० ॥
पायो पद जिनराजनु रे ॥ ३ ॥

आठमाँ थी दोय श्रेणी छै रे, उपशम खपक पिछाण। भलाँ०। उ०।
उपशम जाय इग्यारमें रे, मोह दबावतो जाण ॥ भलाँ० मो०।
पायो पद जिनराजनु रे ॥ ४ ॥

श्रेणी उपशम जिन ना लहै रे, खपक श्रेणी धर खंत। भ० ख०।
चारित्र मोह खपावताँ रे, चढ़िया ध्यान अत्यन्त ॥ भ० च०।
पायो पद जिनराजनु रे ॥ ५ ॥

नवमें आदि संजल चिहुँ रे, अंत समै इक लोभ। भ० अं०।
दशमें सूक्ष्म मात्र ते रे, सागार उपयोग शोभ॥ भ० सा०॥
पायो पद जिनराजनुं रे॥ ६॥

एकादशमो उलंघ नें रे, बारमें मोह खपाय। भ० बा०।
त्रि कर्म एक समै तोड़ता रे, तेरमें केवल पाय॥
पायो पद जिनराजनुं रे॥ ७॥

तीर्थ थाप योग रुंध नें रे, चउदमा थी शिव पाय। भ० च०।
उगणीसै पूनम भाद्रवै रे, अनंत रट्या हरषाय। भ० अ०॥
पायो पद जिनराजनुं रे॥ ८॥

यह स्तवन निम्न रागिनी में भी गाया जाता है

(लय—आज आणन्दा रे)

अनन्त नाम जिन चवदमाँ, जिनराया रे।
द्रव्य चौथे गुण स्थान, स्वाम सुखदाया रे॥
भावे जिन हुवे तेरमें, जिनराया रे।
इतलै द्रव्य जिन जाण, स्वाम सुखदाया रे॥ १॥

श्री धर्म जिन स्तवन

(लय—भिक्षु पट भारीमाल भलकै)

धर्म जिन धर्म तणा धोरी, त्रटक मोह-पाश नाख्या तोड़ी।
चरण धर्म आतम स्यूं जोड़ी, अहो प्रभु धर्म देव प्यारा॥ १॥

शुक्ल ध्यान अमृत रस लीना, संवेग रसे करी जिन भीना ।
प्याला प्रभु उपशम ना पीना, अहो प्रभु धर्मदेव प्यारा ॥ २ ॥
जाण्या शब्दादिक मोह जाला, रमणि सुख किम्पाक सम काला ।
हेतु नरकादिक दुःख आला, अहो प्रभु धर्म देव प्यारा ॥ ३ ॥
पुद्‌गल शिव-अरि जाण्या स्वामी, ध्यान थिर चित्त आतम धामी ।
जोड़ी युग केवल नीं पामी, अहो प्रभु धर्म देव प्यारा ॥ ४ ॥
थाप्या प्रभु च्यार तीरथ तायो, आख्यो धर्म जिन आज्ञा मांयो ।
आज्ञा बाहिर अधर्म दुःखदायो, अहो प्रभु धर्म देव प्यारा ॥ ५ ॥
व्रत धर्म धर्म जिन आख्याता, अविरत कही अधर्म दुखदाता ।
सावद्य निरवद्य जु जुआ कह्या खाता, अहो प्रभु धर्म देव प्यारा॥६॥
बहु जन तार मुक्ति पाया, उगणीसै आसू धुर दिन आया ।
धर्मजिन रटवे सुख पाया, अहो प्रभु धर्म देव प्यारा ॥ ७ ॥

श्री शान्ति जिन स्तवन

(हूं बलिहारी भीखणजी साध री)

शांति करण प्रभु शान्तिनाथजी शिव दायक सुखकन्द की ।
बलिहारी हो शान्ति जिणन्द की ॥ १ ॥
अमृत वाणी सुधा-सी अनुपम, मेटण मिथ्या मन्द की ।
बलिहारी हो शान्ति जिणन्द की ॥ २ ॥
काम भोग राग द्वेष कटुक फल, विष-बेलि मोह धन्द की ।
बलिहारी हो शान्ति जिणन्द की ॥ ३ ॥

राक्षसणी रमणी वैतरणी, पुतली अशुचि दुर्गन्ध की।
बलिहारी हो शान्ति जिणन्द की ॥ ४ ॥
विविध उपदेश देई जन तास्या, हूँ वारी जाऊँ विश्वानंद की।
बलिहारी हो शान्ति जिणन्द की ॥ ५ ॥
परम दयाल गोवाल कृपानिधि, तुझ जप माला आनन्द की।
बलिहारी हो शान्ति जिणन्द की ॥ ६ ॥
सम्वत् उगणीसै आसू वदि एकम, शान्तिलता सुखकंद की।
बलिहारी हो शान्ति जिणन्द की ॥ ७ ॥

श्री कुन्थु जिन स्तवन

(लय—वाल्हो तो भावना रो भूखो)

कुन्थु जिनेश्वर करुणा सागर, त्रिभुवन शिर टीको रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे ॥ १ ॥
अद्भुत रूप अनुपम कुंथु जिन, दर्शन जग पीय को रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे ॥ २ ॥
वाणी सुधा सम उपशम रस नी, वालहो जग त्री को रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे ॥ ३ ॥
अनुकम्पा दोय श्री जिन दाखी, मर्म ओ समदृष्टि को रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे ॥ ४ ॥
असंयती रो जीवणो बांछे, ते सावद्य तहतीको रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे ॥ ५ ॥

निरवद्य करुणा करी जन तास्या, धर्म ए जिनजी को रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे ॥ ६ ॥
संम्वत् उगणीसै आसू बदि एकम, शरणो साहिबजी को रे।
प्रभु को समरण कर नीको रे ॥ ७ ॥

श्री अर जिन स्तवन

(लय—देखो सहियां बनड़ो ए नेमकुमार)

अर जिन कर्म अरी नाँ हन्ता, जगत उद्धारण जहाज।
मोने प्यारा लागै छै जी, अर जिनराज ॥
मोने वाल्हा लागै छै जी अर महाराज ॥ १ ॥
परिषह उपसर्ग रूप अरि हण, पाया केवल पाज।
मोने वाल्हा लागै छै जी अर महाराज ॥ २ ॥
नयन न धापै निरखताँ जी, इन्द्राणी सुर राज।
मोने वाल्हा लागै छै जी अर महाराज ॥ ३ ॥
वारूं रे जिनेश्वर रूप अनुपम, तूं सुगुणा शिरताज।
मोने वाल्हा लागै छै जी अर महाराज ॥ ४ ॥
वाणी विशाल दयाल पुरुष नी, भूख तृषा जावै भाग।
मोने वाल्हा लागै छै जी अर महाराज ॥ ५ ॥
शरणे आयो स्वामरे जी, अविचल सुख नें काज।
मोने वाल्हा लागै छै जी अर महाराज ॥ ६ ॥
उगणीसै आसू बदि एकम, आनन्द उपनो आज।
मोने वाल्हा लागै छै जी अर महाराज ॥

श्री मल्लि जिन स्तवन

(लय—जय गणेश ३ देवा तथा दीन दयाल जाण चरण ।)

नील वर्ण मल्लि जिनेश्वर, ध्यान निर्मल ध्यायो।
अल्प काल मांहि प्रभु, परम ज्ञान पायो॥
मल्लि जिनेश्वर नाम समर, तरण शरण आयो॥ १॥

कल्प पुष्पमाल जेम, सुगन्ध तन सुहायो।
सुर वधु वर नयन भ्रमर, अधिक हि लिपटायो॥
मल्लि जिनेश्वर नाम समर, तरण शरण आयो॥ २॥

स्व पर चक्र विविध विघ्न, मिटत तुझ पसायो।
सिंह नाद थकी गजेन्द्र, जेम दूर जायो॥
मल्लि जिनेश्वर नाम समर, तरण शरण आयो॥ ३॥

वाणी विमल निरमल सुधा, रस संवेग छायो।
नर सुरासुर त्रिय समाज, सुनत ही हरषायो॥
मल्लि जिनेश्वर नाम समर, तरण शरण आयो॥ ४॥

जग दयाल तूं ही कृपाल, जनक ज्यूं सुखदायो।
वत्सल नाथ स्वाम साहिब, सुजश तिलक पायो॥
मल्लि जिनेश्वर नाम समर, तरण शरण आयो॥ ५॥

जपत जाप खपत पाप, तपत हि मिटायो।
मल्लि देव त्रिविध सेव, जग अछेरो पायो॥
मल्लि जिनेश्वर नाम समर, तरण शरण आयो॥ ६॥

उगणीसै आसोज तीज, कृष्ण सुदिन आयो ।
कुम्भनन्दन कर आनन्द, हर्ष थी मैं गायो ॥
मल्लि जिनेश्वर नाम समर, तरण शरण आयो ॥ ७ ॥

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन

(लय—भरतजी भूप भया छो वैरागी)

सुमित्र नन्दन श्री मुनिसुव्रत, जगत नाथ जिन जाणी ।
चारित्र लेई केवल उपजायो, उपशम रस नी वाणी रा ॥
प्रभुजी आप प्रबल बड़ भागी ॥
त्रिभुवन दीपक सागी रा, प्रभुजी आप प्रबल बड़ भागी ॥ १ ॥

चौत्रीस अतिशय पैंत्रीस वाणी, निरखत सुर इन्द्राणी ।
संवेग रस नी वाणी सांभल, हर्ष स्यूं आँख्याँ भराणी रा ॥
प्रभुजी आप प्रबल बड़ भागी ॥ २ ॥

शब्द रूप रस गन्ध अनें स्पर्श, प्रतिकूल न हुवै तुम आगै ।
ज्यूं पञ्च दर्शन थां स्यूं पग नहीं माण्डै,
तिम अशुभ शब्दादिक भागै रा ॥
प्रभुजी आप प्रबल बड़ भागी ॥ ३ ॥

सुर-कृत जल स्थल पुष्प पुञ्ज वर, ते छांडी चित दीनो ।
तुझ निश्वास सुगन्ध मुख परिमल, मन भ्रमर महा लीनो रा ॥
प्रभुजी आप प्रबल बड़ भागी ॥ ४ ॥

पंचेन्द्री सुर नर तिरि तुम स्यूँ, किम हुवै दुखदायो ।
एकेन्द्री अनिल तजै प्रतिकूल पणुं, वाजै गमतो वायो रा ॥
प्रभुजी आप प्रबल बड़ भागी ॥ ५ ॥

राग द्वेष दुर्दन्त ते दमिया, जीत्या विषय विकारो ।
दीन दयाल आयो तुझ शरणे, तूँ गति मति दातारो रा ॥
प्रभुजी आप प्रबल बड़ भागी ॥ ६ ॥

सम्वत् उगणीसै आसोज तीज कृष्ण, श्री मुनिसुव्रत गाया ।
लाडनूं शहर मांहि रूड़ी रीते, आनन्द अधिको पाया रा ॥
प्रभुजी आप प्रबल बड़ भागी ॥ ७ ॥

श्री नमि जिन स्तवन

(लय—परम गुरू पूज्यजी मुझ प्यारा रे)

नमिनाथ अनथाँ रा नाथो रे, नित्य नमण करूं जोड़ी हाथो रे ।
कर्म काटण वीर विख्यातो, प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे ॥१॥
प्रभु ध्यान सुधारस ध्याया रे, पद केवल जोड़ी पाया रे ।
गुण उत्तम उत्तम आया, प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे ॥ २ ॥
प्रभु बागरी वाण विशालो रे, खीर समुद्र थी अधिक रसालो रे ।
जगतारक दीन दयालो, प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे ॥ ३ ॥
थाप्या तीरथ च्यार जिणंदो रे, मिथ्या तिमिर हरण नें मुणंदो रे ।
त्यांनें सेवै सुर नर वृन्दो, प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे ॥ ४ ॥

सुर अनुत्तर विमाण ना सेवै रे, प्रश्न पूछ्याँ उत्तर जिन देवै रे।
अवधिज्ञान करी जाण लेवै, प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे ॥ ५ ॥
तिहाँ बैठा ते तुम ध्यान ध्यावै रे, तुम योग मुद्रा चित्त चावै रे।
ते पिण आपरी भावना भावै, प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे ॥६॥
उगणीसै आसोज उदारो रे, कृष्ण चौथ गाया गुण धारो रे।
हुवो आनंद हर्ष अपारो, प्रभु नमिनाथजी मुझ प्यारा रे ॥ ७ ॥

श्री अरिष्ट नेमि जिन स्तवन

(लय—छिणगई रे)

प्रभु नेमिस्वामी, तूं जगन्नाथ अंतरजामी ॥ ए० आंकड़ी ॥
तूं तोरण स्यूं फिर्‌यो जिन स्वाम, अद्भुत बात करी तैं अमाम ॥
प्रभु नेमि स्वामी० ॥ १ ॥
राजिमति छांड़ी जिनराय, शिव सुन्दर स्यूं प्रीत लगाय ॥ २ ॥
केवल पाया ध्यान वर ध्याय, इन्द्र शची निरखै हर्षाय ॥ ३ ॥
नेरिया पिण पामें मन मोद, तुझ कल्याण सुर करत विनोद ॥ ४ ॥
राग रहित शिव सुख स्यूं प्रीत, कर्म हणै बलि द्वेष रहित ॥ ५ ॥
अचरिज कारी प्रभु थारो चरित्र, हूं प्रणमुं कर जोड़ी नित्य ॥ ६ ॥
उगणीसै वदि चौथ कुंआर, नेमि जप्याँ पायो सुखसार ॥ ७ ॥

श्री पार्श्व जिन स्तवन

(लय—पूज्य भीखणजी तुमारा दर्शन)

लोह कंचन करै पारस काचो, ते कहो कर कुण लेवै हो ।
पारस तूं प्रभु साचो पारस, आप समो कर देवै हो ॥
पारसदेव तुमारा दर्शन भाग भला सोई पावै हो ॥ १ ॥

तुझ मुख-कमल पासे चमरावलि, चंद्र-कान्ति वत् सोहै हो ।
हंस श्रेणि जाणै पंकज सेवै, देखत जन मन मोहै हो ॥
पारस देव तुमारा दर्शन० ॥ २ ॥

फटिक सिंहासण सिंह आकारे, बैठ देशना देवै हो ।
वन-मृग आवै वाणी सुणवा, जाणके सिंह नें सेवै हो ॥
पारस देव तुमारा दर्शन० ॥ ३ ॥

चंद समो तुझ सुख महा शीतल, नयन चकोर हर्षावै हो ।
इन्द्र नरेन्द्र सुरासुर रमणी, निरखत तृपति न पावै हो ॥
पारस देव तुमारा दर्शन० ॥ ४ ॥

पाखंडी सरागी आप निरागी, आपस में इम गैरी हो ।
बैर भाव पाखंडी राखै, पिण आप त्यांरा नहीं वैरी हो ॥
पारस देव तुमारा दर्शन० ॥ ५ ॥

जिम सूर्य खद्योत ऊपरै, बैरभाव नहीं आणै हो ।
प्रभु पिण इण विधि पाखंडियाँ नें, खद्योत सरीखा जाणै हो ॥
पारस देव तुमारा दर्शन० ॥ ६ ॥

परम दयाल कृपाल पारस प्रभु, संवत् उगणीसै गाया हो ।
आसोज कृष्ण तिथि चौथ लाडनूं, आनंद अधिको पाया हो ॥
पारस देव तुमारा दर्शन० ॥ ७ ॥

श्री महावीर जिन स्तवन

(लय—कपिरे प्रिया संदेशो कहै)

चरम जिनेंद्र चौवीसमा जिन, अघ हणवा महावीर ।
विकट तप बर ध्यान कर प्रभु, पाया भव जल तीर ॥
नहीं इसो दूसरो जग वीर ॥
उपसर्ग सहिबा अडिग जिनवर, सुर गिर जेम सधीर ।
नहीं इसो दूसरो जग वीर ॥ १ ॥

संगम दुःख दिया आकरा रे, पिण सुप्रसन्न निजर दयाल ।
जग उद्धार हुवै मो थकी रे, ए डूबै इण काल ॥
नहीं इसो दूसरो जग वीर ॥ २ ॥

लोक अनार्य बहु किया रे, उपसर्ग विविध प्रकार ।
ध्यान सुधारस लीनता जिन, मन में हर्ष अपार ॥
नहीं इसो दूसरो जग वीर ॥ ३ ॥

इण पर कर्म खपाय नें प्रभु, पाया केवल नाण ।
उपशम रसमय वागरी प्रभु, अधिक अनुपम वाण ॥
नहीं इसो दूसरो जग वीर ॥ ४ ॥

पुद्‌गल सुख अरि शिव तणा रे, नरक तणा दातार ।
छाँड़ि रमणी किम्पाक वेलि, संवेग संयम धार ॥
नहीं इसो दूसरो जग वीर ॥ ५ ॥

निंदा स्तुति सम पणै रे, मान अनें अपमान ।
हर्ष शोक मोह परिहस्याँ रे, पामै पद निर्वाण ॥
नहीं इसो दूसरो जग वीर ॥ ६ ॥

इम बहुजन प्रभु तारिया रे, प्रणमुं चरण जिनेन्द्र ।
उगणीसै आसोज चौथ बदि, हुवो अधिक आनंद ॥
नहीं इसो दूसरो जग वीर ॥ ७ ॥
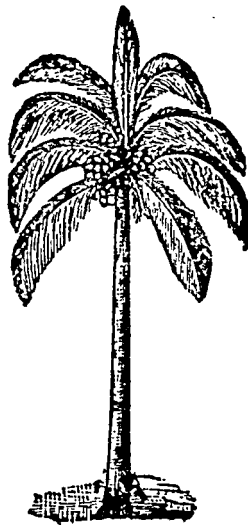
श्री पार्श्व जिन स्तवन

(लय—अफसाना०)

प्रभु पार्श्वदेव चरणों में, शत शत प्रणाम हो।
मेरे मानस के स्वामी, तुम एक धाम हो॥
[ध्रुव पद]

दुनियाँ में देव लाखों, पग-पग पूजा रहे २।
पर इस रसना में रोशन, इक तेरा नाम हो॥
प्रभु पार्श्वदेव चरणों में० ॥ १ ॥

तुम से न राग रति भर, नहिं द्वेष औरों से २।
यह वीतरागता तेरी, मेरा विश्राम हो॥
प्रभु पार्श्वदेव चरणों में० ॥ २ ॥

कैसे बनूँ मैं उऋण, उपकार से अहो २।
चरणों में चहे पन्हैया, यह मेरी चाम हो॥
प्रभु पार्श्वदेव चरणों में० ॥ ३ ॥

पाकर भी पार्श्व-मणि वह, हत भाग्य जो रहे २।
अब सच्चा पार्श्व बनूँ मैं, बस ऐसा काम हो॥
प्रभु पार्श्वदेव चरणों में० ॥ ४ ॥

नस-नस में बस रहे हो, रस ज्यों कवित्व में २।
भगवान भक्त 'तुलसी' के तुम ही राम हो॥
प्रभु पार्श्वदेव चरणो में० ॥ ५ ॥

जय महावीर प्रभो

(लय—ॐ जय जगदीश हरे)

ॐ जय महावीर प्रभो ।
जय महावीर प्रभो, अयि जय रणधीर प्रभो ।
जय वर गुण हीर प्रभो ।
शरणागत जन दायक, श०, भव जल तीर प्रभो । ॐ० ।
[ध्रुव पद]

धर्म अहिंसा पालक, सञ्चालक स्वामी । अ० । सं० । प्र० ।
हिंस्र जनों पर सींचा हिं०, करुणा-नीर प्रभो ।। १ ।।
सुर नर तिर्यंचों के, अगणित कष्ट सहे । अ० । अ० । प्र० ।
संगम-से अधमों ने, सं०, की तनु पीर प्रभो ।। २ ।।
मांस अशन कर पीया, कौशिक ने लोही ।अ०। कौ०। प्र० ।
गोपालक ने पग पर, गो०, रांधी खीर प्रभो ।। ३ ।।
(तुम) निर्मल भावन भाकर, उपशम रस रंगे ।अ०।उ०। प्र० ।
राग द्वेष मिटाया, रा०, अघ-दल चीर प्रभो ।। ४ ।।
इस अशान्त जगती को, शान्ति देनहारी ।अ०।शा०। प्र० ।
एक तुम्हारी वाणी, ए०, अमृत-सीर प्रभो ।। ५ ।।
तुम शासन-चिन्तामणि, मेरे हाथ चढ़ा । अ० । मे० । प्र० ।
इस कलियुग में खुल गये, इ०, मम तकदीर प्रभो ।। ६ ।।
सत्य शिवंकर सुखकर, तुम शरणे आया । अ० । तु० । प्र० ।
शिशु 'सोहन' की भंजो, शि०, भव-भव भीर प्रभो० ।। ७ ।।

श्री वीर प्रार्थना

(लय—जिन धर्म का डंका भारत में बजवा दिया भिक्षु स्वामी नें)

महावीर प्रभु के चरणों में, श्रद्धा के सुम चढ़ायें हम।
उनके आदर्शों को अपना, जीवन की ज्योति जगायें हम॥
[ध्रुव पद]

तप संयम मय शुभ साधन से, आराध्य-चरण आराधन से।
बन मुक्त विकारों से सहसा, अब आत्म विजय कर पायें हम॥
महावीर प्रभु के चरणों में० ॥ १ ॥

दृढ़ निष्ठा नियम निभाने में, हो प्राण बली प्रण पाने में।
मजबूत मनोबल हो ऐसा, कायरता कभी न लायें हम॥
महावीर प्रभु के चरणों में० ॥ २ ॥

यश लोलुपता, पद-लोलुपता, न सताये कभी विकार व्यथा।
निष्काम स्व-पर कल्याण काम, जीवन अर्पण कर पायें हम॥
महावीर प्रभु के चरणों में० ॥ ३ ॥

गुरुदेव शरण में लीन रहें, निर्भीक धर्म की बाट वहें।
अविचल दिल सत्य अहिंसा का, दुनियाँ को सुपथ दिखायें हम॥
महावीर प्रभु के चरणों में० ॥ ३ ॥

प्राणी-प्राणी सह मैत्रि सर्जे, ईर्ष्या मत्सर अभिमान तजें।
कहनी करनी इकसार बना, "तुलसी" तेरा पथ पायें हम॥
महावीर प्रभु के चरणों में० ॥ ५ ॥

वीर उपासना

(लय—वगीची निम्बुवां की)

प्रभु को ध्यान धरूँ। करि तन मन की इक तान। प्र०।
लहि समय सबल मध्याह्न। प्रभु को ध्यान धरूँ।
ध्यान धरूँ सब पाप हरूँ, करूँ शान्त सुधारस पान॥
प्रभु को ध्यान धरूँ॥
[ध्रुव पद]

मन-मन्दिर ओ मांहरो, तुम हो प्रतिविम्बित आन। प्र०।
करूँ प्रतिष्ठा प्रेम सूं, प्रभु कर-कर स्वागत गान॥ १॥

प्रति पल बलि पूजन करूँ, सज भक्ति-कुसुम भगवान। प्र०।
अटल उतारूँ आरती, रच दीपक वर विज्ञान॥ २॥

देइ-देइ तीन प्रदक्षिणा, करूँ नमण भाव तज मान। प्र०।
स्तवना तीरथ नाथ की, करूँ करत दुरित घमसान॥ ३॥

चरण-कमल लयलीनता, लहुं भृङ्ग-कुसुम उपमान। प्र०।
समरूँ देव गुणावली, तब भूलूं सारो भान॥ ४॥

इकतारी इक आपकी, रहै जिह्वा तुझ अभिधान। प्र०।
रोम-रोम में तुम रमो, यह 'तुलसी' को आह्वान॥ ५॥

मन-मन्दिर तैयार है

(लय—मानव बोलो, मानवता के)

आओ ! आओ ! प्रभुवर आओ ! मन-मन्दिर तैयार है ।
मन - मन्दिर तैयार, म्हानै थांरो ही आधार है ॥
[ध्रुव पद]

वीतराग, महाभाग त्यागमय, सारो जीवन आप रो,
शब्दाँ स्यूं के वरणन होवै, प्रभु रे पुण्य प्रताप रो ।
सदुपदेश रो प्यासो खासो, रहै सारो संसार है ॥ १ ॥

जनम-जनम री अविकल अविचल सफल करी शुभ साधना,
द्वेष-राग रो क्लेश मिटायो, कर अनुपम आराधना ।
भरया लोक-मानस में, साचा संयम रा संस्कार है ॥ २ ॥

मिटी विषमता जीव मात्र पर समता री धारा बही,
बण्या त्रिलोकीनाथ आथ सारी दुनियाँ री संग्रही ।
ओगुण रह्यो न एक, भरयो सद्गुण रो पारावार है ॥ ३ ॥

तारण-तरण शरण अशरण रा अनुपमेय अज्ञेय हो,
सर्वदर्शी, सर्वज्ञ, सुधामय, श्रेय, ध्येय, श्रद्धेय हो ।
भक्त-हृदय 'तुलसी' रो सारो जीवन ही उपहार है ॥ ४ ॥

भगवत्पादार्पण

(राग—भैरवी)

आज हमारे हृदयाङ्गण में, वीर जिनेन्द्र पधारे हैं।
वीर जिनेन्द्र पधारे हैं, हाँ ज्ञान-प्रदीप जगारे हैं।
[ध्रुव पद]

रत्न त्रयी सञ्चालक पालक, योग क्षेम करनारे हैं।
पावन पुण्य परम पद नेता, जेता विषय विकारे हैं॥ १॥

महमानी करने को हम ने, पथ में नयन बिछारे हैं।
मानस-मन्दिर स्वच्छ बना कर, रुचिकर रुचक बिठारे हैं॥ २॥

कर्म-बीज युग रिपु हैं उनको, अब हम ने ललकारे हैं।
आये स्वामी हमारे घर में, तुम को देश निकारे हैं॥ ३॥

श्वास-श्वास अनुरक्त रहें, बन प्रभु-भक्ति मतवारे हैं।
पुद्गल-सुख आसक्ति मिटाकर, तुम पर प्राण उवारे हैं॥ ४॥

दीनबन्धु अब प्रेम लगाकर, होना नहीं किनारे हैं।
भवसागर में भटकत तुम ही, 'सोहन' के आधारे हैं॥ ५॥

प्रार्थना

(लय—मन्त्र वन्देमातरम्)

हे दयालो देव! तेरी, शरण हम सब आ रहे।
शुद्ध मन से एक तेरा, ध्यान हम सब ध्या रहे॥
[ध्रुव पद]

मोह मद ममता के त्यागी, वीतरागी तुम प्रभो।
हम भी उस पथ के पथिक हों, भावना यही भा रहे॥ १॥

सद्गुरु में हो हमारी, भक्ति सच्चे भाव से।
धर्म रग-रग में रमे, हरदम यही हम चाह रहे॥ २॥

दिल से पापों के प्रति, प्रतिपल हमारी हो घृणा।
प्रेम हो सत्सङ्ग से यह, लालसा दिल ला रहे॥ ३॥

दूसरों की देख बढ़ती, हो न ईर्ष्या लेश भी।
सर्वदा ग्राहक गुणों के, हों हृदय से गा रहे॥ ४॥

त्यागमय जीवन बितावें, शान्तिमय वर्ताव हो।
भाव हो समभाव तेरा—पन्थ जो हम पा रहे॥ ५॥

श्रद्धा-सुमन

लय—देखो वीर जिनेश्वर वन्दन राय उदाई आवै रे)

श्री महावीर चरण में सादर "श्रद्धा-सुमन" सझाऊँ मैं।
हार्दिक भक्ति-सलिल से सींच-सींच कलियाँ विकसाऊँ मैं।
[ध्रुव पद]

ईश्वर अखिलेश्वर, हाँ हाँ ईश्वर० ।
प्रभु परमातम परमेश्वर ।
प्राण-प्रिय जैन जिनेश्वर ।
भास्वर अविनश्वर कहि बतलाऊँ मैं ॥
श्री महावीर चरण में सादर श्रद्धा-सुमन सझाऊँ मैं ॥ १ ॥

नहिं जिन जग कर्ता, हाँ हाँ नहिं० ।
नहिं शङ्कर वत् संहर्ता ।
यद्यपि त्रिभुवन के भर्ता ।
अविकार अमल जस लक्षण गाऊँ मैं ॥
श्री महावीर चरण में सादर श्रद्धा-सुमन सझाऊँ मैं ॥ २ ॥

नहिं घट-घट व्यापी, हाँ हाँ नहिं० ।
यद्यपि घट-घट के ज्ञापी ।
प्रभु ज्ञान पतङ्ग प्रतापी ।
सब पाप काप सुमरत सुख पाऊँ मैं ॥
श्री महावीर चरण में सादर श्रद्धा-सुमन सझाऊँ मैं ॥ ३ ॥

नहिं भगवन् भोगी, हाँ हाँ नहिं० ।
नहिं योगाराधक योगी ।
साकार इतर उपयोगी ।
अवियोगि मिलन हित हृदय लुभाऊँ मैं ॥
श्री महावीर चरण मैं सादर श्रद्धा-सुमन सजाऊँ मैं ॥ ५ ॥

श्रद्धा-सुमन

लय—देखो वीर जिनेश्वर वन्दन राय उदाई आवे रे)

श्री महावीर चरण में सादर "श्रद्धा-सुमन" सझाऊँ मैं।
हार्दिक भक्ति-सलिल से सींच-सींच कलियाँ विकसाऊँ मैं।
[ध्रुव पद]

ईश्वर अखिलेश्वर, हाँ हाँ ईश्वर०।
प्रभु परमातम परमेश्वर।
प्राण-प्रिय जैन जिनेश्वर।
भास्वर अविनश्वर कहि बतलाऊँ मैं॥
श्री महावीर चरण में सादर श्रद्धा-सुमन सझाऊँ मैं॥ १॥

नहिं जिन जग कर्ता, हाँ हाँ नहिं०।
नहिं शङ्कर वत् संहर्ता।
यद्यपि त्रिभुवन के भर्ता।
अविकार अमल जस लक्षण गाऊँ मैं॥
श्री महावीर चरण में सादर श्रद्धा-सुमन सझाऊँ मैं॥ २॥

नहिं घट-घट व्यापी, हाँ हाँ नहिं०।
यद्यपि घट-घट के ज्ञापी।
प्रभु ज्ञान पतङ्ग प्रतापी।
सब पाप काप सुमरत सुख पाऊँ मैं॥
श्री महावीर चरण में सादर श्रद्धा-सुमन सझाऊँ मैं॥ ३॥

नहिं भगवन् भोगी, हाँ हाँ नहिं० ।
नहिं योगाराधक योगी ।
साकार इतर उपयोगी ।
अवियोगि मिलन हित हृदय लुभाऊँ मैं ॥
श्री महावीर चरण में सादर श्रद्धा-सुमन सभाऊँ मैं ॥ ४ ॥

अमृत रस वर्षी, हाँ हाँ अमृत० ।
चुम्बक वत् चित्ताकर्षी ।
उपदेश हि जस शिव दर्शी ।
'तुलसी' नत मस्तक शीश चढ़ाऊँ मैं ॥
श्री महावीर चरण में सादर श्रद्धा-सुमन सभाऊँ मैं ॥ ५ ॥

पारस पच्चीसी

सोरठा

पोष दशे दिन आज, तीर्थङ्कर तेवीसवाँ ।
श्री पारस जिनराज, जन्मे जग में ज्योतिधर ॥ १ ॥
पाणत देव विमान, च्यवन चारु बनारसी ।
नरपति अश्व महान, वामा कुक्षि अवतर्या ॥ २ ॥
सुर सुरपति सौल्लास, मेरु गिरि पर मुदित मन ।
जन्म महोत्सव खास, दिव्य मनावै भक्ति स्यूं ॥ ३ ॥
पाछे सकल जहान, नर नारी उत्साह से ।
करै जन्म-कल्याण, तीन लोक में रंगरली ॥ ४ ॥

श्रद्धा-सुमन

लय—देखो वीर जिनेश्वर वन्दन राय उदाई आवै रे)

श्री महावीर चरण में सादर "श्रद्धा-सुमन" सभाऊँ मैं।
हार्दिक भक्ति-सलिल से सींच-सींच कलियाँ विकसाऊँ मैं।
[ध्रुव पद]

ईश्वर अखिलेश्वर, हाँ हाँ ईश्वर० ।
प्रभु परमातम परमेश्वर ।
प्राण-प्रिय जैन जिनेश्वर ।
भास्वर अविनश्वर कहि बतलाऊँ मैं ॥
श्री महावीर चरण में सादर श्रद्धा-सुमन सभाऊँ मैं ॥ १ ॥

नहिं जिन जग कर्ता, हाँ हाँ नहिं० ।
नहिं शङ्कर वत् संहर्ता ।
यद्यपि त्रिभुवन के भर्ता ।
अविकार अमल जस लक्षण गाऊँ मैं ॥
श्री महावीर चरण में सादर श्रद्धा-सुमन सभाऊँ मैं ॥ २ ॥

नहिं घट-घट व्यापी, हाँ हाँ नहिं० ।
यद्यपि घट-घट के ज्ञापी ।
प्रभु ज्ञान पतङ्ग प्रतापी ।
सब पाप काप सुमरत सुख पाऊँ मैं ॥
श्री महावीर चरण में सादर श्रद्धा-सुमन सभाऊँ मैं ॥ ३ ॥

तीस वर्ष गृहवास, तीर्थ ढाई सौ साल तुझ।
तीस ज्ञान परकाश, वर्द्धमान वृद्धि करी ॥१६॥
अब्द वीर निर्वाण, चौवीसो सतासी मझे।
पारस पारस मान, गुण गाया है भक्ति से ॥१७॥
चलै पुरातन रीत, अपने कुल में आज भी।
रहै सदाई चीत, पोस दशे दिन दीपतो ॥१८॥
असली ओ त्यौहार, प्रभु पारस की याद को।
मोटो ओ अन्धार, निज घर की जाणाँ नहीं ॥१९॥
अखिल अवनि शिरताज, जश पसर्यो है जगत में।
इतर वर्ग भी आज, परिचित पारस नाम से ॥२०॥
बीजाक्षर सुविशेष, पारसनाथ चिन्तामणि।
मेटण सकल कलेश, स्मरण शुभकर आप को ॥२१॥
ऋद्धि-सिद्धि शुभ लाभ, भोतिक सुख संयोग है।
प्रभु पारस अमिताभ, उभय भवे आनन्द करै ॥२२॥
पारस नामक यक्ष, पद्मावती सुराङ्गना।
तव भक्ति पर लक्ष, दे के सुर सहयोग दै ॥२३॥
श्रद्धा शील सन्तोष, आत्मिक गुण विकसित हुवै।
पा पारस रो पोष, मन वंछित त्वरित फलै ॥२४॥
वङ्ग वास प्रवास, कलकत्ता महा नगर में।
गुण गाया सौल्लास, नगराज सागर शुभम् ॥२५॥

सु नील वर्ण चिह्न सर्प, सम चौरस संठाण शुभ ।
सु संघयण सन्दर्प, वज्र ऋृषभ नाराच है ॥ ५ ॥
तापस कमठ कठोर, अज्ञान तपस्या आचरी ।
पञ्चाग्नि पर जोर, नाग नागिनी जल रह्या ॥ ६ ॥
पा पारस परसंग, पञ्च परमेष्ठी मंत्र सुन ।
शुभ भावे मन रंग, नागेन्द्र दम्पति बने ॥ ७ ॥
कृष्ण त्रयोदशी पोष, दीक्षा मोछव दीपतो ।
चौथ चैत बिद ठोस, च्यवन ज्ञान कल्याण दो ॥ ८ ॥
शिखर काउसग धार, श्रावन शुक्ला अष्टमी ।
आयो मास संथार, योग रूंध शिव गति लही ॥ ९ ॥
पावन पंच कल्याण, जिण दिन हुए जिनेश के ।
उस दिन धरो सुध्यान, आरत्त मेटण अघ हरण ॥१०॥
वचन विभा पैंतीस, द्वादश गुण धारक सुखद ।
समवशरण जगदीश, चौतीस अतिशय चमकता ॥११॥
देव-कृत उगणीस, चार सु अतिशय जन्म थी ।
केवल ज्ञान बरीस, ग्यारह अतिशय प्रकटै ॥१२॥
प्रभु पारस के पाट, शुभदत्त हरिदत्त महा मुनि ।
आर्यसमुद्र सम्राट, चौथा स्वयंप्रभ सुरि ॥१३॥
पञ्चम केशि कुमार, परदेशी प्रतिबोधिया ।
गौतम चरचा सार, वीर-संघ से समन्वय ॥१४॥
सताइ सौ सताणु वर्ष, जन्म जयन्ति आप की ।
निज अनुमान निष्कर्ष, लिखाँ विज्ञ जन सांभलो ॥१५॥

पार्श्व जिन स्तवन

वामा नन्दन पास जिणन्द, जी पभुजी ! सेवै थानें सुर नर वृन्द । हे संजम लेई नें वन में आविया हे । हां ए दर्शन देव रो हे, शिर नो सेवरो हे ।। पास जिणन्द ।। १ ।। कोप्यो कमठ अति ही विकराल, जी प्रभुजी ! तिहाँ आयो दीनदयाल । हे काली काण्ठल कर आभो छावियो हे ।। हाँ ए दर्शन० ।। २ ।। गाजै वादल विजली चिमत्कार, जी प्रभुजी ! मेह वरसे अखण्डित धार । हे नदियाँ पुराणी जल मावै नहीं हे । हाँ० ।। ३ ।। जल सूं ढंकी प्रभुजी री देह, जी प्र० । तोही न रहै वरसत मेह । हे मेरु अचल नी परे थिर रह्या हे । हाँ० ।।४।। धरणेन्द्र पद्मावती आय । जी० । लीधा थानें शीश चढ़ाय । नैन निरख नाटक करै आनन्द सूं हे । हाँ ।। ५ ।। डरतो कमठ आय लागो पाय । जी० श्रीजिन चरणा शीश नमाय । हे हूँ चाकर चाहूं चरणा री चाकरी हे ।। हाँ ।। ६ ।। लोह ने करदे कनक समान । जी० । ते तो जग में पारस जान । हे पारस कर द्यो पदवी आपरी हे ।। हाँ० ।। ७ ।। चिन्ता मेटण पारश रूप । जी० । मेटो मुझ भवजल कूप । हे जगत् दुखाँ सूं सेवक ने तारिये हे । हाँ ।। ८ ।। गिरवा प्रभु गुणे गम्भीर । जी० । राखो मोने चरणाँ री तीर । हे दास सेवक नी अरजी अवधारिये हे । हाँ० ।। ६ ।।

गिरनारी जाताँ राख लीज्यो

सहियाँ ए नेमीसर बनड़ै नें, गिरनारी जाताँ राख लीज्यो ए ।
[ध्रुव पद]

समुद्रविजयजी रा लाडला हे माय, सहियाँ ए हर वल दोनूं लार ;
पिताजी नें जाय कहिज्यो ए, पिताजी नें जाय कहिज्यो ए ॥
सहियाँ ए नेमीसर बनड़ै नें, गिरनारी जाताँ राख लीज्यो ए ॥१॥

नेमीसर बनड़ो बण्यो ए मा, सहियाँ ए खूब बणी है बरात ;
ऊँची चढ़ झांक लीज्यो ए । ऊँ० । स० ॥ २ ॥

नेमीसर तोरण आविया ए मा, सहियाँ ए पशुवन करी छै पुकार ;
उलट रथ फेर चाल्या ए । उ० । स० ॥ ३ ॥

तोड़्या छै कांकण डोरडा ए मा, सहियाँ ए तोड़्या छै नौसर हार ;
दीक्षा उन आदरी ए मा । दी० । स० ॥ ४ ॥

हम ही परगट त्यागस्याँ हे मा, सहियाँ ए जाय मिलूं गिरनार ;
करम फन्द तोड़स्याँ हे मा । क० । स० ॥ ५ ॥

सेवक अति सुख पाय के हे मा, सहियाँ ए मांगै छै शिवपुर वास ;
दया म्हांरी लीजिये हे मा । द० । स० ॥ ६ ॥

नेमजी तोरण पर आये, जीव-पशु सब ही कुरलाये ।
नेमजी वचन जु फरमाये, जीव-पशु काहे को लाये ॥

झड़—

याको भोजन होवसी, जान वास्ते एह ।
एह वचन सुणी नेमजी, थर थर कांपै देह ॥
भाव से चड़ गये गिरनारी ॥ नेम० ॥ ४ ॥

पीछे सूँ राजुलदे आई, हाथ जब पकड़्यो है माई ।
कहाँ तूं जावै मेरी जाई, और वर हेरूं तुझ तांई ॥

झड़—

मेरे तो वर एक ही, हो, गया नेम कुमार ।
और भुवन में वर नहीं, कोटी करो विचार ॥
दीक्षा जब राजुल नें धारी ॥ नेम० ॥ ५ ॥

सहेल्याँ सब ही समझावै, हिये राजुल के नहिं आवै ।
जगत सब झूठो दरशावै, मेरे मन नेमकुमर भावै ॥

झड़—

तोड़्या कंकण डोरड़ा, तोड़्या नवसर हार ।
काजल टीकी पान सुपारी, त्याग्यो सब शिणगार ॥
सहेल्याँ सब ही बिलखाणी ॥ नेम० ॥ ६ ॥

तज्या सब सोलह शिणगारा, आभूषण रत्न जटित सारा ।
लगै मोहे सब ही सुख खारा, छोड़ कर चाली निरधारा ॥

श्री नेमनाथजी की जान व्रर्णन

(तर्ज—लावणी)

नेम की जान बणी भारी, देखण को आये नर नारी ॥ ध्रुव पद ॥
असंख्या घोड़ा और हाथी, मनुष्य री गिनती नहीं आती ।
ऊँट पर ध्वजा जो फरराती, धमक से धरती थर्राती ॥

झड़—

समुद्रविजय का लाडला, नेम उन्हों का नाम ।
राजुलदे को आये परणवा, उग्रसेन घर ठाम ॥
प्रसन्न भई नगरी सब सारी ॥ नेम० ॥ १ ॥

कसुम्बल बागा अति भारी, काने कुण्डल छवि है न्यारी ।
किलंगी तुर्रा सुखकारी, माल गल मोतियन की डारी ॥

झड़—

काने कुण्डल झग मगे, शीश मुकुट झलकार ।
कोटि भानु की करूँ उपमा, शोभा अधिक अपार ॥
बाज रह्या बाजा टंकसारी ॥ नेम० ॥ २ ॥

छूट रही उनकी छहराई, ब्याह में आये बड़े भाई ।
झरोखे राजुलदे आई, जान को देखी सुख पाई ॥

झड़—

उग्रसेनजी देखके, मन में करै विचार ।
बहुत जीव करी एकठा, बाड़ो भर्यो अपार ॥
करी सब भोजन की त्यारी ॥ नेम० ॥ ३ ॥

दान दया जप तप घणो, जैन धर्म के मांय ।
वीज भजन विना करसणी, करने सब खप अहलीजा ॥ ४ ॥
केइ-केइ भोला लोक नें, वांहगा दे वहकाय ।
देवै दृष्टान्त प्रश्न कूड़ा, राले फन्द के मांय ॥ ५ ॥
जैन मति कोई जैन में, म्हांरी सुणो करसण करतूत ।
वीज वाहवै शाख निपजायवा, शिवपुर अंगा सूत ॥ ६ ॥
खेत धणी को जीव छै, काया खेत समान ।
तप रूपीयो हल जोत नें, खात रूपीयो दान ॥ ७ ॥
सागड़ी रूपीया सतगुरु, सम्यक्त वीजज वाय ।
दया रूपीयो जल पांवता, व्रताँ री वाड़ वणाय ॥ ८ ॥
खेत सीलु कर्म काटवा, क्षम्याँ रूपणी कसी ल्याय ।
खाई वाड़ सन्तोप ज्यूं, पान पोट ज्यूं पुन्य वंधाय ॥ ६ ॥
मेह अरिहन्त ज्यूं ध्यान छै, ध्यान रूपीयो ज्ञान ।
चारे रूप निपना सुख संसार ना, विविध २ असमान ॥१०॥
नाज रूपीया फल मुगत का, मोड़ा वेगा जास्याँ मोख ।
जैन जिस्यो कसरण नही, म्हे घणा देख्या मत फोख ॥११॥
थे नहीं समझो बोधवीज में, म्हे भजां अरिहन्त भगवान ।
थारा गुरु महिमा कही, में पिण लीधी जाण ॥१२॥
गुरु गोविन्द दोनूं खड़ा, किस के लागूं पाय ।
वलिहारी सतगुरु तणी, गोविन्द दिया ओलखाय ॥१३॥
अरिहंत गुण नहीं ओलख्या, सतगुरु दिया दरशाय ।
कहूँ भजन महिमा सतगुरु तणी, ते सुणज्यो चित्त लगाय ॥१४॥

झड़—

मात पिता परिवार को, तजताँ न लागी बार ।
वियोग कर चली आप सूं, जाय चढ़ी गिरनार ॥
भूरती छोड़ी मा प्यारी ॥ नेम० ॥ ७ ॥
दया दिल पशुवन की आई, त्याग जब कीनो छिन मांई ।
नेम जिन गिरनारे, जाई, पशुन के बन्धन छुड़वाई ॥

झड़—

नेम राजुल गिरनार पै, लीन्हों संयम दान ।
नवलराम करी लावणी, उपन्यो केवल ज्ञान ॥
जिन्हों की क्रिया बुद्धि सारी ॥ नेम० ॥८॥

श्री पूज्य भीखणजी को समरण

दोहा

कोई अन्यमति इम कहै, भजन नहीं जैन के मांय ।
सूना घर को पाहुणो, ज्यूं आवै ज्यूं जाय ॥ १ ॥
खेत में खात रलाय नें, हल देवै जुतराय ।
खेत खड़ै चौकस करै, रूड़ी बाड़ बणाय ॥ २ ॥
जल स्यूं सींचै खेत नें, बीज नहीं तिण मांय ।
रुत आयाँ रोवै करसणी, लुणताँ देखै लोग लुगाय ॥ ३ ॥

दान दया जप तप घणो , जैन धर्म के मांय ।
बीज भजन बिना करसणी , करने सब खप अहलीजा ॥ ४ ॥
केइ-केइ भोला लोक नें , वांह्गा दे वहकाय ।
देवै दृष्टान्त प्रश्न कूड़ा , राले फन्द के मांय ॥ ५ ॥
जैन मति कोई जैन में , म्हांरी सुणो करसण करतूत ।
बीजबाह्वै शाख निपजायवा , शिवपुर अंगा सूत ॥ ६ ॥
खेत धणी को जीव छै , काया खेत समान ।
तप रूपीयो हल जोत नें , खात रूपीयो दान ॥ ७ ॥
सागड़ी रूपीया सतगुरु , सम्यक्त बीजज बाय ।
दया रूपीयो जल पांवता , व्रताँ री वाड़ बणाय ॥ ८ ॥
खेत सीलु कर्म काटवा , क्षम्याँ रूपणी कसी ल्याय ।
खाई वाड़ सन्तोष ज्यूं , पान पोट ज्यूं पुन्य बंधाय ॥ ९ ॥
मेह अरिहन्त ज्यूं ध्यान छै , ध्यान रूपीयो ज्ञान ।
चारे रूप निपना सुख संसार ना , विविध २ असमान ॥१०॥
नाज रूपीया फल मुगत का , मोड़ा वेगा जास्याँ मोख ।
जैन जिस्यो करसण नही , म्हे घणा देख्या मत फोख ॥११॥
थे नहीं समझो बोधबीज में , म्हे भजां अरिहन्त भगवान ।
थारा गुरु महिमा कही , मैं पिण लीधी जाण ॥१२॥
गुरु गोविन्द दोनूं खड़ा , किस के लागूं पाय ।
बलिहारी सतगुरु तणी , गोविन्द दिया ओलखाय ॥१३॥
अरिहंत गुण नहीं ओलख्या , सतगुरु दिया दरशाय ।
कहूँ भजन महिमा सतगुरु तणी , ते सुणज्यो चित्त लगाय ॥१४॥

ढाल

श्री सन्त भीखणजी रो समरण करतां, भव दुःख जावै सर्व भाज जी। बासो बसै तो देवलोकाँ मांहि, पामै मुक्तपुरी नो राजगी॥ श्री पूज्य भीखणजी रो समरण कीजै॥ १॥ 'भी' कहताँ भिक्षु व्रत लीधा, 'ख' कहताँ खिम्या-रस पीध जी। 'न' कहताँ सावद्य काम निवास्या, 'जी' कहताँ इन्द्रयाँने जीतजी॥ श्री पूज्य ॥ २॥ समरण चिन्तामण च्यार आखर रो, तिण में गुण अथागजी। चक्री निधान ज्यूं समरण साझै, तिण रो वीर कह्यो बड़ भागजी॥ श्री॥ ३॥ सूत्र सिद्धान्त में नवकार भाख्यो, दोय पदां में आया स्वामजी। आचारज पदवी ने सतगुरु साधु, ज्यांरो रात दिवस रटो नामजी॥ ४॥ च्यार मंगलीक उत्तम शरणा लेणा, श्री वीर गया छै भाखजी। तीन प्रकारे बोलै स्वामी, ज्यांरी आवसग्ग सूत्र में साखजी॥ ५॥ घणा बिघन भागै इण समरण स्यूं, टलज्यावै दुख हुवै हगामजी। कही कथा सूतर के मांही, लेऊँ थोड़ासा नाम जी॥ ६॥ लाय में बलतां सतगुरु समस्या, नहीं बल्यो कंजकंवारजी। शिष्य होस्यूं श्री नेम जिणन्द रो। तिण नें देवता काढ्यो बाहरजी॥७॥ सेठ सुदर्शन में संकट पड़ियो, जब समर लिया जगनाथजी। बिघन टल्यो देखो अरजनमाली रा, नहीं चाल्या तिण पर हाथजी ॥ ८॥ सीता सती नें अंजणा बे वन में, उपसर्ग उपना करूरजी। संकट पड्याँ सती सतगुरु समस्या, तिण रो देव त्रिघन कियो

दूरजी ॥ ६ ॥ सेठ सुदर्शण नें समरण करतां, अभया दीनो आलजी। शूली फाट सिंहासण रचियो, इसड़ो समरण शील रसालजी ॥ १० ॥ सती सुभद्रा नें निज सासू, दियो अणहुंतो आलजी। तेलो करि नें सती सतगुरु समस्या, देवी आइ ततकाल जी ॥ ११ ॥ राजल रूप देखी रहनेमी चलिया, ध्यान चूका नें दियो धिकार जी। ध्यान समरण मन पाछो धरियो, पहुंता मुगत मभार जी ॥ १२ ॥ अरणक नें कामदेव दोयाँ नें, देवता दुख दीधा अपार जी। तो पिण सद्गुरु समरण सैंठा, देव गया तिण स्यूं हारजी ॥ १३ ॥ नन्दन मणियारो डेडको हूँतो, तिणने चींथ्यो श्रेणिक रै केकाणजी। संथारो करि नें सतगुरु समस्या, उपनो दुधर विमाणजी ॥ १४ ॥ दल मेल्या तिहाँ सात नरक ना, परसनचन्द राजान जी। ध्यान समरण मन पाछो धरियो, पाम्या केवल ज्ञान जी ॥ १५ ॥ तीर्थंकर चक्रवर्त इंद्रादिक, ओ ही समरण साधजी। मुक्ति पधास्या तेहिज भाख्यो, ओ ही मन्त्र आराधजी ॥ १६ ॥ मध्यम नर कोई समरण साभै, ज्यांरै बध-ज्यावै आबजी। मध्यम जायगाँ प्यारी लागै, जाणै क्यारी खिली गुलाबजी ॥ १७ ॥ उत्तम मध्यम रो नहीं कोई कारण, कुल ऊँच नीच नें मध्य जी। समरण साधै तिणरै घट में, जाणै चांदणो कर दियो चन्द जी ॥ १८ ॥ जिम कोई जल नें पय ओटावें, तिम २ चोखो होवै दूध जी। कर्म पातक झड़ै इण समरण स्यं, निरमल चोखी ज्यांरी बुधजी ॥ १६ ॥ कपड़े को मैल कटै साबुन स्यूं, रत्न काम्बल रो आगजी। कर्मां रो मैल

छूटे समरण स्यं, मिट ज्यावै भव भव दागजी ॥ २० ॥ सुलभ बोधी समरण साधै, अठे ही पामै ज्ञान जी। अठे नहीं पामै तो परभव में पामैं, इसड़ो समरण ध्यानजी ॥ २१ ॥ समरण करताँ जाणै मुख में, मिश्री पीधी गालजी। शरीर वैदनाँ ध्यान समरण स्यूं, जाणै बैठा सुखपालजी ॥ २२ ॥ पूज्य सरीषी भरत खेतर में, बीजी नहीं कोई चीजजी। समरण व्रताँ में समकित आपै, हलुकर्मी रह्या रीझजी ॥ २३ ॥ साध भीखणजी रो समरण करताँ, पहुँचै भवजल पारजी। जे नर नारी रा भाग्य बड़ा छै, वंदै सूरत दिदार जी ॥ २४ ॥ परजा नें प्यारा वासुदेव केशव, वीर बाहला तीर्थ च्यारजी। पतिव्रता विकसै पति देख्याँ, ज्यूं समदृष्टि गुरु दिदारजी ॥ २५ ॥ अलव रो जीव फूल डम्बर में, सारंग नें सारंग करै कूकजी। ज्यूं समदृष्टि नें गुरु दर्शन की, सदा लागी रहै भूखजी ॥ २६ ॥ अमृतफल सुवटा नें मीठा, मोती मीठा मरालजी। समदृष्टि सतगुरु समरण स्यूं, कीधां हि हर्ष अपार जी ॥ २७ ॥ अमृत भोजन कीधाँ तिरपत, पछै किसी कुकस री लगन जी। समदृष्टि सतगुरु समरण स्यूं, मुनि ज्यूं रहै मगनजी ॥ २८ ॥ मनवांछित फलै इण समरण स्यूं, समरो भीखणजी साधजी। हालत चालत ऊठत बैठत, चित में रहो आराधजी ॥ २९ ॥ वेल त्रिया कोई निरफल थावै निरफल थावै कोई बीजजी। सतगुरु समरण निरफल नाहीं, ज्यूं सीता सती रो धीजजी ॥ ३० ॥ मध्यम बेल्याँ मंत्र जपंताँ, तिण स्यूंई सुधरै काजजी। साधु उत्तम को समरण कर्‌याँ स्यूं, निश्चेई

शिवपुर राजजी ।। ३१ ।। काल दुःखम में वहोलकर्मी, आय लियो अवतारजी। सतगुरु समरण स्यूं केवल पामै, अटकै दोय प्रकारजी ।।३२।। काल सुखम में हलुकर्मी, आय लियो अवतारजी। सतगुरु समरण स्यूं केवल पामै, इसा भिक्षु अणगारजी ।। ३३ ।। अध्येन आठमें गिनाता सूतर में, गुरु गुण गावै दिन रात जी। गोत तीर्थंकर तेहिज बांधै, केवल पिण उपजै साख्यातजी ।। ३४ ।। ऊंच पदवी देव मानव गत में आद तीर्थंकर देवजी। सर्व सुख पामै इण समरण स्यूं, सारो भीखणजी री सेवजी ।। ३५ ।। इण समरण स्यूं कटै भव - भव रा, कर्म कटकदल फौजजी। देखो सांवलिये मुनिराज री सूरत, पूरो मन री मौज जी। ।। ३६ ।। पालखण्ड पेणहारा नें विडदाँ रा भारा, वर्ण साँवल दीर्घ दीदारजी। लाली लोचन चाल हस्ती नी, पूज्य ओलखो इण उणिहारजी ।। ३७ ।। पंच महाव्रत पालै दोषण टालै, शूरवीर नें धीरजी। मूल गुण आचारज पूरा, आगै हुवा ज्यूं महावीर जी ।। ३८ ।। वीर समरण में पूज्य समरण में, फेर नहीं तिल मातजी। वीर री गादी श्री पूज्य विराज्या, सगली चौथे आरैरी ज्यूं बातजी ।।३९।। तीर्थ प्रवर्ताव्या ज्ञान रा गाढ़ा, हीरा रत्नां री खाणजी। भरत क्षेत्र में सोभ्या नहीं लाधै, भिक्षु सरीषा बुद्धिवानजी ।। ४० ।। हुवा नें बले होसी घणेरा, हिवडाँ तो दीसें नांयजी। गुण घणा पिण एक जीभ स्यूं, कह्या कठा लग जायजी ।। ४१ ।। तीर्थ प्रतिपाला नें ज्ञान रसाला, भविकाँ भंजन भीरजी। अमृतवाणी जग में बखाणी, मीठी मिश्री खीर

जी ॥ ४२ ॥ खीर खाई चक्रवर्त नी दासी, रत्न करै चकचूरजी। खीर ज्यूं समरण समदृष्टि नें, बल ज्यूं बढ़ै पौरस पूरजी ॥ ४३ ॥ गाल दियो गर्व श्रीदेवी नो, बल देख्यो तिण वारजी। पौरस सम समदृष्टि धर्म दियो, अन्यमति नो गर्व गालजी ॥ ४४ ॥ खीर खाई एक ब्राह्मण बांगै, बधियो विषय विकारजी। खीर ज्यूं कूजन ब्राह्मण रो साथी, कुत्ता ज्यूं कुढत गिवारजी ॥ ४५ ॥ सुवो मैना पढ़ावै मानव गत में, वाणी बोलै विविध प्रकारजी। साक्षात मैना नें कहै समरण कीजै, समझै नहीं मूढ़ गिंवार जी ॥ ४६ ॥ रात दिवस त्यांरो ध्यान लग रह्यो, अन्यमत रो भजन विशेषजी। निरफल जाणै कोई सत्य समरण नें, गाढ़ी राखै टेकजी ॥ ४७ ॥ दृढ़पणो राखो भवी जीवाँ, राखो समरण टेकजी। रखे समरण स्यूं ढीला पड़ ज्यावो तो, अन्यमति करसी थांरी ठेकजी ॥ ४८ ॥ भगवंत भजाँ अरिहन्त सिद्ध प्रभु, आचार्य उवज्झाय मुनिरायजी। पांच पदाँ रो समरण साझाँ, थानें तो पिण खबर न कांयजी ॥ ४६ ॥ च्यार पदाँ रो चौबुरज-गढ़, सतगुरु पोल दुवारजी। पोल पायाँ बिन गढ़ किम पामै, ज्यूं इम गुराँ को इधकारजी ॥५०॥ गुरु स्तुति सुणो भवी जीवाँ, धारो समरण शील रसालजी। तिस्या अनंता इण समरण स्यं, दाख्या दीन दयालजी ॥ ५१ ॥ एहवी महिमा गुरु समरण री, देवाँ री जाणो विशेषजी। जैन में भजन नहीं इम मत कहिज्यो, छोड़ द्यो कूड़ी टेकजी ॥ ५२ ॥ अन्य मताँ रो जैन धर्म रो, नहीं भजन परमाणजी। बानगी दिखाली एक जैन धर्म री, अहो

भजन पिछाणजी ॥ ५३ ॥ रहि - रहि पाखंडी इण जैन धर्म में, मुगते पहुँता अनन्त अनेकजी। गुरुदेवाँ रै समरण विना, मुगत न पहुँतो एकजी ॥ ५४ ॥ मृगतृष्णा ज्यूं समरण थारो, कण विना थोथो बावै नाजजी। गुण विना नांव स्यूं मुगत न पामैं, ज्यांरा कदेई न सुधरै काजजी ॥ ५५ ॥ घुघू नें दिवस नहीं सूझै, पाँव रोगीने मीठी लागै खाजजी। नीम पान नहीं कड़वो जहर चढ्यां नें, गुण विना भजन कर्म वश गाजजी ॥ ५६ ॥ भगत भीखणजी रो श्रावक शोभो, कीधी च्यार तीरथ मनवारजी। माला मोत्यां ज्यूं सतगुरु समरण, हीरा ज्यूं हिरदै धारजी ॥ ५७ ॥ कुगत मिटावो सुगत जावो, समरो भीखणजी साधजी। श्रावक शोभो कीर्ति भाखै, श्रीजीद्वार सुगामजी ॥ श्रीपूज्य०॥५८॥

भोर समय भजूँ भिक्षु गणी

(लय—ऐसो जदुपति २)

स्यूं समरूँ गुरु भिक्खन नाम, वा समरूँ गुरु भिक्खन काम।
वा गुरु भिक्खन की करणी, भोर समय भजूं भिक्षु गणी ॥
रटूँ भिक्षु गणी, समरूं भिक्षु गणी, भिक्षु गणी म्हारै मुकुट मणी।
रटूँ भिक्षु गणी, भिक्षु गणी तेरा पन्थ धणी ॥ ए आंकड़ो ॥ १ ॥
भिक्खन नाम बड़ो अभिराम, भिक्खन नाम हृदय विश्राम।
सरल शुभङ्कर शिव शरणी ॥ भो० ॥ २ ॥

नाम करूँ क्षण आतमाराम, वर्णवस्यूँ गुरुवर - कृत काम।
ठाम स्थित सुणो सयल गुणी ।। ३ ।।

धुर नृप नग्र नो काम उदग्र, साचूँ श्रावक वर्ग समग्र।
दिल अव्यग्र यथा धरणी ।। ४ ।।

दोय वरस चरचा गुरु पास, पण नहिं निज अरचा नी अभिलाष।
है स्याबास बल्लुज भणी ।। ५ ।।

प्रतिभा नो अप्रतिम उजास, आतम अलौकिकता आभास।
विश्व विकास यथा द्युमणी ।। ६ ।।

सरधा नो रे अजोड़ निचोड़, नहिं कोई रंच रह्यो भकभोड़।
सहु नें ही पडै स्वीकरणी ।। ७ ।।

शासन-मन्दिर नी रे दिवाल, निज आशय सम करिय विशाल।
ऊँडी नींव अतीव घणी ।। ८ ।।

वर मरयाद लोहमय बीम, ढाल ढाल-मय ढोला धड़ीम।
मति संकलना कलिय बणी ।। ९ ।।

चित्र विचित्र भांति दृष्टान्त, गुरु रज्जा सुख सज्जा शान्त।
शयन करै सुखे मुनि श्रमणी ।।१०।।

सारो जगत थयो इक ओर, एक प्रभु कियो काम कठोर।
ओर इसो न जण्यो जणणी ।।११।।

करणी करणी पड़सी याद, दीपांगज नी धरी आह्लाद।
धुर धारी देह उद्धरणी ।।१२।।

तारण आतम तपस्या ताप, प्रारम्भी भूतल आताप।
बतका किम जाये वरणी ।।१३।।

पुनरपि प्रेरित जन समझास, प्रारम्भी कियो प्रबल प्रयास।
सारी - सारी निशि जागरणी ॥ १४ ॥
अन्न पान नों स्यूँ रे प्रमाण, सांसै में रहता निज प्राण।
सँगे नहिं वहु सिह शिष्यणी ॥ १५ ॥
सावय सावया नो समुवाय, अवलोकन्ता आगम मांय।
सी रीते करी समझावणी ॥ १६ ॥
वय सत सप्तति वर्ष नी पाम, नहिं ठहरे कहीं एकण ग्राम।
विहरवुं नित जिम नभ तरणी ॥ १७ ॥
यावज्जीव लियो संथार, ते मांहे कियो अद्भुतकार।
कौतुक सुणी गुरु बागरणी ॥ १८ ॥
जिन मत नों रे जमायौ झण्ड, मेट्यो पाखण्ड नों अफण्ड।
भवदधि तारण तूं तरणी ॥ १९ ॥
साठै भाद्रव सित शुभ पाम, तेरस तिथि साध्यो सुरधाम।
चरमोत्सव तिथि तेह तणी ॥ २० ॥
पटधर भारमल्ल ऋषिराय, जय मघ माणक डाल सुहाय।
काल्रू मूरति मन हरणी ॥ २१ ॥
उगणीसै अठाणव साल, राजाणै पावस नो काल।
चिहुं तीरथ नी चोकी चीणी ॥ २२ ॥
तीस मुनि श्रमणी पच्चास, तन मन मानै परम हुलास।
चूकै नहीं गुरु आणा अणी ॥ २३ ॥

श्री भिक्षु स्मृति

(लय—आरती नी)

अयि जय भिक्षो दैपेय।
तेरापन्थ पथाधिप २, जैन जगत आधेय। अयि०। (ध्रुवपद)

एकानन लख कानन, पञ्चानन लाजै। अयि पञ्च०
हंसासन वृषभासन तव उपमा साजै॥ अयि०॥ १॥

नर बङ्को मरुधर नो, कवि कलना चीन्ही। अ० क०।
कण्टालिय पुर अवतर, चरितारथ कीन्ही। अयि०॥ २॥

विरस विषय रस त्यागी, त्यागी चित्र न एह। अ० त्या०
दुनियाँ सतपथ लागी, अद्भुत हम हृदयेह। अयि०॥ ३॥

नहिं केवल मनपर्यव, अवधि स्यादन्ते। अ० अ०।
तदपि अलौकिक अनुपम, पन्थ लह्यो भन्ते। अयि०॥ ४॥

अलग २ शिव जग मग, सुन कोई चित चिड़के। अ० सु०।
चित्र न चङ्ग मृदङ्गे, महिषि सदा भिड़के। अयि०॥ ५॥

महाबीर शासन में, दक्षिण इण भरते। अ० द०।
तव कृपया कलियुग में, सतयुग सो बरते। अयि०॥ ६॥

है तव अटल आण में, तीरथ च्यार खरे। अ० ती०।
छापुर चारुवास विच, 'तुलसी' तुम सुमरे। अयि०॥ ७॥

भिक्षु प्रभु फरमान

[लय—ना जाने किस वेश में बाबा मिल जाये भगवान रे]

बड़े प्रेम से गावो सारे, भिक्षु के गुण गान रे।
जीवन में अपनावो प्यारे, भिक्षु प्रभु फरमान रे॥
[ध्रुवपद]

युग प्रधान थे भिक्षु स्वामी, आगामी मति वाले।
थे गहरे तत्वों के चिन्तक, निर्भय मानस वाले॥
थी जिनकी २ अहो! कथनी करणी दोनों एक समान रे॥ १॥

सत्य समझ में आया वही, सही जग को समझाया।
शास्त्रों का नवनीत पुनीत, नीति में प्रसरण पाया।
उस चिन्तन २ पर आते ही चकराते बड़े बड़े विद्वान रे॥ २॥

आज हमारे सन्मुख उस, मर्यादा का प्रतिफल है।
सर्वाङ्गीण वृद्धि करता, यह तेरापंथ सफल है।
चारों ही २ तीर्थों के पूरण होते हैं अरमान रे॥ ३॥

तुलसी ने तो नैतिकता का, पुल-सा बांध दिखाया।
नये मोड़ ने चार चाँद फिर उसपर खूब लगाया।
गाती २ है 'पानकुमारी' धरती तेरा अविचल ध्यान रे॥ ४॥

झाँकी पुरुष महान की

(लय—झांकी हिन्दुस्तान की)

आवो लोगों तुम्हें सुनायें, झांकी पुरुष महान की।
इन कंठो से जय जय बोलो, श्री भिक्षु भगवान की।
तेरापंथ के प्रथम प्रणेता, श्री मद् भिक्षु स्वामी थे।
तेरापंथ के प्रथम विजेता, श्रीमद् भिक्षु स्वामी थे।
तेरापंथ के प्रथम ही नेता, श्रीमद् भिक्षु स्वामी थे।
तेरापंथ के प्रथम ही वेता, श्रीमद् भिक्षु स्वामी थे।
तभी तो महिमा फैली है, श्री भिक्षु के अभिधान की ॥ १ ॥

कैसी कैसी विपदाओं ने, आकर घेरा घाला था।
कदम-कदम पर भीषणतम, कष्टों ने डेरा डाला था।
कंकरीली पथरीली भू पर, निर्भय बनके चाला था।
इन नाकुछ विपदाओं में वो, कब घबराने वाला था।
वहाँ लगादी थी गुरुवर ने, बाजी अपने प्राण की ॥ २ ॥

श्मशानों में जाकर जिसने, पहली रात गुजारी थी।
इधर एकला वीर पुरुष था, उधर यह दुनिया सारी थी।
सत्य धर्म पर डट जाना है, पक्की दिल में धारी थी।
ऐसे ऐसे कष्टों में भी, हिम्मत को नहीं हारी थी।
परवाह ना करी बिल्कुल गुरु ने आंधी और तूफान की ॥ ३ ॥

अंधेरी ओरी में जिसने, चातुर्मास बिताया था।
जहाँ सन्तों के पग में भुज नें, आंटा खूब लगाया था।

नर जाती का रूप बना कर, सुर ने शीश झुकाया था।
जोश भरी वाणी में गुरु ने, सुर को भी समझाया था।
वहाँ जगादी थी गुरुवर ने ज्योति अपने ज्ञान की ॥ ४ ॥
आज उन्हीं के नवमासन पर, श्री तुलसी गुरुराज है।
चार तीर्थ में शोभ रहे हैं, जिन शासन सिर ताज है।
वीर जिनेश्वर के शासन का, करते गुरुवर राज है।
अपार गुणों के धारक जिनका, नहिं आता अन्दाज है।
कोड़ दीवाली राज करो प्रभु, यही अर्ज मुनि 'पान' की ॥ ५ ॥

म्हाँरी बोलमा

(लय—वं भैरूं जी)

स्वामी जी संवत् अठारह सौ सतरै सही,
स्वामी जी आषाढ़ी पूनम दिन श्रीकार।
म्हांरा भीखू हो बाबा, पूरी तो कीज्यो म्हांरी बोलमा।
केलवा रा हो भिक्खू, पूरी तो कीज्यो म्हांरी बोलमा।
वर्द्धमान रा बेटा, पूरी तो कीज्यो म्हांरी बोलमा।
[ध्रुवपद]

स्वामी जी क्रान्ती रा चरणा सूं थे चालिया,
स्वामी जी स्वीकास्यो संयम खांडा धार ॥ म्हां० १ ॥
स्वामी जी गहरी नज़राँ सूं आगम जोइया,
स्वामी जी तत्वाँ रा सूक्ष्म काढ्या तार। म्हां०।

स्वामी जी ताता तोफानाँ सूं थे नहिं डर्‌या,
स्वामी जी शास्त्राँ री कायम राखी कार ॥ म्हां० २ ॥

स्वामी जी पोता चेला म्हें थाँ रै वंश रा,
स्वामी जी थे म्हांरै दादा-गुरु रै थान । म्हां० ।
स्वामी जी तिण सूं राखाँ म्हें थांरी मानता,
स्वामी जी ले कर आया हाँ अरमान ॥ म्हां० ३ ॥

स्वामी जी क्रोध सतावै आवै देह में,
स्वामी जी मानो नहिं छानो बैठै जाय । म्हां० ।
स्वामी जी माया री काया में तप्ति घणी,
स्वामी जी लोभाकुल मनड़ो अकुलाय ॥ म्हां० ४ ॥

स्वामी जी विषयाँ में जहर बखाणै जीभड़ी,
स्वामी जी अमृत-सो मानी दौड़े मन्न । म्हां० ।
स्वामी जी आँख्याँ पर ईर्ष्या रो पड़दो पड़्यो,
स्वामी जी तप रो तो नाम सहै नहिं तन्न ॥ म्हां० ५ ॥

स्वामी जी ऊपर रूपालो कालो मांयलो,
स्वामी जी किण विध होवेला बेड़ा पार । म्हां० ।
स्वामी जी 'चन्दन' ने मोटो थांरो आसरो,
स्वामी जी पापाँ रो करज्यो प्रतिकार ॥ म्हां० ६ ॥

कालू स्मृति

(लय—आरती नी)

ॐ जय कालू गुरुदेव ।

धन्य जमारो तेहनो, निश दिन सारी सेव ॥ ॐ ॥ ध्रुव पद

छापुर में अवतरियो, गुण दरियो स्वामी । अहि गु० ।
बीदासर मघवा कर, संयम श्रीपामी ॥ ॐ० ॥ १ ॥

चन्देरी छासठे, पटोत्सव पीनो । अयि प० ।
सत्तावीस वरस लग, तपियो दृढ़ सीनो ॥ ॐ० ॥ २ ॥

मरु मालव मेवड़ाँ, थलवट हरियाणै ॥ अयि थ० ।
ढूंढाड़ाँ पंजावाँ, विचरण मण्डाणै ॥ ॐ० ॥ ३ ॥

त्रिशलासुत शासन की, आभा अति भारी । अयि आ० ।
तेरा पथ प्रख्याति, किन्ही जग जाहरी ॥ ॐ० ॥ ४ ॥

भोग भयङ्कर शङ्कर, त्याग तणी सरणी । अयि त्या० ।
अभयङ्कर दरशाई, शिवपुर सञ्चरणी ॥ ॐ० ॥ ५ ॥

लाखाँ नर नी नैया, भवजल सूं तारी । अयि भ० ।
जैन जगत जगदीश्वर, है तव आभारी ॥ ॐ० ॥ ६ ॥

दृढ़तम हार्दिक भावे; कायिक कष्ट सह्यो । अयि का० ।
गंगापुर चरमोछव, छक्काँ छाय रह्यो ॥ ॐ० ॥ ७ ॥

भजिये निश दिन कालु गणिन्द

(लय—सीता आवै रे घर राग)

भिक्षु शासन अधिक विकाशन, अष्टम आसन धार।
कालू कलिमल राश विनाशन, प्रगटे जगदाधार॥
भजिये निश दिन कालु गणिन्द ॥ १ ॥

थलवट देश प्रसिद्ध प्रदेशे, छापुर नयर सुजान।
कोठारी कुल दीपक उदयो, उदयाचल ज्यूं भान ॥ भ० ॥ २ ॥

सज्जन जन मन हरण करंतो, मूलचन्द कुल नन्द।
छोगाँ अङ्गज रङ्ग सलूणो, जाणक पूनमचन्द ॥ भ० ॥ ३ ॥

उगणीसै तेतीसे वर्षे, प्रभु नो जन्म प्रसिद्ध।
चमालीसे गुरु मघवा कर, पामी संयम ऋद्ध ॥ भ० ॥ ४ ॥

जननी संगे अति उछरंगे, मासी दुहिता साथ।
चित्त चंगे रस रंगे संयम, पालै स्वामी नाथ ॥ भ० ॥ ५ ॥

अलप समय में समय निहारी, रहस्य विचारी सार।
विद्या विविध प्रकारे धारी, कोविद-कुल सरदार ॥ भ० ॥ ६ ॥

छासठ साल डाल गणनायक, पदलायक हद पेख।
लेख एक निज कर थी लिख नें, कियो राज अभिषेक ॥ भ० ॥ ७ ॥

भाद्रवी पूनम पाट विराजत, थाट लगाया स्वाम।
बाट २ जश कीरति फैली, पुर अरु ग्रामो ग्राम ॥ भ० ॥ ८ ॥

विचरया गणि उपकार करण हित, देश प्रदेश मझार।
घणा भव्य भवजल थी तारण, करुणा-दृष्टि निहार ॥ भ० ॥ ९ ॥

इक्काणूं चौमास करायो, जोधाणै गण ईश।
अति मण्डाणे दीधी दीक्षा, एक साथ बावीस ॥ भ० ॥१०॥
मरुधर तार पधस्या स्वामी, मेदपाट में खास।
दोय मास विचरी नें कीधो, उदयापुर चौमास ॥ भ० ॥११॥
तिहाँ पूज्य ना दर्शण कीधा, मेदपाट भूपाल।
सुण उपदेश सुजश मुख कहियो, लहियो हर्ष विशाल ॥ भ० ॥१२॥
चौमासो उतरिया गणपति, त्याँ थी कीध विहार।
मालव देव पधारण कारण, पक्की दिल में धार ॥ भ० ॥१३॥
च्यार मास अन्दाजे विचस्या, मालव देशे आप।
जिन मारग दिपायो अधिको, आगम दीपक थाप ॥ भ० ॥१४॥
नवली २ रचना प्रभुनी, देखी जन समुदाय।
सच वचनामृत पान करी नें, प्रमुदित पुर-पुर थाय ॥ भ० ॥१५॥
फिर पाछा पधास्या प्रभुजी, मेदपाट शुभ देश।
वाम हस्त व्रण पीड़ा प्रगटी, रोग मूल सुविशेष ॥ भ० ॥१६॥
काय-कष्ट में पिण गणि कीधो, मजलो मजल विहार।
गंगापुर चौमास करायो, श्रीमुख वचन विचार ॥ भ० ॥१७॥
अनुक्रमे वह रोग समुहे, घेस्यो स्वाम शरीर।
अङ्ग अति पीड़ाणो तो पिण, पूज्य मनोबल धीर ॥ भ० ॥१८॥
जिम जिन कल्पिक मुनिवर वेदन, वेदै सम परिणाम।
तिम तनु व्याधि उदय हुवाँ थी, गिणत न राखी स्वाम ॥ भ० ॥१९॥
जिम संग्रामे शूरवीर नर, जूझै अति जूझार।
तिम वेदन संघाते जूझ्या, गणपति साहस धार ॥ भ० ॥२०॥

सहनशीलता परम पूज्य नी, निरख २ नर नार ।
चकित थई इम पभणै वाह २, धन्य २ जग तार ॥ भ० ॥२१॥
लोक हजारां ग्राम ग्राम ना, आव्या दर्शण काज ।
परमानन्द लह्यो मन माहिं, लख अद्भुत महाराज ॥ भ० ॥२२॥
अलप शक्ति में पिण गणिवरजी, शिक्षा अधिक रसाल ।
आपी सन्त सत्याँ नें सखरी, वचन अमूल्य विशाल ॥ भ० ॥२३॥
भाद्रव शुक्ल तीज दिन मुझ नें, भिक्षु गण शिरताज ।
बिन्दु नो सिन्धु कर थाप्यो, आप्यो पद युगराज ॥ भ० ॥२४॥
अति उपकार कियो मुझ ऊपर, गणिवर गुणमणि धाम ।
किम विसराये तन मन सेती, समरूँ आठूं याम ॥ भ० ॥२५॥
सम्वत्सरी नो आप करायो, हर्ष धरी उपवास ।
छट्ठ पारणो कियो प्रभुजी, प्रथम याम सुविमास ॥ भ० ॥२६॥
सायं काले स्वाम शरीरे, प्रसर्यो श्वांस प्रकोप ।
तो पिण समचित सखरी राखी, कियो कष्ट नो लोप ॥ भ० ॥२७॥
पुद्गल खीण पड़ंता जाणी, पचखायो संथार ।
सरधी नें समभावे गणिवर, पहुंता स्वर्ग मझार ॥ भ० ॥२८॥
सप्तवीस वत्सर लग लीधी, शासण नी सम्भाल ।
मात तात सम चिहुं तीरथ नी, कीधी हद प्रतिपाल ॥ भ० ॥२९॥
चउशत दश दीक्षा निज कर थी, दीधी प्रायः गणिन्द ।
अखिल जक्त में जेहनो अधिको, तपियो भाल दिनन्द ॥ भ० ॥३०॥
गुण गम्भीर धीर धरणी पर, निर्मल गंग समीर ।
भञ्जन भीर वीर सम करणी, तरणी तारण तीर ॥ भ० ॥३१॥

अमृत झरणी शिव निसरणी, करणी करण सप्रेम।
वाणी भ्रमहरणी तसु महिमा, वरणी जावै केम ॥ भ० ॥३२॥
प्रबल प्रतापी कुमता कापी, धापी सुमता स्वच्छ।
जन भ्रमता तमता उतापी, आपी अद्भुत लच्छ ॥ भ० ॥३३॥
इत्यादिक गुण गणवत्सल ना, समस्याँ चित्त अहलाद।
वह गुण वा प्रभु मोहनी मुद्रा, खिण २ आवै याद ॥ भ० ॥३४॥
उगणीसै तेराणू वर्षे, द्वितीय भाद्र शुभ मास।
अल्प बुद्धि थी गणि गुणगाया, पटधर आण हुलास ॥ भ० ॥३५॥

नैया म्हांरी तार दीज्योजी।

(लय—सहियों ए नेमीसर वनड़े नें गिरनारि जाताँ राख लीज्यो हे।)

सती छोगाँजी रा लाडला रे प्रभु। अन्तरजामी, स्वामी कालू गणिन्द, अरज अवधार लीज्योजी। अरज० २। अन्दाताजी, भव सागर से पार, नैया म्हांरी तार दीज्योजी। नैया० २। अन्दाताजी, चरणाँ रो चाकर जाण बेड़ा म्हाँरा पार कीज्योजी ॥ ए आंकड़ी ॥ चित्त चकोर ज्यूं मांहरो रे प्रभु। अन्तरजामी आप हो पूनम-चन्द, फन्द सब दूर कीज्योजी ॥ १ ॥ तूं जिन-शासण सेवरो रे प्रभु, अन्तरजामी तूं जिन-शासण छत्र, इसो नहीं ओर बीजोजी ॥ २ ॥ भाग्य-बली पुण्य पोरसा रे प्रभु। अन्तरजामी, जिम सिद्धारथ पुत्र, सुयश जग में लहीज्योजी ॥ ३ ॥ तुम शासण के रंग स्यूं रे

प्रभु। अन्तरजामी, रंग मजीठ समान, म्हाँरो मनड़ो रंगीज्योजी ॥ ४ ॥ सोवत जागत एक सो रे प्रभु। अन्तरजामी तुम शासण रो ही ध्यान, रहूं रस रंग भीज्योजी ॥ ५ ॥ तूं परमेश्वर तूं धणी रे प्रभु। अन्तरजामी, तूं हिवड़ा रो हार, चरण चित्तड़ो रमीज्योजी ॥ ६ ॥ सुपना में पिण और नी रे प्रभु। अन्तरजामी, नहीं परवाह लिगार, चाहे तूंही एक रीझयोजी ॥ ७ ॥ वड़-शाखा जिम विस्तरो रे प्रभु, अन्तरजामी, जब लग रवि शशि सृष्टि, अचल प्रभुता रहीज्योजी ॥ ८ ॥ 'सोहन' सविनय विनवै रे प्रभु। अन्तरजामी सेवक पर शुभ दृष्टि, सदा इकसी रखीज्योजी ॥ ९ ॥

जम्बू कुमार की सज्झाय

(लय—रे घन्ना आज निहेजो रे कांय)

राजग्रही ना वासियाजी, जम्बू नाम कुंवार। ऋषभदत्त रा डीकराजी, भद्रा ज्यांरी माय। जम्बू कह्यो मानले जाया, मत ले संयम भार ॥ १ ॥ सुधर्मा स्वामी पधारियाजी, राजग्रही रे मांय। कोणक बान्दण चालियो जी, जम्बू बान्दण जाय ॥ ज० ॥ २ ॥ भगवन्त वाणी बागरीजी, वरसै अमृतधार। वाणी सुणी वैरागियोजी, जाण्यो अथिर संसार ॥ ज० ॥ ३ ॥ घर आया माता कनेजी, विनवै बारम्बार। अनुमत दीज्यो मोरा मातजी, माता लेस्यं संजम भार ॥ माता मोरी साँभलो,

जननी लेस्यूं संजम भार ॥ ४ ॥ ये आठूं ही कामणी जम्बू, अपछर रे उणिहार। परणी ने किम परिहरो, ज्यांरो किम निकलै जमवार ॥ ज० ॥ ५ ॥ ये आठूं ही कामणी जम्बू, तुझ विना विलखी थाय। रमियाँ ठमियाँ सूं नीसरै, ज्यांरो वदनकमल बिलखाय ॥ ज० ॥ ६ ॥ मतहीणा कोई मानवी माता, मिथ्या मत भरपूर। रूप रमणी सूं राचिया, ज्यांरी नहीं हुवै दुरगति दूर ॥ मा० ॥ ७ ॥ पाल पोष मोटो कियो जम्बू, इम किम दो छिटकाय। मात पिता मेलै भूरता, थारै दया नहीं आवै दिल मांय ॥ ज० ॥ ८ ॥ एक लोटो पाणी पियो, माता मायर बाप अनेक। सगलाँ री दया पालसूं, माता आणी ने चित्त विवेक ॥ मा० ॥ ६ ॥ ज्यूं आंधा रै लाकड़ी, जम्बू तूं म्हारै प्राण आधार। तुझ बिना म्हारै जग सूनो, जाया जननी नो जीतब राख ॥ ज० ॥ १० ॥ रतन जड़त रो पींजरो, माता सूवो जाणै सोही फन्द। काम भोग संसार ना, माता ज्ञानी जाणै भूठा फन्द ॥ मा० ॥ ११ ॥ पंच महाव्रत पालना, जम्बू पांचूं ही मेरु समान। दोष बयालीस टालणा, जम्बू लेणो सूझतो आहार ॥ ज० ॥ १२ ॥ पांच महाव्रत पालस्यूं, माता पांचू ही शिखर समान। दोष बयालीस टालसूं, माता लेस्यूं सूझतो आहार ॥ मा० ॥ १३ ॥ संजम मारग दोहिलो, जम्बू चालणो खाण्डा री धार। नदी किनारे रूंखड़ो, जम्बू जद तद होय विणास ॥ ज० ॥ १४ ॥ चाँद बिना किसी चान्दणी, जम्बू ताराँ बिन किसी रात। बीर बिना किसी बहिनड़ी, जम्बू भरसी बा

तिवार ॥ ज० ॥ ५ ॥ दीपक विना मन्दिर सुनो, जम्बू पु
बिना परिवार। कन्थ विना किसी कामणी, जम्बू झूर
बारूं ही मास ॥ ज० ॥ १६ ॥ मात पिता मेलो मिल्यो, मा
मिल्यो अनन्ती वार। तारण समरथ कोई नहीं, माता पु
पिता परिवार ॥ मा० ॥ १७ ॥ मोह मत करो मोरा मातज
माता मोह कियाँ वन्धै कर्म। हालर हुलर कांई करो, मा
करज्यो जिनजी रो धर्म ॥ मा० ॥ १८ ॥ ए आठूं ही कामण
जम्बू, सुख विलसो संसार। दिन पाछा पड़ियाँ पीछै, थे
लीज्यो संजम भार ॥ ज० ॥ १९ ॥ ए आठूं ही कामणी, मा
समझाई एकण रात। जिनजी रो धर्म पिछाणियो, माता संज
लेसी म्हारै साथ ॥ माता० ॥ २० ॥ मात पिता नें तारिया जम्
तारी छै आठूं ही नार। सासू सुसरा नें तारिया, जम्बू पांच
परभव परिवार ॥ जम्बू भलो चेतियो थे तो लीनो संजम भार
२१ ॥ पांचसै नें सत्ताइस जणा सूं जम्बू लीनो संजम भार
इग्यारै जीव मुगते गया, साधु बाकी स्वर्ग मझार ॥ ज० ॥ २२

कीर्ति के फुंवारे

(लय—इतिहास गा रहा है)

पल-पल उछल रहे हैं, प्रभु-कीर्ति के फुंवारे ।
बेरोक चल रहे हैं, गुरु-ज्ञान के गुबारे ॥ प० ॥ ध्रु० ॥

है दर्शनीय मूर्ति मेरे प्रभु की मञ्जुल ।
दिल भक्ति-पूर्ण लाखों, आखों के हैं सितारे ॥ प० ॥ १ ॥

तुलसी का तेज देखा, औ सूर्य को भी देखा ।
वह कुत्रचिद् विकासी, तुलसी प्रकाश सारे ॥ प० ॥ २ ॥

नैपुण्य है अनूठा, शासन की शासना में ।
प्रति-पल विकास नीति, सर्वज्ञ वाक् सहारे ॥ प० ॥ ३ ॥

भारत के कोने-कोने, है घूमने की चेष्टा ।
कष्टों की है न परवा, उत्साह बेशुमारे ॥ प० ॥ ४ ॥

है धर्म-चक्र चलता, अभिनव अणुव्रतों का ।
अनमी प्रणाम करते, भगवान ज्यों निहारे ॥ प० ॥ ५ ॥

क्या-क्या करूँ प्रशंसा, वदना के लाल की मैं ।
तुलसी की जय विजय हो, यों गूंजते हैं नारे ॥ प० ॥ ६ ॥

उपलक्ष जन्म दिन के, 'सोहन' की कामना यह ।
रहो धर्म लौ जलते, युग-युग प्रभू हमारे ॥ प० ॥ ७ ॥

मंत्री मुनि श्री मगनलालजी की स्मृति में

दोहा

वयोवृद्ध शासन सुखद, मन्त्री मगन महान ।
माह बिद छठ मंगल दिवस, कस्यो स्वर्ग प्रस्थान ॥ १ ॥

अद्भुत अतुल मनोबली, शासन स्तम्भ धीर ।
दृढ़ प्रतिज्ञ सुस्थिर मति, आज विलायो वीर ॥ २ ॥

उदाहरण गुरु-भक्ति को, दिल को वड़ो वजीर ।
सागर-सो गम्भीर वो, आज विलायो वीर ॥ ३ ॥

विनयी विज्ञ विशाल जो, मनो द्रौपदी चीर ।
सफल सुफल जीवन मगन, आज विलायो वीर ॥ ४ ॥

नानव कोठी नहर में, सांझ प्रार्थना सीन ।
सुन सचित्र सारा रह्या, उदासीन आसीन ॥ ५ ॥

रिक्त-स्थान मुनि मगन रो, भरो संघ का संत ।
मगन मगन-पथ अनुसरो, करो मतो मतिवंत ॥ ६ ॥

सुख ! अब कर अनशन सुखे, आज फली तुझ आस ।
हाथाँ में थारै हुयो, बाबै रो सुरवास ॥ ७ ॥

ढाल

(लय—माड़)

मंत्री मुनि मगनेश, थाँरी याद सतावै जी ।
बखतो बखत हमेश, थाँरी याद सतावै जी ॥
याद सतावै बलि बलि आवै, धन्नाँ सुत सुविशेष । थाँ० ।
[ध्रुव पद]

शिशु-सो सरल स्थविर-सो दानी, नौजवान सो जोश ।
बालक वृद्ध युवक समकाले, राख रह्यो नित होश । थाँ० १ ।

मघवा महर, डाँट डालिम री, कालू-कृत सनमान ।
साठ वरस समभावे सहताँ, पायो मंत्री स्थान । थाँ० २ ।

मधु-सो मधुर, कुटक-सो कड़वो, कोमल ज्यूं अकतूल ।
वज्र कठोर समय लख वरत्यो, सुगुरु-दृष्टि अनुकूल । थाँ० ३ ।

गण गणपति जीवन में कीन्हो, निज व्यक्तित्व विलीन ।
सदा सोचतो रह्यो संघ-हित, अभिनव पद आसीन । थाँ० ४ ।

तहत सिवाय शब्द नहिं कहणो, रहणो संयम राख ।
आचारज जब दे रे ! ओलंभो, आ मंत्री री भाख । थाँ० ५ ।

चोटाँ खमणी सीखो चतुराँ ! बधसी थांरो तोल ।
हिम्मत री किम्मत मत भूलो, अै मंत्री रा बोल । थाँ० ६ ।

खिण राजी खिण में नाराजी गिरगिट का-सा रूप ।
स्वार्थ साधना हित मत ल्यावो, मंत्री वचन अनूप । थाँ० ७ ।

अवनीताँ स्यूं स्नेह मत जोड़ो, हो चाहे सागी बाप ।
आचार्यां री मीट आराधो, मंत्री रो इन्साफ । थाँ० ८ ।

करड़ो ही काम पड़्याँ पण सुगणाँ! मत लोपो गण-लीक ।
गण गणपति है जीवन जामाँ, आ मंत्री री सीख । थाँ० ६ ।

सोवत जागत ऊठत बैठत, शासण हित रो ध्यान ।
गण गणपति हि प्राण समर्पण, मंत्री रो अभियान । थाँ० १० ।

अद्भुत स्मरण-शक्ति शासण रो, हो जीवित इतिहास ।
सहनशीलता की प्रति-मूर्ति, स्थिरमति दृढ़ विश्वास । थाँ० ११ ।

सुणतो घणी सुणातो थोड़ी, दिल ऊँडो दरियाव ।
अधिक काम कम बात सुहाती, रहता सुघड़ सुभाव । थाँ० १२ ।

इक्याणूं वर्षां री वय में, संयम चउत्तर साल ।
मघवा गणि रो हाथ धरायो, विनय विवेक विशाल । थाँ० १३ ।

काया-कष्ट चउतीस वर्ष लग, सात वर्ष अति घोर ।
सह्यो अटल दिल, रह्यो मनोबल, प्रतिपल, सबल सजोर । थाँ० १४ ।

दो-दो लम्बी यात्रा रो आनन्द लियो थिर ठाण ।
पण तीजी रे बीच अचानक, कीन्हो स्वर्ग प्रयाण । थाँ० १५ ।

सेवक कहूँ (या) सहायक म्हाँरो, सलाहकार मंत्रीश ।
उपकारी अधिकारी गुण रो "तुलसी" है नत शीश । थाँ० १६ ।

घोर तपस्वी मुनि श्री सुखलालजी के संथारा के उपलक्ष में

ढाल

(लय—और रंग दे रे वाल्या और रंग दे)

घोर तपसी हो मुनि घोर तपसी,
थांरो नाम उठ उठ जन भोर जपसी।
घोर तपसी हो 'सुख' घोर तपसी,
थांरो जाप जप्याँ करमाँ री कोड़ खपसी॥ घोर०॥
[ध्रुव पद]

दो सौ वरसाँ री भारी ख्यात है वणी,
थांरो नाम मोटा तपस्याँ रै साथ फबसी।
ओ अनशन आ सहज समता,
लाखाँ लोगाँ रै दिलाँ में थांरी छाप छपसी॥ घोर० २॥

काया पर कुल्हाड़ी व्हाणो काम करड़ो,
सोरी पाटाँ ऊपर बैठ करणी गपसप-सी।
तपस्या आतापना स्वाध्याय करणी,
थांरी सेवा भावना रै लारै सारा दबसी॥ घोर० ३॥

स्वामीजी रो शासन तप संजम री सुरसरी,
इण में न्हावसी जकाँ रो सारो पाप धुपसी।
आपणै शासण री संता! चढ़ती कला,
इणमें घणा ही तप्या है ओ घणा ही तपसी॥ घोर० ४॥

शिखर चढ़्या है और चढ़ता ही रहसी,
गण रो शीश आभै पैर जा पाताल रूपसी ।
इण स्यूं विमुख अवनीत जो होसी,
वां रै भाग रो भानुड़ो जा छिती में छुपसी ॥ घोर० ५ ॥

संजम जीवन जीवो पण्डित मरण मरो,
थांरै दोन्यूं हाथाँ लाडू खावो खुशी रे खुशी ।
लंघी लम्बी यात्रा मंगल फागण वदी,
'सुख' साधना सुखदाई गाई गणी तुलसी ॥ घोर० ६ ॥

दोहा

भद्रोत्तर तप ऊपरै, अनशन दिन इक्कीस ।
घोर तपस्वी 'सुख' मुनी, साधक विश्वावीस ॥

बजरंग बली 'सुख'

मनहर छन्द

विजै वरमाला पहर युद्ध में सिधावो साथी,
गगन नें गप्फी मार लावो निज बाथ में ।
सागर अथाह को थे थाह दो भुजाँ सूं पावो,
धगधगता अंगारा उठावो युग हाथ में ।

ध्रुव की धुजावो धरा हवा में उड़ावो मेरु,
तारां की बतावो पूरी संख्या एक स्यात में।
संथारो सभावो शुद्धि भावाँ की बढ़ावो—
च्यार चाँद थे लगावो आज शासन की ख्यात में।

ढाल

(लय—भीखणजी स्वामी रो शासन म्हानैं घणो सुहावै जी)

धन्य-धन्य बजरंग वली 'सुख' जबर जंग व्रत झाल्योजी।
छती सगत अणसण कर, जिन-शासन उजवाल्योजी॥
छती सगत अणसण कर, माँ को दूध उजाल्योजी॥
[ध्रुव पद]

महाराणा री भूमि उजाली, गोघुंदो उजवाल्योजी।
रण रसियो बण, शिशोदियाँ रो वंश उजाल्योजी॥ ध० १॥

बाल पणै में बण वैरागी, कालू चरण पखाल्योजी।
ज्ञान ध्यान गलतान, सरल दिल संयम पाल्योजी॥ ध० २॥

लाखाँ की स्वाध्याय साल में, कर २ हृदय खुशाल्योजी।
कुटिल कषाय चोकड़ी गज पर, अंकुश डाल्योजी॥ ध० ३॥

करड़ै स्यूं करड़ो पिण गुरु को, हुकम कदे नहिं टाल्योजी।
हाजर हरदम रह्यो, नाक में सल नहिं घाल्योजी॥ ध० ४॥

संत सत्याँ नैं साता देवण, रात दिवस नहिं भाल्योजी।
व्यावच विनय भक्ति कर, तन को सार निकाल्योजी॥ ध० ५॥

सी तापादिक कष्ट सहन कर, जीवन संचै ढाल्योजी।
विविध प्रकार तपस्या स्यूं, अघ-शत्रु प्रजाल्योजी ॥ ध० ६ ॥

भोजन करणो जल नहिं पीणो, सूत्राँ में नहिं चाल्योजी।
छव-छव महिना पीवण मुख में, बूँद न राल्योजी ॥ ध० ७ ॥

बरसाँ पहली भावी अणसण, लेताँ दिल नहिं हाल्योजी।
आजीवन मंत्री-सेवा में, निज तन गाल्योजी ॥ ध० ८ ॥

अड़तालीस बरस लग बावै, बालक ज्यूं रखवाल्योजी।
तपसी रे हाथाँ में, अमरापुर सम्भाल्योजी ॥ ध० ९ ॥

तुलसी कृपया मुलकाँ २ यश परिमल उछाल्योजी।
चढ़ता परिणामा अब, आराधक पद पाल्योजी ॥ध० १०॥

हिम्मत देख परम साथी री, रूं रूं खुशी निहाल्योजी।
पिण 'सोहन' दिल की कमजोरी, विरहो साल्योजी ॥ध० ११॥

तेरापंथ ओलखणां की ढाल

आप हणै नहीं प्राण कूं, नहीं कहि नें हणावै हो।
हणताँ नें भलो न चिन्तवै, ऐसी दया पलावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥ १ ॥

कै तो मूंन ग्रही रहै, कै निर्वद्य गावै हो।
सावद्य काम संसार का, तेतो चित्त में न चावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥ २ ॥

जाच्याँ बिन एक तिणकलो, कर सूं नाहिं उठावै हो ।
भोग तज्या भामण तणा, माठी नजर न ल्यावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥ ३ ॥

रत्न अनें कवडी भणीं, नहीं राखै रखावै हो ।
जे जे उपग्रह जिण कह्या, तिण सूं अधिक न ल्यावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥ ४ ॥

पञ्च महाव्रत पालता, नव विध शील पलावै हो ।
सुमति गुप्त बारह भेद सूं, पूरव कर्म खपावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥ ५ ॥

संजम सतरह भेद सूं, रुड़ी रीत निभावै हो ।
परिषह आयाँ संग्राम में, सूरा जिम साहमा ध्यावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥ ६ ॥

अनाचार बावन तजै, गुण सत्तावीस पावै हो ।
दोष बयांलिस टाल के, असणादिक ल्यावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥ ७ ॥

काज कनागत कार्यं, तिण दिशि नहीं ध्यावै हो ।
ताक २ तेरापंथी, ताजा घर नहीं जावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥ ८ ॥

निन्दत छेदत ज्यो कोई, तिण सूं नाँहीं रिसावै हो ।
कोईक दाता दान को, तिण सूं राग न ल्यावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥ ९ ॥

कमल कादा से दूर रहै, जिम जग में नांहि लिपावै हो ।
थापी थानक छांड नें, बासा दूर दिरावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥१०॥

हिंसा धर्म उड़ाय नें, दया धर्म दिपावै हो ।
जिहाँ २ छै जिन नी आज्ञा, तिण में धर्म बतावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥११॥

सूत्तर में जिन भाषियो, तेहवो दान दिरावै हो ।
दान कुपातर नें दियाँ, देताँ आडा न आवै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥१२॥

बरजणो तो जिहाँ ही रह्यो, मुनि बहिरण जावै हो ।
देखत मुंगत फकीर को, तो पाछा फिर आवै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥१३॥

नव तत्व निर्णय नित करै, समकित नें सरधावै हो ।
मुक्ति नगर मुशकिल घणों, तिण रो मार्ग बतावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥१४॥

तेरा वचन बिमास नें, सूत्तर सीख सीखावै हो ।
तिण बयणा सूं भरत में, भवियण को चलावै हो ।
सोही तेरापंथ पावै हो ॥१५॥

आपै समकित औषधी, वैद्य भोजन पचावै हो ।
तेरापंथी वैद्य ज्यूं, धर्म-भोजन रुचावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥१६॥

मैल खोट प्रते काढ़वा, सोनी सोनो तावै हो ।
ज्यूं तेरापंथी परखियाँ, हृदय न्याय ल्यावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥१७॥

तेरापन्थ ओलख्याँ पाछै, दूजा दाय न आवै हो ।
अमृत भोजन जीमियाँ, कूकस कुण खावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥१८॥

कहै कथादि बारता, सूतर सूं मिलावै हो ।
तुझ वचनाँ से नहीं मिलै, ताकूं तुरत उडावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥१९॥

सूत्र न्यायें पाखण्ड भणी, भीखनजी ओलखावै हो ।
तेरापन्थ ते धारियो, दया धर्म बतावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥२०॥

भीखनजी तेरापंथी, तिण में ए गुण पावै हो ।
प्रभू तेरा पन्थ रा, शोभो गुण गावै हो ॥
सोही तेरापंथ पावै हो ॥२१॥

कर्मनी सिज्झाय

देव दानव तीर्थङ्कर गणधर, हरि हर नरवर सबला ।
कर्म प्रमाणे सुख दुख पाम्या, सबल हुवा महा निबला रे ॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई ॥ १ ॥ आंकड़ी

आदीश्वरजी नें कर्म अटाऱ्या, वरस दिवस रह्या भूखा ।
वीर नें बारह वरस दुख दीधा, उपना ब्राह्मणी कूखा रे ।
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई ॥ २ ॥

बत्तीस सहस्त्र देशां रो साहिब, चक्री सनतकुमार ।
सोलह रोग शरीर में उपना, कर्म कियो तनु छार रे ॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई ॥ ३ ॥

साठ सहस्त्र सुत माऱ्या एकण दिन, जोध जवान नर जैसा ।
सागर हुवो महा पुत्र नो दुखियो, कर्म तणा फल ऐसा रे ॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई ॥ ४ ॥

कर्म हवाल किया हरिचन्द नें, वेची सु तारा राणी ।
बारह वरस लग माथै आण्यो, नीच तणे घर पाणी रे ॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई ॥ ५ ॥

दधिबाहन राजा नी वेटी, चावी चन्दन बाला ।
चौपद ज्यूं चौहटा में वेची, कर्म तणा ए चाला रे ॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई ॥ ६ ॥

सम्भूम नामें आठवों चक्री, कर्मां सायर न्हाख्यो ।
सोलह सहस्त्र यक्ष ऊभा देखै, पिण किण ही नवि राख्यो रे ।
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई ॥ ७ ॥

ब्रह्मदत्त नामें बारहवों चक्री, कर्मां कीधो आन्धो ।
इम जाणी प्राणी थे कांई, कर्म कोई मती बान्धो रे ॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई ॥ ८ ॥

छप्पन कोड़ यादव नो साहिब, कृष्ण महाबली जाणी।
अटवी मांही मुवो एकलड़ो, बिल-बिल करतो पाणी रे॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई॥ ६॥
पाण्डव पांच महा जूझारा, हारी द्रौपदी नारी।
बारह वरस लग वन रड़बड़िया, भमिया जेम भिखारी रे॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई॥ १०॥
वीस भुजा दश मस्तक हुँता, लक्ष्मण रावण मार्‌यो।
एकलड़ै जग सहु नर जीत्यो, ते पिण कर्मा सूं हार्‌यो रे॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई॥ ११॥
लक्ष्मण राम महा बलवन्ता, अरु सतवन्ती सीता।
कर्म प्रमाणे सुख दुःख पाम्या, बीतक बहुतसा बीता रे॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई॥ १२॥
सम्यक्त्व धारी श्रेणिक राजा, बेटे बान्ध्यो मुसका।
धर्मी नर नें कर्मा धकायो, कर्मा सूं जोर न किसका रे॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई॥ १३॥
सती शिरोमणि दौपदी कहिये, जिन सम अवर न कोई।
पांच पुरुष नी हुई ते नारी, पूर्व कर्म कमाई रे॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई॥ १४॥
ाभा नगरी नो जे स्वामी, साचो राजा चन्द।
ई कीधो पक्षी कूकड़ो, कर्मा न्हाख्यो ते फन्द रे॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई॥ १५॥

ईश्वर देव पारवती नारी, कर्त्ता पुरुष कहावै।
अहनिशि महल मसाण में वासो, भिक्षा भोजन खावै रे॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई॥ १६॥

सहस्त्र किरण सूरज परितापी, रात दिवस रहे अटतो।
सोलह कला शशिधर जग चावो, दिन २ जाये घटतो रे॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई॥ १७॥

इम अनेक खंड्या नर कर्मे, भांज्या ते पिण साजा।
ऋद्धिहर्ष कर जोड़ी नें विनवें, नमो नमो कर्म महाराजा रे॥
प्राणी, कर्म समो नहीं कोई॥ १८॥

अनाथी मुनि का स्तवन

राय श्रेणिक बाड़ी गयो, दीठो मुनि एकंत।
रूप देखी अचरज थयो, राय पूछै रे कुण वृतन्त॥
श्रेणिक राय, हूं रे अनाथि निग्रन्थ,मैंतो लीधो रे साधुजी रो पंथ।
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ॥ १॥

कोसम्बी नगरी हूँती, पिता मुझ परघल धन्न।
परवार पूरै परवर्यो, तिणरो हूँ कुंवर रतन्न॥
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ॥ २॥

एक दिवस मुझ वेदना, उपनी ते न खमाय।
मात पिता झुर्या घणा, न सक्या रे मुझ वेदना वंटाय ॥
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ ॥ ३ ॥

पिताजी म्हारै कारणै, खरच्या बहुला दाम।
तो पिण वेदना गइ नहीं, एहवो रे अथिर संसार ॥
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ ॥ ४ ॥

माता पिण म्हारै कारणै, धरती दुःख अथाय।
उपाव तो किया घणा, पिण म्हारै रे सुख नहीं थाय ॥
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ ॥ ५ ॥

वन्धु पिण म्हारै हुंता, एक उदरना भाय।
औषध तो बहु विध किया, पिण कारी न लागी काय ॥
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ ॥ ६ ॥

बहिनां पिण म्हारै हूँती, बड़ी छोटी ताय।
बहु बिध लूण उबारती, पिण म्हारै रे सुख नहीं थाय ॥
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ ॥ ७ ॥

गोरड़ी मन मोरड़ी, गोरड़ी अबला बाल।
कोरड़ी वेदना मैं सही, न सकी रे, मुझ वेदना बंटाय ॥
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ ॥ ८ ॥

आंख्याँ बहु आँसू पड़ै, सींच रही मुझ काय।
खाण पाण विभूषा तजी, पिण म्हारै रे समाधि न थाय ॥
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ ॥ ९ ॥

प्रेम विलुधी पदमणी, मुझ स्यूं अलगी न थाय।
बहु विध वेदना मैं सही, वनिता रही रे विललाय॥
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ॥१०॥

बहु राजवैद्य बुलाविया, किया अनेक उपाय।
चन्दन लेप लगाविया, पिण म्हारै रे समाधि न थाय॥
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ॥११॥

जग में कोइ किण रो नहीं, तब मैं थयो रे अनाथ।
वीतरागजी रै धर्म बिना, नहीं कोई रे मुगति रो साथ॥
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ॥१२॥

वेदना जावै मांहरी, तो लेऊं संजम भार।
इम चिन्तवताँ वेदना गई, प्रभाते रे थयो अणगार॥
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ॥१३॥

गुण सुण राजा चिन्तवै, धन २ ए अणगार।
राय श्रेणिक समकित लीधी, वान्दी आयो रे नगर मझार॥
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ॥१४॥

अनाथीजी रा गुण गांवताँ, कटै कर्मांरी कोड़।
गणि समयसुन्दर इम भणै, ज्यांनें वन्दूं रे बे कर जोड़॥
श्रेणिक राय, हूँ रे अनाथी निग्रन्थ॥१५॥

भावै भावना

(लय—साहजी कठै पोढ़ै किण जागाँ सोवै रे)

पुन्य पाप पूर्व-कृत, सुख दुःख ना कारण रे ।
पिण अन्य जन नहीं, इम करै विचारण रे ॥
भावै भावना ॥ १ ॥ ध्रुव पद ॥

पूरव-कृत अघ जे, भोगवियाँ मुकाई रे ।
पिण वेद्याँ बिना, नहीं छूटको थाई रे ॥ २ ॥

जे नरक विषै म्हैं, दुःख सह्यो अनन्तो रे ।
तो ए मनुष्य नो, किंचित् दुःख हुँतो रे ॥ ३ ॥

जे समकित बिण म्हैं, चारित्र नी किरिया रे ।
बार अनन्त करी, पिण काज न सरिया रे ॥ ४ ॥

हिव समकित चारित्र, दोनूं गुण पायो रे ।
वेदन सम पणै, सह्याँ लाभ सवायो रे ॥ ५ ॥

ओतो अलपकाल में, तूटै अघ-जालो रे ।
भगवती सूत्र में, कह्यु परम कृपालो रे ॥ ६ ॥

सूको त्रिण पूलो, जिम अग्नि विषेहो रे ।
शीघ्र भस्म हुवै, तिम कर्म दहेहो रे ॥ ७ ॥

जिम तप्त-तवै जल, बिंदु विललावै रे ।
तिम दुःख समचित्ते सह्याँ, अघ क्षय थावै रे ॥ ८ ॥

दुःख अल्प काल में, मुनि गजसुकमालो रे ।
समभावे करी, लही शिव पट्ट शालो रे ॥ ९ ॥

अति तीव्र वेदना, बहु वर्ष विचारो रे ।
सही शिव संचर्‍या, चक्री सनतकुमारो रे ॥ १० ॥
जिन कल्पिक साधु, लिये कष्ट उदीरो रे ।
तो आव्यां उदय, किम थाय अधीरो रे ॥ ११ ॥
सही चरम जिनेश्वर, वेदन असरालो रे ।
समभावे करी, तोड़्या अघजालो रे ॥ १२ ॥
कष्ट अल्प काल रो, पछै सुर पद ठामो रे ।
काल असंख्य लगे, दुख रो नहीं कामो रे ॥ १३ ॥
सह्या बार अनंती, दुःख नर्क निगोदो रे ।
तो ए वेदना, सहूँ आण प्रमोदो रे ॥ १४ ॥
रह्यो गर्भावासे, सवा नव मासो रे ।
तो या वेदना, सहूँ आण हुलासो रे ॥ १५ ॥
अति रोग पीड़ाणा, जग दुःख बहु पावै रे ।
ते संभरी सहै, वेदन समभावै रे ॥ १६ ॥
शूली फांसी फुन, भालाँ सूं भेदै रे ।
बहु जन जग विषै, अति वेदन वेदै रे ॥ १७ ॥
ते तो जीव अज्ञानी, हूँ तो ज्ञान सहितो रे ।
समभावे सहूँ, वेदन धर प्रीतो रे ॥ १८ ॥
ए तो सुख नो हेतु, सहियाँ सम भावै रे ।
बहु अघ निर्जरै, पुन्य थाट बंधावै रे ॥ १९ ॥
बहु कर्म निरजर्‍याँ, थोड़ाँ भव मांह्यों रे ।
शिव पद संचरै, आवागमन मिटायो रे ॥ २० ॥

सुर-सुख नी बांछा, मन में नहीं कीजै रे ।
सुख सुरलोक ना, दुःख हेतु कहीजै रे ॥ २१ ॥
सुख आतमीक नी, बांछा मन करतो रे ।
इह विधि वेदना, सहै समचित धरतो रे ॥ २२ ॥
पुद्गल सुख पामला, तिण में गृद्ध थावै रे ।
तो अघ संचो हुवै, अधिको दुःख पावै रे ॥ २३ ॥
नर इन्द सुरिन्द ना, काम भोग कंटाला रे ।
तसु बांछा कियाँ, दुःख परम पयाला रे ॥ २४ ॥
तिण सूं मुनि वेदन, सहै शिव-सुख कामी रे ।
धर्म शुक्ल भलो, ध्यावै चित्त धामी रे ॥ २५ ॥
बहु कर्म निर्जरा, तिण ऊपर दृष्टि रे ।
राखै महामुनि, समता अति श्रेष्ठी रे ॥ २६ ॥
स्वजनादिक ऊपर, छाँड़ै स्नेह-पाशा रे ।
अति निर्मल चिते, शिवपुर नी आशा रे ॥ २७ ॥
संग स्त्रियादिक ना, जाणै भुयंग समाणा रे ।
समभावे रहै, मुनिवर महा स्याणा रे ॥ २८ ॥
क्रोधाधिक टाली, सम भावन सारो रे ।
दृढ़ चित्त करि धरै, ए अष्टम द्वारो रे ॥ २९ ॥

दश दान की ढाल

दोहा

दश दान भगवन्त भाखिया, सूत्र ठाणांग मांय ।
गुण निपन्न नाम छै तेहना, भोलाँ नें खबर न काय ॥ १ ॥
धर्म अधर्म दो मूल का, प्रसिद्ध लोक में एह ।
आठाँ को अर्थ ऊन्धों करै, मिश्र धर्म कहै तेह ॥ २ ॥
मिश्र धर्म प्ररूपता, कूड़ो वाद करन्त ।
आठाँ में अधर्म कह्यो, साम्भलज्यो दृष्टान्त ॥ ३ ॥
आम नीम के रूंख नो, जुदो जुदो विस्तार ।
नीम निमोली तेल खल, नीम तणो परिवार ॥ ४ ॥
इम हिज आठूँ दान नो, अधर्म तणो परिवार ।
धर्म दान में मिलै नहीं, श्रीजिन आज्ञा बार ॥ ५ ॥
इतरा में समझो नहीं, तो कहूँ भिन्न-भिन्न भेद ।
विवरा सहित बताइयाँ, मत कोई करज्यो खेद ॥ ६ ॥

ढाल

कृपण दीन अनाथ ए, म्लेच्छादिक त्यांरी जात ए ।
रोग शोक ने आरत ध्यान ए, त्याँने दे अनुकम्पा दान ए ॥१॥
त्याँनें देवै मूलादिक जमीकंद ए, तिण में अनंत जीवाँ रा फंद ए ।
तिण दियाँ केवै मिश्र धर्म ए, तिणरै उदै आया मोह कर्म ए ॥२॥
लूणादिक पृथवी काय ए, आपै अग्नि ढोलै पाणी वाय ए ।
देवै शस्त्र विविध प्रकार ए, इण दान सूं रुलै संसार ए ॥३॥

बन्धीवानादिक नें काज ए, त्यांनें कष्ट पड्याँ देवै साज ए ।
थोरी बावरी भील कसाई नें ए, सचित्तादिक द्रव्य खवाई नें ए ॥४॥
छोड़वा देवै ग्रन्थ ताम ए, संग्रह दान छै तिण रो नाम ए ।
ए तो संसार रो उपगार ए, अरिहन्त नी आज्ञा बार ए ॥५॥
ग्रह करड़ा लागा जाण ए, सुणी लागी पनोती आण ए ।
फिकर घणी मरवा तणी ए, बले कुटुम्ब तणी जतना भणी ए ॥६॥
भय रो घाल्यो देवै आम ए, भय दान छै तिण रो नाम ए ।
ते लेवै छै कुपात्र आय ए, तिण मिश्र में किहाँ थी थाय ए ॥७॥
खर्च करै मुवाँ रै केड़ ए, जिमावै न्यात नें तेड़ ए ।
तीन बारा दिन अनुमान ए, चौथो कालुणी दाण ए ॥८॥
बले बरस छमासी श्राद्ध ए, जिम तिम करै कुल मर्याद ए ।
मुवाँ पहिली खर्च करै कोय ए, घणां नें तृप्त करै सोय ए ॥९॥
आरम्भ कियाँ नहीं धर्म ए, जिमायाँ पिण बन्धसी कर्म ए ।
बुद्धिवंता करजो विचार ए, या में संवर निर्जरा नहीं लिगार ए ॥१०॥
घणा री लज्जा वश थाय ए, सांकड़े पड्याँ देवै ताय ए ।
देवै सचित्तादिक धन धान्य ए, ए तो पांचमों लज्जा दान ए ॥११॥
ए तो सावद्य दान साक्षात् ए, तो दियो कुपात्र हाथ ए ।
तिण में कहै मिश्र धर्म ए, तिण थी निश्चय बन्धसी कर्म ए ॥१२॥
मुकलावो पहरावणी मुसाल ए, सगाँ ने जुवा जुवा सम्भाल ए ।
त्यांने द्रव्य देवै यश नें काम ए, गर्वदान छै तिण रो नाम ए ॥१३॥
कीर्तियावादी मल्ल ए, रावलियाँ रामत चल्ल ए ।
नट भौपा आद विशेष ए, दान देवै त्यांने द्रव्य अनेक ए ॥१४॥

इण दान थी बन्धै कर्म ए, मूर्ख कहै मिश्र धर्म ए।
जेहनी प्रत्यक्ष खोटी बात ए, खोटी श्रद्धा नें मूल मिथ्यात ए ॥१५॥
गणिकादिक सेवै कुशील ए, दान दे त्यांनें करावै केल ए।
ए तो प्रत्यक्ष खोटो काम ए, अधर्म दान छै तिण रो नाम ए ॥१६॥
सूत्र अर्थ सिखाय ए, शुद्ध मारग आणै ठाय ए।
आपै समकित चारित्र एह ए, धर्म दान छै आठमो तेह ए ॥१७॥
बली मिलै सुपात्र आण ए, देवै निर्दोषण द्रव्य जाण ए।
ए तो दान मुक्त रो मार्ग ए, तिण दियाँ दारिद्र जावै भाग ए ॥१८॥
छः काय मारण रा त्याग ए, कोई पच्चखे आणी वैराग ए।
अभय दान कह्यो जिनराय ए, धर्म दान में भिलियो आय ए ॥१९॥
सचित्तादिक द्रव्य अनेक ए, उधारा जेम देवै विशेष ए।
पाछो लेवा रो मन में ध्यान ए, नवमों कान्तिति दान ए ॥२०॥
लेणायत ने देवै जेह ए, हांती नेतादिक तेह ए।
पाछो लेवणरो एकान्त काम ए, कांतिति दान छै तिणरो नाम ए॥२१॥
नवमें दशमें दान नी चाल ए, धुर वोरै वालो ख्याल ए।
ज्ञानी मानै सावद्य मांय ए, तिण में मिश्र किहाँ थी थाए ए ॥२२॥
दश दान रो एह विचार ए, संक्षेप कह्यो विस्तार ए।
वीर नी आज्ञा में दान एक ए, आज्ञा बारै दान अनेक ए ॥२३॥
असंयती घरे आवियो ए, निर्दोषण आहार बहिरावियो ए।
तिण नें दियाँ एकन्त पाप ए, भगवती में कह्यो जिन आप ए ॥२४॥
एम जाणी नें करो विचार ए, आठ अधर्म तणो परिवार ए।
घणा सूत्राँ नी साख ए, श्रीवीर गया छै भाख ए ॥२५॥
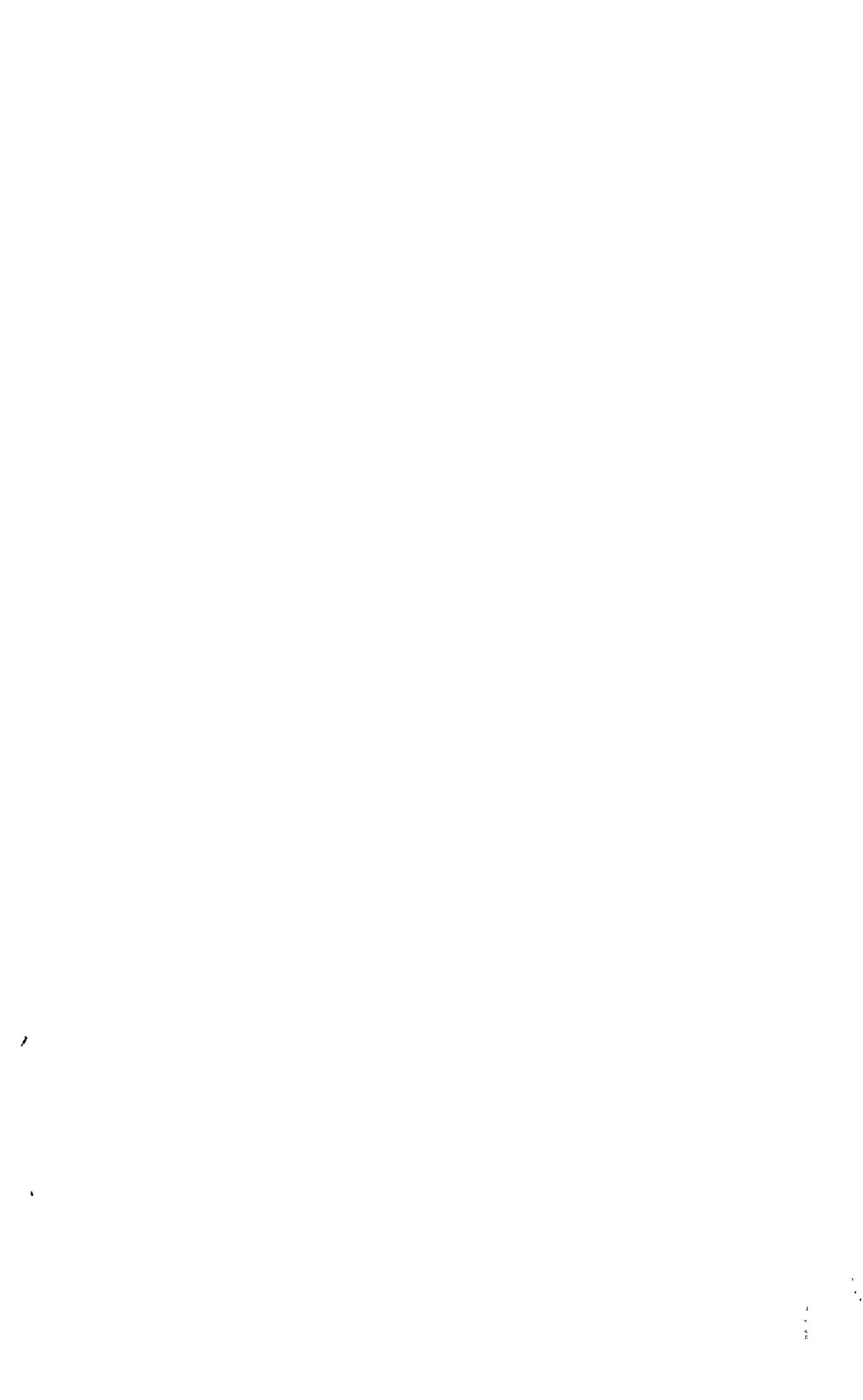
मुणिन्द मोरा, तीजै पट ऋपराय ।
खेतसीजी सुखकारी रे, स्वामी मोरा ॥
मुनि-पिता रे, मोरा स्वाम ॥ ६ ॥

मुणिन्द मोरा, सम दम उदधि सुहाय ।
हेम हजारी भारी रे, स्वामी मोरा ॥
गुणरता रे, मोरा स्वाम ॥ ७ ॥

मुणिन्द मोरा, जय जश करण जिहाज ।
दीपगणी दीपक-सा रे, स्वामी मोरा ॥
महामुनि रे, मोरा स्वाम ॥ ८ ॥

मुणिन्द मोरा, गणपति में सिरताज ।
विदेह क्षेत्र प्रगटिया रे, स्वामी मोरा ॥
महाधुनी रे, मोरा स्वाम ॥ ९ ॥

मुणिन्द मोरा, अमियचन्द अणगार ।
महातपस्वी वैरागी रे, स्वामी मोरा ॥
गुण निलो रे, मोरा स्वाम ॥ १० ॥

मुणिन्द मोरा, जीत सहोदर सार ।
भीम जबर जयकारी रे, स्वामी मोरा ॥
अति भलो रे ... म ॥ ११

मुणिन्द मोरा, कोदर ... ।
रामसुख ऋषि रूड़ो रे, ... ।
गाजतो रे, ... १२ ।

मुणिन्द मोरा, शिवदायक शिव सूर।
सतीदास सुखकारी रे, स्वामी मोरा॥
गाजतो रे, मोरा स्वाम॥ १३॥

मुणिन्द मोरा, उभय पिथल वर्द्धमान।
साम राम युग बंन्धव रे, स्वामी मोरा॥
नेम स्यूं रे, मोरा स्वाम॥ १४॥

मुणिन्द मोरा, हीर वखत गुण खान।
थिरपाल फते सु जपिये रे, स्वामी मोरा॥
प्रेम स्यूं रे, मोरा स्वाम॥ १५॥

मुणिन्द मोरा, टोकर नें हरनाथ।
अखयराम सुखरामज रे, स्वामी मोरा॥
ईश्वरु रे, मोरा स्वाम॥ १६॥

मुणिन्द मोरा, राम शम्भु शिव साथ।
जवान मोती जाचा रे, स्वामी मोरा॥
दमीश्वरु रे, मोरा स्वाम॥ १७॥

मुणिन्द मोरा, इत्यादिक बहु सन्त।
बले समणी सुखकारी रे, स्वामी मोरा॥
दीपती रे, मोरा स्वाम॥ १८॥

मुणिन्द मोरा, कलु महा गुणवन्त।
तीन बन्धव नी माता रे, स्वामी मोरा॥
जीपती रे, मोरा स्वाम॥ १९॥

मुणिन्द मोरा, गंगा नें सिणगार।
जैताँ दोलाँ जाणी रे, स्वामी मोरा॥
महासती रे, मोरा स्वाम॥२०॥

मुणिन्द मोरा, जोताँ महा जश धार।
चम्पा आदि सयाणी रे, स्वामी मोरा॥
दीपती रे, मोरा स्वाम॥२१॥

मुणिन्द मोरा, शासण महा सुखकार।
अमर सुरी अधिष्ठायक रे, स्वामी मोरा॥
दायक रे, मोरा स्वाम॥२२॥

मुणिन्द मोरा, दवदन्ती जैयन्ती सार।
अनुकूल बली इन्द्रानी रे, स्वामी मोरा॥
सहायका रे, मोरा स्वाम॥२३॥

मुणिन्द मोरा, उगणीसै पनरै उदार।
फागुण सुदि तिथि दशमी रे, स्वामी मोरा॥
गाइयो रे, मोरा स्वाम॥२४॥

मुणिन्द मोरा, जय जश सम्पति सार।
बीदासर सुख साता रे, स्वामी मोरा॥
पाइयो रे, मोरा स्वाम॥२५॥

अठारह पाप की ढाल

दोहा

आज्ञा श्री अरिहन्त नी, निरवद्य दान में जाण।
सावद्य दान में स्थाप नें, मूर्ख मांडी ताण ॥ १ ॥
मिश्र धर्म प्ररूप नें, नहीं सूत्र नो न्याय।
लोकाँ नें गेरै फन्द में, कूड़ा चौज लगाय ॥ २ ॥
अव्रत आस्रव में कह्यो, श्रीजिन मुख से आप।
सेयाँ सेवायाँ भलो जाणियाँ, तीनूं करणाँ पाप ॥ ३ ॥
व्रत धर्म श्री जिन कह्यो, अव्रत अधर्म जाण।
मिश्र मूल दीसै नहीं, करै अज्ञानी ताण ॥ ४ ॥

ढाल

जिन भाख्या पाप अठार, सेयाँ नहीं धर्म लिगार।
शंका मत आणज्यो ए, सांची करि जाणज्यो ए ॥ १ ॥
जो थोड़ो घणो करै पाप, तिण थी होय सन्ताप।
मिश्र नहीं जिन कह्यो ए, समदृष्टि श्रद्धियो ए ॥ २ ॥
केई कहै अज्ञानी एम, श्रावक पौषाँ नहीं केम।
भाजन रत्नाँ तणो ए, नफो अति घणो ए ॥ ३ ॥
तिण रो नहीं जाणै न्याय, त्यांनें किम आणीजै ठाय।
वहदो घालियो ए, झगड़ो झालियो ए ॥ ४ ॥
हिवै सुणज्यो चतुर सुजान, श्रावक रत्नाँ री खान।
व्रतां करी जाणज्यो ए, उलटी मत ताणज्यो ए ॥ ५ ॥

कोई रूंख बाग में होय, आम धत्तूरो दोय ।
फल नहीं सारखा ए, कीजो पारखा ए ॥ ६ ॥
आमाँ सूं लिव लाय, सींचै धत्तूरो आय ।
आशा मन अति घणी ए, आम लेवण तणी ए ॥ ७ ॥
आम गयो कुम्हलाय, धत्तूरो रह्यो हढ़ाय ।
आवी नें जोवै जरै ए, नयनाँ नीर झरै ए ॥ ८ ॥
इण दृष्टान्ते जाण, श्रावक व्रत अम्ब समान ।
अव्रत अलगी रही ए, धत्तूरा सम कही ए ॥ ९ ॥
सेवावै अव्रत कोय, व्रताँ स्हामो जोय ।
ते भूला भ्रम में ए, हिन्सा धर्म में ए ॥१०॥
अव्रत से बन्धै कर्म, तिण में नहीं निश्चय धर्म ।
तीनूं करण सारखा ए, विरला नें पारखा ए ॥११॥
खाधाँ बन्धै कर्म, खुवायाँ मिश्र धर्म ।
ए झूठ चलावियो ए, मूर्ख मन भावियो ए ॥१२॥
मिश्र नहीं साक्षात, ते किम श्रद्धीजे बात ।
अक्ल नहीं मूढ़ में ए, पड़िया रूढ़ में ए ॥१३॥
पोते नहीं बुद्धि प्रकाश, बली लाग्यो कुगुराँ रो पाश ।
निर्णय नहीं करै ए, ते भव-सागर पड़ै ए ॥१४॥
साधु संगति थाय, सुणै एक चित्त लगाय ।
पक्षपात परिहरै ए, ज्यूं खबर बेगी पड़ै ए ॥१५॥
आनन्द आदि दे जाण, श्रावक दशूं बखाण ।
ते पड़िमा आदरी ए, चर्चा पाधरी ए ॥१६॥

जे जे किया छै त्याग, आणी मन वैराग।
ते करणी निर्मली ए, करी नें पूरे रली ए ॥१७॥
बाकी रह्यो आगार, अव्रत में आण्यो आहार।
अपनी जात में ए, समझो इण बात में ए ॥१८॥
अव्रत में दे दातार, ते किम उतरै पार।
मार्ग नहीं मोक्ष रो ए, छान्दो इण लोक रो ए ॥१९॥
दाता अन्न शुद्ध थाय, पात्र अव्रत में ल्याय।
ते किम तारसी ए, किम पार उतारसी ए ॥२०॥
उपासक उववाई अङ्ग, वली सूयगडाङ्ग।
सूत्र थी उद्धरी ए, अव्रत अलगी करी ए ॥२१॥
जूनो गुढ़ मिथ्यात, त्यांरै किम बैसे ए बात।
कर्म घणा सही ए, समझ पड़ै नहीं ए ॥२२॥
आगम नी दे साख, श्री वीर गया छै भाख।
भवियण निर्णय करै ए, भवसागर तिरै ए ॥२३॥
देई सुपात्र दान, न करै मन अभिमान।
ते संसार प्रत करै ए, शिव रमणी वरै ए ॥२४॥
दान सूं तरिया अनन्त, ते भाख गया भगवन्त।
ते दान न जाणियो ए, न्याय न छाणियो ए ॥२५॥
साधु सुपात्र सोय, दाता सूझतो होय।
अशनादिक शुद्ध दियो ए, ते लाभ मोटो लियो ए ॥२६॥
साधु सुपात्र सोय, दाता सूझतो होय।
अशनादिक शुद्ध नहीं ए, बैरायाँ नफो नहीं ए ॥२७॥

कोई मिलै मोटा अणगार, दाता अशुद्ध विचार ।
अशनादिक शुद्ध सही ए, वैरायाँ नफो नहीं ए ॥२८॥
मिलै कुपात्र कोय, दाता अन्न शुद्ध होय ।
पड़िलाभ्याँ तिरै नहीं ए, सूत्र में इम कही ए ॥२९॥
आणों मन विवेक, तीनाँ में शुद्ध नहीं एक ।
प्रतिलाभ्याँ में धर्म नहीं ए, श्री जिन मुख से कही ए ॥३०॥
दाता अन्न पात्र विचार, तीनूं अशुद्ध निहार ।
तो धर्म न भाखै जती ए, झूठ जाणो मती ए ॥३१॥

तीन बोलाँ करि जीव अल्प अऊषो बान्धै

दोहा

शुद्ध साधाँ नें अशुद्ध दान दे, जाणी नें अशुद्ध ले साध ।
दोनूं डूबा बापड़ा, जिनवर बचन विराध ॥ १ ॥

ढाल

तिन बोलाँ करी जीव नें जी, अल्प आउषो बंधाय ।
हिंसा करै प्राणी जीव री, बलि बोलै मूषा वायजी ॥
साधाँ ने अशुद्ध बहिरायजी, हिंसा करि चोखी जायगाँ बणायजी ।
साधाँ ने उतारण री मन मांयजी, तिण रै अशुभ कर्म बंधायजी ॥
तीजै ठाणै कह्यो जिनरायजी, बलि सूत्र भगवती मांयजी ।
श्री वीर कहै गुण गोयमा ॥ ए आंकड़ी ॥ १ ॥

द्वै कोई साधु कारणैजी, इसरा देवै छोर ।
केइ पिण निरतां थकां, डालिया जाझा ब्होळै जायजी ॥
कोळण फूलण नारो जायजी, अनन्ता जीव हैं तिण रै म्हांयजी ।
छोड़े उबर हण्यो छःकायजी, तिण री दया न आणी कायजी ॥
तिण रै अल्प आयु बंधायजी, श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥ २ ॥
जीव छिराबै ठेठ सूं जी, टांकी बन्धावै ताय ।
केइ करि माठा चूंगे, तिण बहुत हण्यो छःकायजी ॥
अनन्ता जीव हणिया जायजी, ते पूरा केम कहिवाय जी ।
साधां ने उतारण रो मन ल्यायजी, तिण मोटो कियो अन्यायजी ॥
तिण रै अल्प आयु बंधायजी, श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥ ३ ॥
किण गरथ दियो थानक कारणैजी, ते पिण मराई छःकाय ।
किण मोल भाड़े ले सोंपावै, तिण थाप राखो है तास जी ॥
इत्यादिक दोषीला कहिवायजी, खीणै खोदै रसों करै लायजी ।
विधि २ सूं मारी छःकायजी, बलि मन मांहि हरषित थायजी ॥
तिण रै अल्प आयुष्य बंधायजी, श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥ ४ ॥
आहार सेभया वस्त्र पातराजी, इत्यादिक द्रव्य अनेक ।
अशुद्ध बहिरावै साधु नें, ते हूआ बिना विवेक जी ॥
त्याँ झाली कुगुराँ री टेकजी, त्याँरै कर्म आडो काळो पेखजी ।
त्याँने सीख न लागै एकजी, गुरु नें पिण भ्रष्ट किया विशेषजी ॥
संयम हुवै तो सूत्र लयो देखजी, श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥ ५ ॥
पाप उदै हुवै एहने, तो पड़ै निगोद में जाय ।
अनन्त उत्कृष्टा भव करै, त्याँ मार अनन्ती खायजी ॥

रहे घणी संकड़ाई मांयजी, जक नहीं निगोद में तायजी ।
बलि मर्ण वेगो वेगो थायजी, उपजै नें विलै हो जायजी ॥
तिण रो लेखो सुणो चित ल्यायजी, श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥६॥
सतरह भव जाझेरा करै, एक श्वासोश्वास मझार ।
एक मुहूर्त्त में भव करै, साडा पैंसठ हजारजी ॥
बलि छत्तीस अधिक विचारजी, एहवी जनम मरण री धारजी ।
मरण पामै अनन्ती बारजी, अनन्त कालचक्र मझारजी ॥
त्यांरो वेगो न आवै पारजी, श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥७॥
कदा पहली पड़ै बंध नरक नों तो, पड़ै नरक में जाय ।
खेत्र वेदन छै अति घणी, परमाधामी मारै बतलायजी ॥
तिहाँ मार अनन्ती खायजी, उठै कौण छुड़ावै आयजी ।
भूख तृषा अनन्ती थायजी, दुःख में दुःख उपजै आयजी ॥
अशुद्ध दान दियाँ ए फल थायजी, श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥८॥
दुःख भोगविया नरक में जी, शेष बाकी रह्या पाप ।
तिण सूं जीव उपजै जाय तिर्यंच में, उठै पण घणो शोग संतापजी ॥
नहीं छूटै कियाँ विलापजी, आड़ा नहीं आवै गुरु मा बापजी ।
दुःख भोगवै आपो आपजी, अशुद्ध दान दियाँ धर्म थापजी ॥
ए पिण कुगुरु तणो प्रतापजी, श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥९॥
अशुद्ध जाणी नें भोगवै, त्यां भांगी जिनवर पाल ।
अनन्त उत्कृष्टा भव करै, नर्क में जासे टांको झालजी ॥
उठै मार देसे नर्क ना पालजी, कीधा कर्म लेवै संभालजी ।
एसी कर्त्तव्य सांमो निहालजी, भगवती पहिलो शतक संभालजी ॥

बलि नवमो उद्देशो संभालजी, श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥१०॥
आधाकरमी जाणी भोगवै तो, बंधै चिकणा कर्म ।
बलि भ्रष्ट थया आचार थी, त्यां छोड़ दीधी लज्जा नें शर्मजी ।
बियोग दियो जिन धर्मजी, दुःख पाम्यो उत्कृष्टो पर्मजी ॥
श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥ ११ ॥
साधू काजे हणै छःकाय नें, ते बार अनन्ती हणाय ।
साधू जाणी नें भोगवै ते पण, अनन्त जनम मर्ण करै तायजी ॥
ए दोनूं दुःखिया थायजी, भव २ में मास्या जायजी ।
ए कर्तव्य सूं मारी छःकायजी, ते दुःख भोगव लेवै तायजी ॥
त्यांरो पार वेगो नहीं आयजी, श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥१२॥
छःकाय रै अशुभ उदय हुवाँ, ते पामें एकरसूं घात ।
जे साधू पड़िया नर्क निगोद में, सेवकाँ ने ले जावै साथजी ॥
त्यां मानी कुगुराँ री बातजी, कीनी त्रस स्थावर नी घातजी ।
अनंता काल दुःखमें जातजी, यानें पण कुगुराँ डबोया साख्यातजी ॥
श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥ १३ ॥
गुराँ नें डबोया श्रावकाँ, श्रावकाँ नें डबोया साध ।
दोनूं पड़िया नर्क निगोद में, श्री जिनवर धर्म विराध जी ॥
संसार समुद्र अगाधजी, जिन धर्म री रहिस नहीं लाधजी ।
भव-भव में पामें असमाधजी, ए पण कुगुराँ तणो प्रसादजी ॥
श्री वीर कहै सुण गोयमा ॥ १४ ॥
अशुद्ध जाणी देवै साधु नें, ते साधाँ नें लूटी लिया ताय ।
पाप उदय हुवै इण भवे, दुःख दारिद्र धसै घर मांयजी ॥

ऋद्ध सम्पत्ति जावै विलायजी, दुःख मांहि दिन जायजी।
कदा पुण्य भारी हुवै तायजी, तो परभव में शंका नहीं कायजी॥
श्री वीर कहै सुण गोयमा॥ १५॥

इम सांभल नर नारियाँ जी, कीज्यो मन में विचार।
शुद्ध साधाँ नें जाणनेंजी, अशुद्ध मत दीज्यो किण वारजी॥
अशुद्ध में धर्म नहीं लिगारजी, शुद्ध दान दे लाहो ल्यो सारजी।
ज्यूं उतर जावो भव पारजी, ए मनुष्य जनम नो सारजी॥
श्री वीर कहै सुण गोयमा॥ १६॥

मंगल बेला में

(लय—बधाओ गाओ पूज्य पधारया)

मंगल वेला में मंगलकारी, जिनवर ने जपो॥ ध्रुव पद॥
युगकर्त्ता 'ऋषभेश्वरू,' गावो अजित 'अजित' गुणधाम रे। मं०
'संभव' भव दुःख मेटवा, चौथा 'अभिनन्दन' अभिराम रे।
मंगल वेला में०॥ १॥

'सुमति' सुमति दाता भला, छट्ठा 'पद्म प्रभ' जिनराज रे। मं०
सेवो 'सुपार्श्व' सुभंकरू, पावन 'चन्द्रप्रभ' भव पाज रे।
मंगल वेला में०॥ २॥

'सुविधिनाथ' नवमां सही, दशमाँ 'शीतल' जिन शिरमोड़ रे। मं०
श्री 'श्रेयाँस' इग्यारमाँ, वंदो 'वासुपूज्य' कर जोड़ रे।
मंगल वेला में०॥ ३॥

'विमल' विमल मन पूजिये, चंगा चवदमाँ नाथ अनन्त रे। मं०
'धर्म' धर्मदाता खरा, साताकारक 'शान्ति' सोहन्त रे।
मंगल वेला में० ॥ ४ ॥

सतरमाँ 'कुन्थु' अठारमाँ, ए तो अघहर, 'अर' जिनचन्द रे। मं०
उन्नीसवाँ 'मल्लीप्रभु', समरो 'मुनि सुव्रत' सुखकन्द रे।
मंगल वेला में० ॥ ५ ॥

प्रणमो 'नमि' इकवीसमाँ 'नेमि' बावीसमाँ गुणखान रे। मं०
'पार्श्वनाथ' तेवीसमाँ, छेहला 'वर्द्धमान' भगवान रे।
मंगल वेला में० ॥ ६ ॥

इण अवसर्पिणी काल में, थया ए जिनवर चौवीस रे। मं०
इग्यारह गणधर भला, सखरा पटधर सत्तावीस रे।
मंगल वेला में० ॥ ७ ॥

भिक्षु, भारीमालजी, ऋषिराय, जीत, मघराज रे। मं०
माणक, डालु, कालुगणी, तुलसी शासन नायक आज रे।
मंगल वेला में० ॥ ८ ॥

प्रथम मंगल अरिहन्तजी, सिद्ध साधु मंगल कहिवाय रे। मं०
धर्म मंगल चौथो कह्यो, शरणे दुख दोहग विललाय रे।
गल वेला में० ॥ ६ ॥

छोड़ो कुदेव उपासना, सारो सुध मन याँरी सेव रे। मं०
त्याग तरफ बढ़ता रहो, आशे सुख सम्पत स्वयमेव रे।
मंगल वेला में० ॥ १० ॥

नभ महि नभ कर वर्ष में, थया 'पड़ियारा' में ठाट रे। मं०
'चन्दन' मुनि आनन्द में, गमता च्यार तीर्थ गहघाट रे।
मंगल वेला में० ॥ ११ ॥

दान-धर्म रो स्थान

(लय—पीर-पीर क्या करता)

है सब धर्मां में प्रमुख रूप स्यूं, दान-धर्म रो स्थान।
पर दान-धर्म रो लाभ कमाणो, नहिं कोइ है आसान॥
[ध्रुव पद]

आ अपणै बस री बात नहीं,
है औरां रै भी हाथ नहीं।
हो दाता, पात्र रु शुद्ध वस्तु रो समुचित रूप मिलान॥ १॥
देणै वालाँ री कमी नहीं,
लेणै वालाँ स्यूं जमी ढही।
पर सही रूप लेणै देणै वालाँ री के पहिचान॥ २॥
जो पूर्ण परम संयम धारी,
बाह्याभ्यन्तर ममता मारी।
अधिकारी बै मुनि पात्र दान रा, निरुपम दयानिधान॥ ३॥
जीवन निर्वाह मात्र भिक्षा,
लै संचय री नहिं कहीं शिक्षा।
दीक्षा दिन स्यूं उपकारी, करता रहै उपकार महान॥ ४॥

है चर्या सात्विक माधुकरी,
वण भार भूत नहीं रहै घड़ी।
नित हरी भरी दिल कोमल कलियाँ, शान्त निराली शान ॥ ५ ॥
निःस्वारथ निज वस्तु देवै,
आरम्भ कियाँ मुनि नहिं लेवै।
वै शुद्ध दान दाता कर लेवै, जीवन रो उत्थान ॥ ६ ॥
शुद्ध दान हेतु है मुगति रो,
जो अशुद्ध हेतु है दुर्गति रो।
'तुलसी' वो भवदधि तरसी, करसी जो सच्ची श्रद्धान ॥ ७ ॥

शिक्षा तेरी अपनाई नहीं

(लय—अपनी छाया में भगवन् बिठा ले मुझे)

भगवन् ! जीवन में शान्ति समाई नहीं।
मैंने शिक्षा तेरी अपनाई नहीं ॥ टेक ॥
तेरी शिक्षा में सचमुच अमृत भरा।
होता चिर-मूर्च्छित भी पी के हरा।
आत्मा पीने उसे ललचाई नहीं ॥ मैं० १ ॥
बिल्कुल सीधा-सा पन्थ दिखाया तू ने।
सम्यग् ज्ञानादि स्पष्ट बताया तू ने।
उस पर बढ़ने की बात सुहाई नहीं ॥ मैं० २

तेरी आज्ञा को मान न मैंने दिया।
तेरी वाणी पर ध्यान न मैंने दिया।
समझी अन्तर्गत गहराई नहीं ॥ मैं० ३ ॥

निन्दा कानों से औरों की मैंने सुनी।
मेरी नजरों में आया न कोई गुणी।
हा ! हा ! आंखें विशाल बनाई नहीं ॥मैं० ४॥

रसना ने रसों को ही याद किया।
जो है नित्य सरस उसको बाद किया।
भक्ति-ज्ञान की गंगा बहाई नहीं ॥ मैं० ५ ॥

मेरे घट में अहंता ने वास किया।
उसने 'मैं हूँ' का झूठा आभास दिया।
ऐसे वृत्ति स्थिर बन पाई नहीं ॥ मैं० ६ ॥

जो कुछ चाहता वह मेरे में सब कुछ है।
केवल ज्ञान भी मेरे में सचमुच है।
पाटी जाती बिच की खाई नहीं ॥ मैं० ७ ॥

अब मैं कब तक भ्रमण करूंगा प्रभो !
कैसे सहज में रमण करूंगा प्रभो !
जाती यह उलझन सुलझाई नहीं ॥ मैं० ८ ॥

मेरापन जो तेरे में लीन बनें।
फिर तो 'चन्दन' दृश्य नवीन बनें।
शिव से जीव की रहती जुदाई नहीं ॥ मैं० ९ ॥

जिन-वाणी के पद-चिह्नों पर

(लय—नगरी-नगरी द्वारे द्वारे)

जिन-वाणी रै खोजाँ-खोजाँ चाली रे चेतनियाँ।
आंकी बांकी गैल्याँ मतना झाली रे चेतनियाँ॥ जि०॥

[ध्रुव पद]

वीर प्रभु रो साचो मारग आयो थारै हाथ मैं। आ०।
शिवपुर तांई ठेट चालसी ओही थारै साथ मैं। ओ०।
संकट मैं पिण इण स्यूं तूं नाँ हाली रे चेतनियाँ॥ जि०॥ १॥

राह चुकावण वाला पग-पग मिलसी मतलब लाल तो। मि०।
आप जिसा करणै वालाँ की कांई कमी है हाल तो। कां०।
रतन लूट कर, कर देवैला खाली रे चेतनियाँ॥ जि०॥ २॥

बड़पण रो भूखो तूं जिनवर वचनाँ नें मत ढांकजे। व०।
झूठो गूमर राखण तांई तूं गप्पाँ मत हांकजे। तूं०।
सावज्जियै आतम नैं करली काली रे चेतनियाँ॥ जि०॥ ३॥

मीठा-मीठा मेवा मिसरी पांचूँ ही पकवान है। पां०।
जिनजी री वाणी रै आगै फीका थूक समान है। फी०।
इण में तो तूं थारी ऊमर गाली रे चेतनियाँ॥ जि०॥ ४॥

बड़ो भाग आपाँ रो आपाँ पायो शासन साचलो। पा०।
गई जिका द्यो जाण, सुधारो अब ही जीवन पाछलो। अ०।
'सोहन' मिलियो तुलसी-सो वनमालीरे चेतनियाँ॥ जि०॥ ५॥

श्रमण शिक्षा

(लय—सुणो कन्ताजी धनवन्ता थइ०)

मतिवन्त मुणी, सुकुलिणी हो श्रमणी गुरु शिक्षा धारिये।
पश्चिम रयणी, ऊठ-ऊठ अक्षर-अक्षर सम्भारिये॥
[ध्रुव पद]

मुनि पंच महाव्रत आदरिया, तजि धण कण कञ्चन परिवरिया।
मनु कञ्चन-गिरिवर कर धरिया॥ मति०॥ १॥

पणवीश भावना पांचां नी, गिणवाई गुरु गणधर ज्ञानी।
भावो निज-निज कण्ठे ठानी॥ मति०॥ २॥

नव बाड़ ब्रह्मव्रत नी भाखी, इक कोट नी ओट अजब राखी॥
समरो निशि-वासर दिल साखी॥ मति०॥ ३॥

तेवीस विषय पंचेन्द्रिय ना, बे शय चालीस विचार बना।
परिहरिये पल-पल शुद्ध मना॥ मति०॥ ४॥

हलवै-हलवै मारग हालो, गाडर वत् नीची दृग न्हालो।
पग-पग धुर समिति सम्भालो॥ मति०॥ ५॥

कटु कर्कश भाषा मति बोलो, बोलो तो वयण रयण तोलो।
तो लोक उभय भय नहिं डोलो॥ मति०॥ ६॥

बंयालिय एषण दूषणियाँ, तिम पंच मण्डलाँ नाँ भणियां।
सहु राखो आंगुलियाँ गिणियाँ॥ मति०॥ ७॥

उपयोगे उपधि ग्रहो मूको, पंचमी नी जयणां मति चूको।
गुप्ति त्रय गुप्त सुमग ढूको॥ मति०॥ ८॥

है आठूं ही प्रवचन माता, जो रहिस्ये एहनें सुखसाता ।
तो नहिं थइस्ये कोई दुःखदाता ।। मति० ।। ९ ।।
विधि-युक्त उभय टक पड़िकमणो, त्रिण दृष्टिये पड़िलेहण करणो ।
है पूंजण हेत रजोहरणो ।। मति० ।। १० ।।
पड़िलेहण पड़िक्कमणो करताँ, पंचमि गौचरिये सञ्चरतां ।
मति बात करो तिम फिर-घिरतां ।। मति० ।। ११ ।।
इच्छा मिच्छादिक जे भारी, कहि दश विध शुद्ध समाचारी ।
आचरिये अहो-निशि अनिवारी ।। मति० ।।१२।।
तेतीशाशातन टालीजै, असमाधिय नो मद गालीजै ।
सबला सह मूल उखालीजै ।। मति० ।। १३ ।।
छल-कपट झूठ में मति रे फंसो, दिल बाहिर मांहि रखो इकसो ।
बिल पैसत पन्नगराज जिसो ।। मति० ।। १४ ।।
गुरु आणा प्राणाधिक जाणो, गुरु दृष्टिये निज दृष्टि ठाणो ।
कोई बात मनोगत मत ताणो ।। मति० ।। १५ ।।
रयणाधिक मुनि नो विनय करो, अविनय अपलच्छन दूर टरो ।
म' करो ललनाजन रो लफरो ।। मति० ।। १६ ।।
निज अवगुण क्षण-क्षण सम्भारो, पर-गुण सह प्रेम परम धारो ।
मन मत्सर टारो परवारो ।। मति० ।। १७ ।।
गणि-गण स्यूँ राखो इकतारो, प्रीतड़ली पय-साकर वारी ।
तिम उद्धरसे आतम थांरी ।। मति० ।। १८ ।।
गृह मूक्यो मुनि जिह वैरागे, ग्रही दीक्षा गुरु-कर वड़ भागे ।
तिम पालण प्रेम रखो सागे ।। मति० ।। १९ ।।

परिषह थी मन मति कम्पावो, सज्झाय झाण प्रतिपल ध्यावो।
शासण नी महिमा सहु गावो ॥ मति० ॥ २० ॥

निन्नाणव पोष महीना में, रचि शीखड़ली स्वर झीणा में।
तुलसी गणपति दृढ़ सीना में ॥ मति० ॥ २१ ॥

चतुरधिक पंचशय मुनि श्रमणी, गुरु-चरणाँ मानै मौज घणी।
सरदारशहर छवि खूब वणी ॥ मति० ॥ २२ ॥

व्रत-धारण शिक्षा

(लय—दुलजी छोटो सो)

श्रावक ! व्रत धारो
निज जीवन-धन सम्भारो रे ॥ श्रा० ॥
जैनागम रहस्य विचारो रे,
श्रावक ! व्रत धारो।
क्षणिक-विषय-सुख खातिर आतुर,
मानव-भव मत हारो रे ॥ श्रा० ॥ नि० ॥ ए आं० ॥

अव्रत-नाला बहै दग चाला,
रोकण मारग बाँरो रे।
आतम रूप तलाव नाव स्यूँ,
करण करम-जळ न्यारो रे ॥ १ ॥

हिंसा, वितथ, अदत्त, विषय-रस,
लोभ क्षोभ करणारो रे।
निज मन्दिर में है ये तस्कर,
खोज मिटावण आँरो रे ॥ २ ॥

ईर्ष्या, द्वेष, असूया, मत्सर,
मेटण क्लेश करारो रे।
कलुषित-हृदय कलह स्यूँ दूषित,
अपणी वृत्ति सुधारो रे ॥ ३ ॥

मुक्ति-महल री पञ्चम पेड़ी,
नेड़ी नजर निहारो रे।
महावीर सन्तान स्थान थे,
कायरता न सिकारो रे ॥ ४ ॥

निरय तिरय गति निगम निरोधो,
व्यन्तर असुर विसारो रे।
ज्योतिषी ऊपर वैमानिक सुर,
सीधा डेरा डारो रे ॥ ५ ॥

धन्य जघन्य समय शिव संभव,
तीन भवां निस्तारो रे।
आत्मानन्द अमन्द अपूरव,
व्रत-वैभव विस्तारो रे ॥ ६ ॥

त्याग नाग नहीं सिंह वाघ नहीं,
भाग नहीं भयवारो रे।
हृदय-विराग भाग जागरण,
क्यूं कम्पै दिल थांरो रे ॥ ७ ॥

'चित्त-प्रधान' 'पूणियो श्रावक,'
श्रावक कुल उजियारो रे।
'आणन्दादि' उपासक वरणन,
सप्तम अङ्ग सुप्यारो रे ॥ ८ ॥

'शङ्ख-पोखली' भगवती सूत्रे,
'सुलसा' नाम चितारो रे।
राणी चेलणा जबर जयन्ती,
ज्यूं निज जीवन तारो रे ॥ ९ ॥

भिक्षु-रचित बारह-व्रत चौपी,
विस्तृत रूप विचारो रे।
दृग्-गोचर, अथवा श्रुति-गोचर,
कर-कर आत्म उद्धारो रे ॥१०॥

उगणीसै निन्नाणूं वर्षे,
चूरू पावस प्यारो रे।
प्राणाधिक निज व्रत सम्पत्ति नें,
'तुलसी' सदा रुखारो रे ॥ ११ ॥

अन्तिम बाजी

(लय—तावड़ा धीमो पड़ज्या रे)

श्रावक जी ! अब सैंठा रहिज्यो ।।
लियो भार पहुँचाय पार थे, जग में जश लीज्यो ।
[ध्रुव पद]

नीठ नीठ मानव भव पायो, पांचूं इन्द्रयाँ तन्त ।
आरज क्षेत्र मिल्यो कुल उत्तम, गुरु तुलसी गुणवन्त ।। १ ।।
घणाँ वरस श्रावक-व्रत पाल्या, करी गुराँ री सेव ।
छेहड़ै जबर विचारी पचख्यो, संथारो स्वयमेव ।। २ ।।
भूख तृषा वश तन कुमलावै, जावै रसना सूक ।
अधिक कष्ट मरणांत देख कर, थे मत जाज्यो चूक ।। ३ ।।
सूर चढ़ै संग्राम मैं-स रे, बैर्‍याँ साम्हो जाय ।
रग-रग नाचै तन मन राचै, पग पाछा नहिं ठाय ।। ४ ।।
तिमहिज कर्म-रिपु संग मांड्यो, थे भारी संग्राम ।
अल्प समय मैं जीत फतै अब, रखज्यो दृढ़ परिणाम ।। ५ ।।
देव गुरू की खरी आसता, राखीज्यो मन मांय ।
ौरासी लख जीवा जोणी, लीज्यो सर्व खमाय ।। ६ ।।
वे-सुखे भव करता थे तो, करस्यो मुक्ति नजीक ।
ारा मैं श्रावकजी नैं, आ 'सोहन' की सीख ।। ७ ।।

अणुव्रत-प्रार्थना

(लय—उच्च हिमालय की चोटी से)

बड़े भाग्य हे भगिनी वन्धुओं !, जीवन सफल वनायें हम ।
आत्म साधना के सत्पथ में, अणुव्रती वन पायें हम ॥
[ध्रुव पद]

अपरिग्रह, अस्तेय, अहिंसा, सच्चे सुख के साधन हैं।
सुखी देख लो संत अकिंचन, संयम ही जिनका धन है।
उसी दिशा में, दृढ़ निष्ठा में क्यों नहीं कदम बढ़ायें हम।
आत्म साधना के सत्पथ में० ॥ १ ॥

रहें यदि व्यापारी तो, प्रामाणिकता रख पायेंगे।
राज्य-कर्मचारी जो होंगे, रिश्वत कभी न खायेंगे।
दृढ़ आस्था, आदर्श नागरिकता के नियम निभायें हम।
आत्म साधना के सत्पथ में० ॥ २ ॥

गृहिणी हो गृहपति हो चाहे, विद्यार्थी अध्यापक हो।
वैद्य, वकील शील हो सब में, नैतिक निष्ठा व्यापक हो।
धर्म-शास्त्र के धार्मिकपनको, आचरणों में लायें हम।
आत्म साधना के सत्पथ में० ॥ ३ ॥

अच्छा हो अपने नियमों से, हम अपना कन्ट्रोल करें।
मतना दूजे वध बन्धन से मानवता की शान हरें।
यह विवेक मानव का निज गुण इसका गौरव गायें हम।
आत्म साधना के सत्पथ में० ॥ ४ ॥

तेळ बाकलाँ सूं भी तो देवता हुवै है राजी,
वाही रीत राख म्हारी हूंस ही पुरावस्यूं ।
लाखाँ लोक 'सोहन' मनावै माता शीतला नें,
(पिण)मैं तो आज म्हारी छोगाँ मात नें मनावस्यूं ।।

ढाल

(लय—मनड़ो लाग्यो हो अन्दाता आपरै नाम में जी)

माता छोगाँजी की राखो निश दिन ध्यावनाजी, थारी जन्म २ की पूरण करसी चावनाजी । छोगाँ तपसण तारण तरणी, छोगाँ रतन कूख की धरणी, छोगाँ तन मन संकट हरणी, छोगाँ शरणागत सुखकरणी ।। माता० ।। ध्रुव पद ।। छोगाँ जननी कालू स्वामकीजी, आ तो जनमी कोटासर में, इणरो सासरियो छापर में, कुल कोठारी भारी घर में ।। माता० ।। १ ।। घरणी मूल शशी सुख कन्दनीजी, श्रावक व्रत पतिव्रत पालन्ती, प्रसव्यो पुत्र रतन पुन्यवन्ती, कालू नाम दियो कुलवन्ती ।। माता० ।। २ ।।

सोरठा

आयो जिण दिन आप, गणिवर कालू गर्भ में ।
उण दिन रो आलाप, सुत माता रो सांभलो ।। १ ।।
अर्द्ध निशा अन्दाज, जननी छोगाँ जागती ।
अधर हुई आवाज, श्रोता श्रवण सुहावणी ।। २ ।।

(ढाल री दूजी गाथा में अन्तर गाथा)

ढाल

(लय—पूर्वोक्त)

आवूँ आवूँ हे मावड़ली थारे आँगणै हे, सुत नं लाज न लागै माता आगै माँगणै हे। तुझ विन और भणी नहीं जाचूं, थारै उदर रमण मन राचूँ, ए मुझ वचन जाणजे सांचूँ॥ ए आँकड़ी॥ पिण इक वात मात सुण मांहरी ए, जो तूँ मुझ नें साथ सुवावै, जो तूँ स्तन पय पान करावै, तो मैं आवूँ सही इण दावै॥ आवूँ॥ १॥ पहिला सैंठी रहीजे तूँ मावड़ी हे, फिर तो मैं कछु काढ़ न देस्यूं, जननी जंपै सैंठी रेस्यूँ, थांरा सदा वारणा लेस्यूँ, आज्या आज्या रे धेनड़िया म्हारे आँगणै रे, माता ने पण लाज न आवै सुत नें माँगणै रे, सुत नें कारण देव आराधै, विद्या मंत्र तंत्र केई साधै, तुझ सम पुत्र कहे किहाँ लाधै॥ आज्या॥ २॥

सोरठा

नव महिना रे नेम, उत्तम पुरुष अवतरै।
आगम भाषै एम, रीत तेम कालू रखी॥ १॥
उगणीसै तेतीस, दूज फूलरिया दीपती।
जनम लियो जगदीश, कालू कुल उजवालणो॥ २॥

ढाल अन्तर गाथा वाली

तिण वृतान्त तणे अनुसार थी जी, जनम्या पाछे तीजी

रात, आव्यो राक्षस एक कुपात, काली घटा रूप साख्यात, देखो देखो रे भवि देखो पूज्य प्रताप नें जी, कीधा च्यार कूंट में चावा निज मा बाप नें जी, होवै पूत पनोता एहवा, जेहवा कालू गणपति तेहवा, जेह नें आगल सुर पिण केहवा ॥ देखो देखो रे० ॥ ३ ॥ माता देख रती भर ना डरीजी, नाहरी रूप थई तिण स्यात, राख्यो शिशु दे आडो हाथ, वरती विकट अलौकिक बात ॥ देखो० ॥ ४ ॥

मूल ढाल

(लय—पूर्वोक्त)

अल्प समय पति विरह वियोग में जी, बैठी सुत-सुर-तरु की छायाँ, टाबर ऊपर जीव टिकायाँ, निरख २ मुख बखत बितायाँ ॥ माता० ॥ ३ ॥ लघु वय जात साथ वैरागिनीजी, भगिनी कन्या कान कुमारी, तीनूं उत्तम जीव उदारी, दीक्षा मघ नृप हाथे धारी ॥ माता० ॥ ४ ॥ तप जप व्यावच विनय बधावतीजी, दिन २ चरण रंग रस रातो, परिषह सहन वज्र सम छाती, काटण कर्म कटक दल काती ॥ माता० ॥ ५ ॥ नमणी गमणी सुगणी शिरोमणीजी, इणरो तेज चमकता तारा, निर्मल गंगाजल की धारा, कोमल अमल कमल अनुकारा ॥ माता० ॥ ६ ॥ सागी रीत असल सतियाँ तणी जी, आ तो तज दिया थारा म्हारा, इणनें ज्ञानादिक गुण प्यारा, लागै अवगुण विष सम खारा ॥ माता ॥ ७ ॥ संयम धार्‍यो जिण

दिन थी सतीजी, तीखी तपस्या करणी मांडी, तन की तृष्णा तर तर छांडी, पकड़ी सीधी शिवपुर डांडी ॥ माता० ॥ ८ ॥
तप दिन बीस बरस रै आसरैजी, गिणती का दिन सात हजार, वलि बे शत अन्दाज उदार, आज तांई को ए अधिकार ॥ माता ॥ ६ ॥

सोरठा

ओछा में उपवास, ऊपर में गुणतीस दिन ।
सती तनैं स्याबास, (तैं) बाही तप तरवारड़ी ॥ १ ॥
एकान्तर अवधार, साल छिहन्तर थी सुखद ।
बिच बेला बहु बार, तेला पिण केई तप्या ॥ २ ॥

कवित्त

एक गुणतीस उगणीस सतरारु सोला,
चवदै इग्यारा दोय छः का एक जूटजा ।
इग्यारा पंचोला चोला चवदै पिच्यासी तेला,
पनरा सै अन्दाज बेला सुण्याँ दुख खूटजा ॥
अड़तीसै आसरै किया है उपवास सती,
जाको नाम लियाँ सारा कर्म बन्ध टूटजा ।
'सोहन' भनन्त छोगाँ मात की तपस्या देख,
बड़ा बड़ा मूँछालाँ के धूजणी-सी छूटजा ॥१॥

मूल ढाल

(लय—पूर्वोक्त)

बलि सूत्रादिक नो समरण कियोजी, अस्सी लाख आसरे पेख, ए उगणीस वरस नो लेख, विकथा आलस दूर उवेख ॥ माता० ॥ १० ॥ राखे लाड घणो युग तीर्थनो जी, संत सत्याँ नें प्राण समान, समझै सती सखर गुण खान, म्हारो राखै अधिको मान ॥ माता० ॥ ११ ॥ कालू गुण मणि विरह थयाँ थकांजी, मेरु गिरि सम रही अडोल, तीखा निज आतम गुण तोल, नाख्या मोह कर्म ने छोल ॥ माता० ॥ १२ ॥ जिण विध कालू सेवा साभती जी, तिण सूं तुलसी सेव सवाई, मन सुध करती छोगाँ माई, प्रभु पिण राखै बहु अधिकाई ॥ माता० ॥ १३ ॥ सन्त सती अरु श्रावक श्राविका जी, सहु नें शिक्षा आपै माता, रहिज्यो शासन में रंगराता, दीज्यो गणपति नें सुख साता ॥ माता० ॥ १४ ॥ चौथे आरै तो इसड़ी सतीजी, कोइक हुई हुसी किण वार, पिण हिवड़ाँ तो आहिज धार, आगै होणी दुक्करकार ॥ माता० ॥ १५ ॥ इणरा दरशन बड़ भागी लहैजी, बीदासर का भाग्य भलेरा, जननी जबर जमाया डेरा, सबका राखै मान घणेरा ॥ माता० ॥ १६ ॥ शर रस चैत्र कृष्ण पख अष्टमी जी, बीदासर में गणिवर साथ, 'सोहन' पल पल सफल बितात, समरी सनमुख छोगाँ मात ॥ माता० ॥ १७ ॥

श्री झमकूजी महासतियाँजी के गुणाँ की ढाल

(लय—धन जननी छोगाँ०)

सैंतीस वर्ष लग, साधूपन पाल्यो झमकूजी सती ।
निज संजम जीवन, आछो उजवाल्यो झमकूजी सती
॥ ए आंकड़ी ॥

चम्मालीशै रतननगर में, हिरावताँ घर जामी ।
श्वशुरालय चुरू का पारख, उभय पक्ष जग नामी जी ॥ १ ॥
पैंसट्ठै डालिम गणिवर कर, संयम भार लहायो ।
शहर लाडणूं माँहे छेहड़ो, भवसागर को पायोजी ॥ २ ॥
कानकँवरजी संगे छासठ, इकोत्तरै चउमासो ।
बाकी कालू चरण शरण में, सदा कियो सुखवासोजी ॥ ३ ॥
कालू गणि की करुणा दृष्टि, पल पल भल आराधी ।
आनन्दित चित्त प्रभु परिचर्य्या, सदा सवाई साधीजी ॥ ४ ॥
इंगित अरु आकार सुगुरु नो, विरलो समझण पावै ।
सति झमकू की आ अधिकाई, कहो कुण जन बिसरावैजी ॥५॥

[अन्तर ढाल]

(लय—बधज्यो रे चेजारा थांरी बेल)

वचन-मधुरता झमकू बदन मझार,
कोई जाहिर सकल समाज में जी म्हांरा राज ।
हृदय निडरता दिल दाठीक अपार,
नहिं मान मरोड़ मिजाज में जी म्हांरा राज ॥ ६ ॥

हाथ कुशलता चातुरता चित चंग,
कोई निर्मल निज आचार में जी म्हांरा राज।
सगुरु भक्ति में झमकू शक्ति सुरंग,
अनुरक्तिय तीरथ च्यार में जी म्हांरा राज॥ ७॥
सहनशीलता कारण में अणपार,
कोई दृढ़ता नियम निभाण में जी म्हांरा राज॥
केतो कहिये झमकू विनय उदार,
'तुलसी' दिल गुणि गुण गाण में जी म्हांरा राज॥ ८॥

ढाल मूलकी

(लय—पूर्वोक्त)

सुगुरु सेवा करतां करतां, गङ्गापुर मांहीं।
बोझ काम बगसीष संघाते, सब भोलावण पाईजी॥ ९॥
कालू गुरु सम मम सेवा में, ग्रामो ग्राम विहारी।
परम हरष दश वरस आसरै, रहीजु साताकारीजी॥१०॥
दोय हजार दोय की संवत्, मास आषाढ़ मझार।
अक्समात तनु आमय उपनो, उपनो अधिक विचारजी॥११॥
गात्र-कम्प ज्वर अरु बेचैनी, खबर थयाँ तिह वार।
मैं मन्त्री बंधव मुनि संगे, दर्शन दिया सुप्यारजी॥१२॥
तर तर रोग बढ़ावही पाम्यो, दूजे दिन द्वय वार।
दर्शन दे महाव्रत उचराया, श्रद्धया भर हूंकारजी॥१३॥
मध्याह्ने आषाढ़ कृष्ण छठ, परभ समाधी पाम।
आराधक पद पण्डित मरणे, समवसरी सुर धामजी॥१४॥

बदनाजी लाडाँजी आदि, सकल सत्याँ नो साज ।
वड़ो अनोखो मोको पायो, वाह सतियाँ सिरताजजी ॥१५॥
दूजे दिन शार्दूलपुर पुर में, भर परिषद रे मांय ।
तुलसी गणपति सतिगुण वर्णन, कीन्हा मन हुलसायजी ॥१६॥

खिण मात्र सुख

(लय—लाल हजारी रो जामो विराजे चढ़वा सुरंगी घोड़ा रे)

सुख खिण मात्र कह्या जिन स्वामी, दाख्या दुःख बहु कालो रे ।
अनर्थ-खान मुक्ति ना वैरी, काम भोग मोह जालो रे ॥

काम किम्पाक समा जिन भाख्या, दुःख अनन्ता ना दाता रे ।
परिचय काम वंच्छा परहरिये, जो चहिये सुख साता रे ॥ १ ॥
घोर नरक नें विषै पड़ै जे, पाप कर्म करतारी रे ।
आरज उत्तम धर्म आचरै, सुर शिव गत सुख भारी रे ॥ २ ॥
अघ उपलेप लगै भोगी रै, अभोगी तो नाहीं लेपायो रे ।
भोगी संसार में भ्रमण करै छै भोग तजै थी मुकायो रे ॥ ३ ॥
न करै कंठ छेदन अरि जेहु, अनरथ तेहु विशेषो रे ।
करै पोता नी दुष्ट आतम कर, तेम तुमे जाणेसो रे ॥ ४ ॥
अष्टमो बारमो षट खण्डाधिप, लक्ष्मण कृष्ण मुरारो रे ।
विषय थकी दुःख तीव्र नरक ना, अति दोहिलो छुटकारो रे ॥ ५ ॥
रे जीव मित्र तूंहिज तिहारो, तूंही शत्रु दुरजनो रे ।
आतम वैतरणी नें कुल साँवली छै, कामधेनु नन्दन बनो रे ॥ ६ ॥

निर्मल ध्यान सज्झाय करै मुनि, अपापकारी भावै रे।
पूर्व-कृत मल दूर करै जिम, कंचन अग्न तपावै रे ॥ ७ ॥

स्त्री-संसर्ग विभूषा तन नी, सरस भोजन वले तेमो रे।
आतम गवेषी पुरुष अछै तसु, तालपुट विष जेमो रे ॥ ८ ॥

स्त्री, पशु पण्डग सहित सज्झासन, दात उणोदरी जोगो रे।
तसु चित राग शत्रु नें विदारण, औषध करै जिम रोगो रे ॥ ९ ॥

निद्रा भणी बहु मान न देवै, हास्यं विषै नहीं माता रे।
रमै नहीं माँहो माँह कथा करै,मुनि रहै सज्झाय में राता रे ॥१०॥

श्रमण धर्म विषै जोग वर्तावै, अतही उत्साह सहितो रे।
यति-धर्म विषै जुगत छतो मुनि, पामै धर्म पुनीतो रे ॥११॥

बाहन सकटादि बहता उलंघै, अटवी विषम कंतारो रे।
ज्यूं प्रवर जोग विषै बहतो मुनीश्वर, शीघ्र उलंघै संसारो रे ॥१२॥

उगणीसै षटवीस पोह बिद, पूनम निशा सुविचारो रे।
पिछम जाम री जोड़ करी ए, जयजश हर्ष अपारो रे ॥१३॥

अभिमान त्यागो

(लय—श्री महावीर चरण में)

भवि अब मानव-जनम सुधारो, मन अभिमान निवारो थे।
जो गुणवान बणो, मतिवान बणो, मन मान निवारो थे ॥
[ध्रुव पद]

पामर पोमावै, हाँ हाँ पामर० ।
मगरूरी में नहीं मावै ।
मन स्यूं महान वण ज्यावै ।
अणजाण पणै री भींत उखारो थे ॥ १ ॥

मैं हूँ मतिशाली, हाँ हाँ मैं हूँ० ।
महिमा म्हांरी निरवाली ।
शोभा है सब स्यूं आली ।
ठाली बादल ज्यूं जीभ न झारो थे ॥ २ ॥

'रावण-सा राणा', हाँ हाँ रा० ।
भूमीश्वर कइ मस्ताना ।
'दुर्योधन द्रोण दिवाना' ।
जो दशा अन्त में हुई विचारो थे ॥ ३ ॥

हिटलर री फोजाँ, हाँ हाँ हि० ।
धारी जो मन में मोजाँ ।
मिस्टर मुसोलियन तोजा ।
है आज कठै वै खोज निकारो थे ॥ ४ ॥

जब मान मिटायो, हाँ हाँ जब० ।
'बाहुबल' केवल पायो ।
ब्राह्मी, सुन्दरि समझायो ।
'तुलसी' अविनय तज, विनय बधारो थे ॥ ५ ॥

श्रावक जीवन की पृष्ठ-भूमिका ।

तेरह नियम लो ।

घट-घट में अब जल्द जगावो, आत्म धर्म की लो । ते० ।
श्रावक-पन की पृष्ठभूमिका, अब तैयार करो ॥
तेरह नियम लो ॥ ध्रुव पद ॥

मानवता के भव्य भवन में, खेल रहा प्राणी पशु-पन में ।
हो मन में मदमस्त अस्त कर, अमित आत्म बल जो ॥
तेरह नियम लो ॥ १ ॥

उज्ज्वल मन्दिर में जो आये, कीड़े दुर्गुण रूप रचाये ।
क्यों इस छूत रोग को मानव, पुरस्कार अब दो ॥
तेरह नियम लो ॥ २ ॥

वीर-पुत्र बन जो हि बटोरी, अपने जीवन में कमजोरी ।
देख होत दिल ग्लानि, क्यों नहीं लज्जा से झुको ॥
तेरह नियम लो ॥ ३ ॥

नागपाश से बन्धन टूटे, (तो) क्यों नहीं बुरी आदतें छूटे ।
'अब भी पुरुषों में पौरुष है', ऐसी बात कहो ॥
(तो) तेरह नियम लो ॥ ४ ॥

नैतिकता का ऊँचा स्तर हो, मानव मानवता में स्थिर हो ।
'तुलसी' ऐसे सार्वजनिक, जीवन उत्थान चहो ॥
तेरह नियम लो ॥ ५ ॥

मोह निद्रा त्याग

(लय—जब वक्त पड़ा तब कोई नहीं)

अब मोह नींद से उठ चेतन, क्यों भूल रहा जोवन धन में ।
तेरे सुख के साथी मात पिता, सुत वन्धव सोच जरा मन में ॥
[ध्रुव पद]

नर जन्म अमूल्य मिला तुझको, क्यों सोय रहा सुख चैनन में ।
करले अब तो सतसंग जरा, समझाय रहे गुरु सैनन में ॥ १ ॥

तेरा कुटुम्ब कबीला स्वारथ का, बिन स्वारथ देत दगा खिन में ।
यह चांदनी चेतना दो दिन की, विरथा मुरझाय रहा किन में ॥२॥

दिन खेल कूद में खोय दिया, नहीं धर्म किया बालापन में ।
गुरु का गुण गान किया न कभी, विषया वश हो भर जोबन में ॥३॥

हय हाथी ऊपर केल किया, रंगरेल किया चढ़ स्यंदन में ।
चरचा तन केसर चन्दन में, नहीं चित्त दिया गुरु वन्दन में ॥४॥

अब वृद्ध वया कच स्वेत भया, कफ वाय ने घेर लिया छिन में ।
तेरी डगमग नाड़ी डोल रही, मनु कम्पन-वाय हुआ तन में ॥५॥

गये रावण विक्रम भोज बली, प्रजली मनु होरी फागन में ।
उस मौज का खोज रहा न रत्ती, नर तूं मूली किस बागन में ॥६॥

दया धर्म का संग्रह तूं करले, धरले गुरु शिक्षा कानन में ।
कहा 'सोहन' उत्तम धर्म यही, जिन आगम वेद पुरानन में ॥७॥

मुहब्बत माया में खो गई

(लय—मुश्किल जैन मुनि रो मारग०)

आयो विकट जमानो आज, मुहब्बत रुलगी माया में ।
रुलगी माया में, सम्प नहिं भायाँ भायाँ में ॥ आ० ॥
[ध्रुव पद]

मतलब की मनुहार जगत में, मतलब का सब खेल ।
बिन मतलब तो कोई न घाले, एक मिरकली तेल ॥ १ ॥

दौलत पर रहै दोस्त दौड़ता, ज्यूं मखियाँ गुड़ गेल ।
बिन दौलत स्वारथियाँ आगै, हो जाता नर फेल ॥ २ ॥

बनते रिश्तेदार सभी जब, चलती मोटर कार ।
फटी पगरखी देख वही नर, देते हैं दुत्कार ॥ ३ ॥

रुपये वालों को रुपयों की, करते हैं मनुहार ।
नहिंतर थोड़े में चढ़ जाते, तुरत राज दरबार ॥ ४ ॥

होती गरज वोट की जब, देते आश्वासन खूब ।
मिली सीट तब आंख न खोले, गयो स्वार्थ में डूब ॥ ५ ॥

जिस प्रियतम को प्रिया समझती, परमेश्वर का रूप ।
धन जाने पर वही पटकती, दे धक्का अंध कूप ॥ ६ ॥

भाग्य भरोसे रहो भव्य जन, और भरोसा छोड़ ।
उभय जन्म सहयोगी सद्गुरु, 'सोहन' रिश्ता जोड़ ॥ ७ ॥

काम में मत मुरझो

(लय—तावड़ा धीमो पड़ज्या)

काम में मत मुरझो प्राणी।
क्यूं मिनख पणै रो खरो खजानो करो धूड़ धाणी॥
[ध्रुव पद]

घी स्यूं भभकै आग, भोग स्यूं काम-राग जाणी।
बुझै शान्त-रस पाणी स्यूं, आ सद्गुरु री बाणी॥ १॥
जोबन धन रो जोश भुलावै, होश करै हाणी।
(कोई) मतवालै हाथी ज्यूं हरदम, रहै गरदन ताणी॥ २॥
माईताँ री मिली कमाई, सीधी समुदाणी।
(अब) सात व्यसन मैं राच, फेरदै पीढ़्याँ रै पाणी॥ ३॥
सुणी हुसी जितशत्रु, राय ओ सुकुमाला राणी।
राज-भ्रष्ट हो रुलया खाख वै, रोही री छाणी॥ ४॥
छोड़ो काम-भोग अति आशा, दिल समता आणी।
धारो शील अणुव्रत 'तुलसी', सुख की सहनाणी॥ ५॥

समिता नारी का आमन्त्रण

(लय—पणिहारी की)

अब तो पियाजी म्हारें निज घर आवोजी, कहै थाँनें समिता नारी। निज परिणत सुख भूल अनादी। पर परिणत से करि यारी, आरोपित हित जान भ्रम वश। पायो दुख परसंग भारी॥ अब तो० ॥ १ ॥ कमिय नहिं कछु अपने घर में, देखो अन्तर सुविचारी। क्यूं फोकट पर आश पाश में, उलभ रहे ममताधारी॥ अब तो० ॥ २ ॥ मिले सुगुरु इस वेर देर अब, करते किसकी इन्तजारी। छाँड़ि कुमति कुटिला जटिला को, रमन करो संयम धारी ॥ अब तो० ॥ ३ ॥ तज असमाधि साध्य साधकता, अवाव्याधि आतम थाँरी। गुन अनन्त प्रगटै ज्ञानादिक, ऋद्धि अमोलक लखतारी॥ अब तो० ॥ ४ ॥ सुन जिन वान मान सत-गुरु की, बलि २ जाऊं बलिहारी। पावत प्रभुता प्रभु स्मरण में, गुलाबचन्द आनन्द-कारी॥ अब तो० ॥ ५ ॥

उपदेश सोली

(लय—चेत चतुर नर कहै तने सतगुरु०)

ऊंचै कुल में आय उपनो, पूरी भल इन्द्री पाई।
इसड़ो अवसर अति ही दुर्लभ, वीर कह्यो सूतर माहीं॥
अहो भव प्राणी उलट आणी, करल्यो करणी भवतरणी।
सुध साधाँ री सेवा सारो, भावना भावो भव हरणी॥ १ ॥

जाया न करो

(लय—मोहन हमारे मधुवन में जाया न०)

चेतन ! स्व-घर को छोड़कर, तुम जाया न करो ।
विषयों की खोटी वासना, फैलाया न करो !!
चक्र लगाया न करो ।। टेक ।।

सूरत तुम्हारी सर्वदा, निराले ढङ्ग की ।
चित-शक्ति शुद्ध शोभती, अपने ही रङ्ग की—हो अपने० ;
परतन्त्रता की तान, सुनाया न करो । विषयों० ।। १ ।।

अवकाश देना तस्करों को, जानबूझ कर ।
विश्वास करना गैर का, होता है दुःखकर—हो होता० ;
पर के भरोसे कष्ट, उठाया न करो । विषयों० ।। २ ।।

निधियाँ अनेकों ही तुम्हारे गेह में पड़ी ।
अब खोद के निकालो, है यह कीमती घड़ी—है यह० ;
भिखारीपन का डोल, रचाया न करो । विषयों० ।। ३ ।।

भूलते ही भूलते, रहोगे कब तक ?
माया को अनुकूलते, रहोगे कब तक ?—रहोगे० ;
ओ ज्ञान के भण्डार ! भूलें खाया न करो । विषयों० ।।४।।

अधिकार अपने राज्य का, "चन्दन" को चाहिये ।
मिल जाये जो स्व-तत्व, क्या चन्दन को चाहिये ?—क्या० ;
मैं ही हूँ मेरा देव, भूलाया न करो । विषयों० ।। ५ ।।

समिता नारी का आमन्त्रण

(लय—पणिहारी की)

अब तो पियाजी म्हांरै निज घर आवोजी, कहै थाँनें समिता नारी। निज परिणत सुख भूल अनादी। पर परिणत से करि यारी, आरोपित हित जान भ्रम वश। पायो दुख परसंग भारी॥ अव तो०॥ १॥ कमिय नहिं कछु अपने घर में, देखो अन्तर सुविचारी। क्यूं फोकट पर आश पाश में, उलझ रहे ममताधारी॥ अव तो०॥ २॥ मिले सुगुरु इस वेर देर अव, करते किसकी इन्तजारी। छाँड़ि कुमति कुटिला जटिला को, रमन करो संयम धारी॥ अव तो०॥ ३॥ तज असमाधि साध्य साधकता, अवाव्याधि आतम थाँरी। गुन अनन्त प्रगटै ज्ञानादिक, ऋद्धि अमोलक लखतारी॥ अव तो० ॥ ४॥ सुन जिन वान मान सत-गुरु की, वलि २ जाऊं वलिहारी। पावत प्रभुता प्रभु स्मरण में, गुलावचन्द आनन्द-कारी॥ अव तो०॥ ५॥

उपदेश सोली

(लय—चेत चतुर नर कहै तने सतगुरु०)

ऊंचै कुल में आय उपनो, पूरी भल इन्द्री पाई।
इसड़ो अवसर अति ही दुर्लभ, वीर कह्यो सूतर माहीं॥
अहो भव प्राणी उलट आणी, करल्यो करणी भवतरणी।
सुध साधाँ री सेवा सारो, भावना भावो भव हरणी॥ १॥

दरखत पर बैठे पंखी दल, भोर भये जब उठ चलते ।
मानव भव का ऐसा मेला, फिर ने पाछा कब मिलते ॥ २ ॥
पन्थ सराय में बैठे पंथी, भोर भये जब उठ चलते ।
मानव भव रा ऐसा मेला, फिर ने पाछा कब मिलते ॥ अ० ॥३॥
हटवाड़ै का मेला होवै, कानी कानी उठ चलते ।
मानव भव का ऐसा मेला, फिर ने पाछा कब मिलते ॥ ४ ॥
पारवती ने अरची पूजी, पाणी माहें डबकाते ।
या जग की महिमा है ऐसी, पीछे पापी पिछताते ॥ ५ ॥
सुध साधाँ री संगत कीधाँ, अलगी हुवै घट आवरणी ।
पुन्य पाप की आवै परगट, ओलखणा भव उद्धरणी ॥ ६ ॥
काच चुड़ी जिम काया काची, माखण नी पर बिघरणी ।
आछी आछी बात आराधो, अमरापुर में अवतरणी ॥ ७ ॥
हिंसा कियाँ बहु दुःख होवै, ते अंशमात्र नहीं आदरणी ।
दया भाव राखो दिल मांही, कर्म सकल की कातरणी ॥ ८ ॥
जन्म मरण री बाताँ जिनजी, दाखी छै अति ही डरणी ।
हलुकर्मी सुण सुण नें काँप्या, कीधी भल उत्तम करणी ॥ ९ ॥
गजसुकुमाल नेमीश्वर भेट्या, कही कथा भव उद्धरणी ।
संयम लेने कारज सार्‍या, वनिता जाणी वैतरणी ॥१०॥
जम्बुकुमरजी महा जोरावर, परहर दी आठे परणी ।
चरम केवली जग में चाहवा, अधिकी कीरति उच्चरणी ॥११॥
धन धन धन्नो काकन्दी नो, तज दीधी बत्तीस तरुणी ।
उत्कृष्टी तपस्या तिण कीधी, वीर जिणन्द मुख वरणी ॥१२॥

प्रभु अविनाशी को भज

(लय—मनवा नांय विचारी रे)

भज मन प्रभु अविनाशी रे ।
बीच भँवर में पड़ी नावड़ी कांठै आसी रे ॥ भ० ॥
[ध्रुव पद]

थांरो म्हांरो कर-कर सारो, जनम गमासी रे ।
कोड्याँ साटै हीरो खोकर, तूं पिछतासी रे ॥ १ ॥

खूत्यो काम राग दल-दल में, बण्यो बिलासी रे ।
क्यूं पोमावै बैठ्यो खावै, टुकड़ा बासी रे ॥ २ ॥

अधरम में अणजाण ! धरम रो मेल मिलासी रे ।
'घी में तम्बाकू न्हाख्याँ स्यूं, होसी हांसी रे' ॥ ३ ॥

जानबूझतो झूठी खींचाताण मचासी रे ।
'लो वाणियै रो साथी, संसार बतासी रे' ॥ ४ ॥

पाप पुण्य दो परभव जातां, सागै जासी रे ।
किया आपरा कर्मां स्यूं ही, दुःख सुख पासी रे ॥ ५ ॥

'सूतां-सूतां' थांरी वेळाँ, बीती खासी रे ।
'तुलसी' सद्गुरु विना तनैं कुण और जगासी रे ॥ ६ ॥

जिन परिणामें चरण गहायो, तिम हिज पार पुगायो रे ।
बालक बुद्धिवन्तो [ध्रुव पद] ॥ १ ॥

इण वय मांही विवेक बधायो, सो निरखी इचरज आयो रे ।
गुरु चरणे निज तन मन ठायो, निज जनक नो मोह मिटायो रे ॥२॥
तात साथ लेवण ललचायो, बद शासन अवगुण वायो रे ।
तो पिण रोम राय न चलायो, तो जश डंको बजवायो रे ॥३॥
गुरु सेवा में रंजित थायो, खिण पिण दूर न जायो रे ।
गुरु शुभ दृष्टि सूं आनन्द पायो, तस हृदय कमल विकसायो रे ॥४॥
चिहुँ तीरथ मन में हद भायो, नित निरखण रहती चायो रे ।
अह निश रहतो चित हुलसायो, ओ तो मुलक २ मुलकायो रे ॥५॥
विद्याध्ययन में ध्यान लगायो, दशवैकालिक कंठ करायो रे ।
काव्य कोष मांहि चित्त रुचायो, पिण आयु अल्प उपायो रे ॥६॥
मनक सिजम्भव सुतन सुहायो, षट मासे स्वर्ग सिधायो रे ।
ग्रन्थ थकी ये श्रवण सुनायो, पिण कनक निजर दिखलायो रे ॥७॥
घोर वेदना उपनी आयो, तोहि किंचित नहीं घबरायो रे ।
इण वय में आयु पूरायो, ओ मौको प्रथम लखायो रे ॥८॥
कालू गुरु दिन बाल बिलायो, जन मुख धन्य जणायो रे ।
तुलसी गणपति पुलकित कायो, लघु शिष्य लाड लडायो रे ॥९॥

प्रभु अविनाशी को भज

(लय—मनवा नांय विचारी रे)

भज मन प्रभु अविनाशी रे ।
बीच भँवर में पड़ी नावड़ी कांठै आसी रे ॥ भ० ॥
[ध्रुव पद]

थांरो म्हांरो कर-कर सारो, जनम गमासी रे ।
कोड्याँ साटै हीरो खोकर, तूं पिछतासी रे ॥ १ ॥

खूत्यो काम राग दल-दल में, बण्यो बिलासी रे ।
क्यूं पोमावै बैठ्यो खावै, टुकड़ा बासी रे ॥ २ ॥

अधरम में अणजाण ! धरम रो मेल मिलासी रे ।
'घी में तम्बाकू न्हाख्याँ स्यूं, होसी हांसी रे' ॥ ३ ॥

जानबूझतो झूठी खींचाताण मचासी रे ।
'लो वाणियै रो साथी, संसार बतासी रे' ॥ ४ ॥

पाप पुण्य दो परभव जातां, सागै जासी रे ।
किया आपरा कर्मां स्यूं ही, दुःख सुख पासी रे ॥ ५ ॥

'सूतां-सूतां' थांरी वेळाँ, बीती खासी रे ।
'तुलसी' सद्गुरु विना तनैं कुण और जगासी रे ॥ ६ ॥

खेवो पार लगाणो है

(लय—म्हांरा सतगुरु करत विहार)

चेतन संबर स्यूं कर प्रेम, क्षेम पथ में बढ़ ज्याणो है ।
पथ में बढ़ ज्याणो है, अमर सन्देश सुणाणो है ।
[ध्रुव पद]

तज अधीनता आस्रव री, भव-भ्रमण मिटाणो है ।
दुर्गति री दारुण दलना स्यूं जीव बचाणो है ॥ १ ॥

पाँच प्रकार भार स्यूं यदि, हलकापण पाणो है ।
निराकार में निर्विकार बण, हृदय रमाणो है ॥ २ ॥

परिमित कर भव-भ्रमण सुमन-समकित महकाणो है ।
तृष्णा वह्नि बुझै विरक्ति स्यूं, मन समझाणो है ॥ ३ ॥

अप्रमाद में रम कर, मन अकषाय बणाणो है ।
अशुभ जोग नें त्याग, अयोगी पथ अपणाणो है ॥ ४ ॥

शालिभद्र' अरु धन्य 'धन्न' स्मृति-पथ में ल्याणो है ।
'तुलसी' संयममय हो खेवो पार लगाणो है ॥ ५ ॥

अमोलक हीरो हारै

(लय—मनवा नांय विचारी रे)

मानव ! क्यूं न विचारै रे ।
कौडी साटै मिल्यो अमोलक हीरो हारै रे ।

[ध्रुव पद]

बुद्धि और विवेक-शक्ति है, घट में थांरै रे ।
जाण बणै अणजाण कोण क्यूं, तुझ नें बारै रे ॥ १ ॥

छोड़ प्रकाश रह्यो चावै, रजनी अन्धारै रे ।
आँख मूंद अनभिज्ञ चलै क्यूं, लकड़ी सहारै रे ॥ २ ॥

पाई की नहीं आय, खरच घर क्षमता बारै रे ।
मरै दुतरफी मार अरे ! इण पंचम आरै रे ॥ ३ ॥

दयित बिहूणी नार, नैण क्यूं काजल सारै रे ।
ओछी रकम उधार, साच बोल्यां मां मारै रे ॥ ४ ॥

निज जीवन निर्माण दिशा में, पलक पसारै रे ।
(तो) पहुँचै पल में पार, लाग्योड़ी नाव किनारै रे ॥ ५ ॥

दुनियां री दुविधा में क्यूं, अपणो हित हारै रे ।
दुनियाँ बणसी मिनख बण्याँ, आ थारै सारै रे ॥ ६ ॥

मध्यम मार्ग अणुव्रत, सफल साधना धारै रे ।
हो अपणो पुरुषार्थ, सन्त तब 'तुलसी' तारै रे ॥ ७ ॥

मानव अवतार

(लय—म्हारा सतगुरु करत विहार)

दुर्लभ चिन्तामणि सम पायो प्राणी ओ मानव अवतार ।
ओ मानव अवतार चेतन क्यूं खोवै वेकार ॥
[ध्रुव पद]

चौरासी रै चक्कर में तूं रुल्यो अनन्ती बार ।
नरक कुण्ड में सही सजोरी जमदूतां री मार ॥ १ ॥

ढोर हुयो तूँ परवशता में, ढोयो भारी भार ।
जंगल में जद बण्यो जिनावर, थारी हुई शिकार ॥ २ ॥

माटी, जल, जलचर, थलचारी, बिच्छू, सांप सियार ।
घोर वेदना सही सबल स्यूं, दुर्बल स्यूं फुंकार ॥ ३ ॥

किती बार तूं मर्‌यो गर्भ में, जननी नें संहार ।
काट-काट कर बारै काढ्‌यो, हा ! दुःख हृदय विदार ॥ ४ ॥

जनम-जनम री संचित करणी, आज हुई साकार ।
मानव चोलो रतन कचोलो, कोड्यां में मत हार ॥ ५ ॥

तज जंजाल हाल ही कर तूँ, परम तत्त्व स्यूं प्यार ।
जाग-जाग दै झालो सतगुरु, 'तुलसी' तारणहार ॥ ६ ॥

इचरज आवै

(राग—माढ़)

म्हांने इचरज आवै जी।
लख दुनियाँ रो हाल; म्हांने०।
सिर पर उभो काल; म्हांने० ॥ आंकड़ी ॥

तन क्षण-भंगुर, धन है अस्थिर, जोवनियो दिन चार।
अब अभिमान बतावो किण रो, पूछै सन्त पुकार ॥
म्हांने० ॥ १ ॥

हट्टो कट्टो तन है जबरो, हाथी को-सो जोर।
तीन दिनां की ताव देख लो, तुरत घटावै तौर ॥
म्हांने० ॥ २ ॥

मूठ्याँ भर खरच्यां नहिं खूटे, इतरी घर में आव।
आंख्याँ सूँ देखाँ हाँ आपाँ, रंक बणै है राव ॥
म्हांने० ॥ ३ ॥

जोबन की सुन्दरता पर तो, जोखा खड़्या हजार।
वासवदत्ता रो वर्णन सुण, करज्यो तनिक विचार ॥
म्हांने० ॥ ४ ॥

जो कुछ भी होवै आखिर तो, है निश्चय ही मौत।
'चन्दन' शिक्षा सुण कर करज्यो, अन्तर में उद्योत ॥
म्हांने० ॥ ५ ॥

फूला क्यों ?

(लय—महावीर प्रभु के चरणों में)

क्यों नाहक फूल रहा बन्दे, मगरूरी किसकी चलती है।
जो छाया पश्चिम दिशि में थी, वह देख पूर्व में ढलती है॥
[ध्रुव पद]

जो सूर्य प्रभात उदय होता, वह सांझ समय कहीं जा सोता।
मानव-जीवन का यह पोथा, इसमें न कहीं भी गलती है॥
क्यों नाहक फूल रहा बन्दे० ॥ १ ॥

कल, कली फूल में फूली थी, सुन्दर सौरभ अनुकूली थी।
डाली के झूले झूली थी, वह आज रेत में रुलती है॥
क्यों नाहक फूल रहा बन्दे० ॥ २ ॥

खेतों में थी जब हरियाली, कृषिकार मनाते खुशियाली।
जब धान्य राशि घर में घाली, खेतों में धूल उछलती है॥
क्यों नाहक फूल रहा बन्दे० ॥ ३ ॥

जो बड़े-बड़े थे अभिमानी, न किसी की बात कभी मानी।
जिनकी करतूत जगत जानी, अब उनकी दाल न गलती है॥
क्यों नाहक फूल रहा बन्दे० ॥ ४ ॥

नर चाहे कोइ व्याख्यानी हो, बातों में तेज तूफानी हो।
संस्कृत प्राकृत का ज्ञानी हो, लघुता बिन मोक्ष न मिलती है॥
क्यों नाहक फूल रहा बन्दे० ॥ ५ ॥

जो शूरवीर मदमाते थे, धींगड़ बन धूम मचाते थे।
औरों को रुदन कराते थे, (अब) उनकी आँखें टलबलती है॥
क्यों नाहक फूल रहा बन्दे० ॥ ६ ॥

हाथी घोड़े मोटर जिनकी, हाजरियाँ भरते छिन-छिन की।
सत्त राम-नाम कहते उनकी, असवारी आज निकलती है॥
क्यों नाहक फूल रहा बन्दे० ॥ ७ ॥

कल जो दो-दो दीपक जोये, महलों में महिला मन मोहे।
वे आज चिता पर हैं सोये, फोकट दुनियाँ हलफलती है॥
क्यों नाहक फूल रहा बन्दे० ॥ ८ ॥

राजा रावण की जान गई, प्रद्योतन की भी शान गई।
दुर्योधन की सब तान गई, आखिर बदनीति न टलती है॥
क्यों नाहक फूल रहा बन्दे० ॥ ९ ॥

इस मनुज जन्म में आकर के, चलते जो सिर नीचा करके।
उनको देखो धन पा करके, महिमाग्नि सदा प्रज्वलती है॥
क्यों नाहक फूल रहा बन्दे० ॥ १० ॥

रखकर लघुता अपने मन में, जा-जा रे सिद्धि निकेतन में।
तुलसी के गण नन्दन वन में, 'सोहन' की आशा फलती है॥
क्यों नाहक फूल रहा बन्दे ॥ ११ ॥

जीवन सफल बणाले

(लय—पानी में मीन पियासी)

संयम सरवर में न्हालै,
तप साबुन क्यूं न लगालै ।
सब आन्तर मैल मिटालै,
प्राणी पावनता पालै ।

जल बिच जनम मरै पुनि जल में, जलचर जल में चालै ।
तो भी हाल हुई नहीं मुगति, तूं मन नैं समझालै ॥ १ ॥

चोरी करके चोर गंगा में, सौ सौ गोता खालै ।
तो भी पड़ै तुरत हथकड़ियाँ, उपनय ओ अजमालै ॥ २ ॥

अर्जुनमाली सो हत्यारो, सीधो मुगत सिधालै ।
संयम-स्नान प्रभाव प्रगट ओ, भव-भव पातक टालै ॥ ३ ॥

मूल मलिन ओ तन है तेरो, चाहै जितो न्हुवालै ।
'काक कालिमा कदै न छूटै, कोटि उपाय सझालै' ॥ ४ ॥

अशुचि शरीर, सदा शुचि आतम, जो कृत कलुष धुपालै ।
"तुलसी 'हरिकेशी मुनिवर' ज्यूं जीवन सफल बणालै ॥ ५ ॥
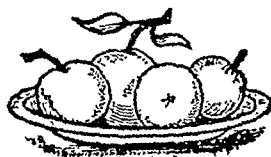
मलिन गात

(लय—म्हांरा सतगुरु करत विहार)

मानव मानो म्हारी बात मलिन ओ गात तुम्हारो रे ।
गात तुम्हारो रे गर्व थे राखो क्यांरो रे ॥

उत्पत्ति रो मूल स्रोत ही प्रथम सम्हारो रे ।
फिर अन्तस्थल अवलोकण नैं आँख उघारो रे ॥ १ ॥

ऊपर स्यूं तन दीसै आछो, मोहनगारो रे ।
अन्तर अशुचि असार, वस्तु रो है भण्डारो रे ॥ २ ॥

केवल सलिल-स्नान स्यूं पावन, व्यर्थ विचारो रे ।
'सब तीर्थां में न्हायो तो भी, तूम्बो खारो रे ॥ ३ ॥

मूल अशुद्ध न शुद्ध हुवै, कितनो ही सुधारो रे ।
भिक्षु कथित दृष्टान्त 'गाजीखां मुल्लाखां' रो रे ॥ ४ ॥

नव-नव वेश ड्रेस स्यूं सज्जित, जो तनु प्यारो रे ।
नव-नव स्रोत बहै मल पल-पल, लागै खारो रे ॥ ५ ॥

सुन्दर अशन, बसन, भूषण रो, करै बिगारो रे ।
उदाहरण ओ 'मल्लीकुंवरी' दियो करारो रे ॥ ६ ॥

शिव-साधन सामर्थ्य मनुज-तनु सार निकारो रे ।
'तुलसी' त्याग, तपस्या, स्यूं निज नैया तारो रे ॥ ७ ॥

अब तो चेत

(लय—पनजी मुंढै बोल)

चेतन अब तो चेत ।
चेत-चेत चौरासी में तूँ भमतो आयो रे ।
भयङ्कर चक्कर खायो रे ॥

मोक्ष-साधना रो सुध साधन, जो अति दुर्लभ गायो रे ।
'चक्री भोज्य' सम मुश्किल, ओ मानव-भव पायो रे ॥ १ ॥

आर्यक्षेत्र, उत्तम कुल जो नहीं, तो पायो, नहीं पायो रे ।
लम्बी आयु, देह निरोगी, भाग्य सवायो रे ॥ २ ॥

पूरी पांचूँ मिली इन्द्रियाँ, सद्गुरु संग सुहायो रे ।
इण बिन नमक विहूणो भोजन, किण नें भायो रे ॥ ३ ॥

सारी सामग्री पा, जो नहीं बांछित लाभ कमायो रे ।
तो 'ब्राह्मण' ज्यूं चिन्तामणि स्यूं काग उड़ायो रे ॥ ४ ॥

दान शील तप भाव नाव में, बैठ हृदय विकसायो रे ।
'तुलसी' भव-सागर रो लेठो, सकल मिटायो रे ॥ ५ ॥

सप्त-व्यसन निषेधक सप्तवारा

(लय—राधेश्याम)

सोम

'सोम'—श्रोन सुन सद्गुरु-शिक्षा, प्रीत जुवा से नहिं करना।
सब व्यसनों का है यह राजा, मत इस चक्कर में परना॥
पाण्डव पुनि नल राजा की सुन, हालत इससे नित डरना।
'चन्दन' इसको खेलत सुखिया, देखा कोई भी नर ना॥

मंगल

'मंगल' मांसाहारी-मानुष-रूप हूँबहू राक्षस है।
है धिक्कार उसे जो इस गर्हित वस्तु के परवश है॥
नरक गमन का हेतू, श्रेणिक का दृष्टान्त सुना होगा।
'चन्दन' इसको त्यागने वाला, ऽऽनन्दित दिन दूना होगा॥

बुध

'बुध' बुद्धिमानों को लाजिम, है मदिरा का त्याग करें।
इस पापिन को मुंह लगाकर, क्यों नर जन्म खराब करें?
नाम ही पानी शरारत का, फिर कौन शरीफ इसे चक्खे?
'चन्दन' यादव का वर्णन सुन, हरदम दूर इसे रक्खे॥

वृहस्पति

'वृहस्पति—वेश्या के घर, नहिं अकलमन्द नर जाता है।
बड़े बड़े रोगों को न्योंता, देकर कौन बुलाता है॥

जग के जूठे बर्तन को हा! कौन चाटना चाहता है?
वेश्या से बचने वाला, 'चन्दन' आनन्द मनाता है?

शुक्र

'शुक्र'—सयाने पुरुष, पराये-धन पर नहिं ललचाते हैं।
लोष्टु समान मान उसको, ना अपने हाथ उठाते हैं॥
चोरी करने वाले देखो, कितनी आपद पाते हैं।
'चन्दन' इस अवगुण को तजकर, चतुर सुखी बन जाते हैं॥

शनि

'शनि'—शिकार खेलना छोड़ो, पाप बड़ा यह माना है।
मासूमों को मार तुम्हें क्या, अपना बल दिखलाना है?
जिसको तुम मारोगे क्या, तुमको वो भी नहिं मारेगा?
'चन्दन' भव-भव में इसका, बदला फिर कौन उतारेगा?

रवि

'रवि'—रूप परनारी का ला, यारी जो नर देखत है।
अपनी प्राण-पियारी छारी, मारी गइ उसकी मत है॥
कीचक, रावण ने इसके वश, पड़ सर्वस्व किया स्वाहा।
'चन्दन इससे बचने वाले, की जग में होती वाहवा॥

सप्त वार पर सप्त व्यसन को, याद राख छोड़ो भाई।
अपनी आतम सुखी बनाओ, देवो सुरपुर की साई॥
तुलसी गणि कृपया मुनि 'चन्दन' ने सच राह दिखाई है।
इस पर चलने से ही तुम्हारी, भय्यो! खूब बड़ाई है॥

साधु निमत नहीं भाखै

(लय—मात साखम्भ राज राणी, लाज तूं रखलै भवानी)

निमत नही भाखै गुरु ज्ञानी, हुवै जिम संयम की हानी।
[ध्रुव पद]

जैन मुनि सावज नहीं भाखै, महाव्रत यत्ना से राखै।
सुधा रस संयम को चाखै, मुक्ति के सुख की अभिलाषै॥
निमत भाखणो साधु नें, कल्पै नहीं लिगार।
वीतराग भगवन्त परुप्यो, अनर्थ हुवै अपार॥
सुणो मन थिर कर भव प्रानी॥ नि०॥ १॥

नगर एक बसन्तपुर छाजै, देखताँ भूख दूर भाजै।
भूपति रिपुमर्दन राजै, राय शिर देख इन्द्र लाजै॥
चतुरंगिणी सेना सझी, चढ़ गनी पर जाय।
पापमति ठाकुर नृप हुकमें, गयो युद्ध के मांय॥
सोच में बैठी ठकुरानी॥ नि०॥ २॥

साधु एक तिण बिरियाँ आयो, गोचरी फिरतो मन भायो।
देख चिन्ता मुनि फुरमायो, बाई मन उदास किम थायो॥
गद २ स्वर कहै हे मुनि!, मम पति गयो संग्राम।
खबर न पामी दिवस सप्तमो, अवर फिकर नहीं स्वाम॥
नैण से झरण लग्यो पानी॥ नि०॥ ३॥

भेद सुण मुनिवर इम भाखै, धर्म कर चिन्ता मत राखै।
फिकर तज आँसू मत न्हाखै, ध्यान धर प्रभु को मुनि दाखै॥
दिन चौथे मध्याह्न में तुझ पति आसी धाम।
निमत परुपी निज मकान पर, मुनिवर आयो ताम॥
कर्म वश करी मत नादानी॥ नि०॥ ४॥

चतुर्थो उग्यो दिन कारी, प्रसन्न मन ठाकुर की नारी।
करी सब भोजन की त्यारी, पति घर आयो तिणवारी॥
जीमावै भोजन प्रिया, सझ सोलै शिणगार।
भावी योग मुनिवर पिण आयो, बहिरावै तव आहार॥
हरष मन उलट भाव आनी॥ नि०॥ ५॥

ढंग मुनि बनिता को देखी, पापमति बहुत हुवो द्वेषी।
खड्‌ग कर लीनो मुनि पेखी, जमावै मुझ आगल शेखी॥
बोली धड़ धड़ धूजती, ठकुरानी कर जोड़।
कोप निवारो ये मुनिवर तो, उपगारी शिर मोड़॥
हकीकत कहि सब ठकुरानी॥ नि०॥ ६॥

कोप कर बोल्यो अकड़ाई, घोड़ी के पेट माहीं काँई।
बछेरो मुनि कहै रङ्ग स्याही, श्वेत शिर टीको सुण भाई॥
शिर काट्यो घोड़ी तणो, हा! हा! हुवो अकाज।
पेट चीर देख्यो सही मानी, साच मिल्यो सब आज॥
जावो घर बोल्यो अभिमानी॥ नि०॥ ७॥

जाय गल फाँसी मुनि लीनी, वाही विधि ठकुरानी कीनी।
मर्यो तिन ठाकुर मति होनी, दशा दुर निमत एह दीनी ॥
किशनलाल साची कहै, सौ वातों की एक।
संयम धारी सुमति गुप्ति को, राखै अधिक विवेक ॥
तिरण भवसागर भय हानी ॥ नि० ॥ ८ ॥

जिन्दगी सुधार

(लय—चोरी चोरी चल दिये)

चार दिन की है चाँदनी विचार कर लो,
इस जिन्दगी का कुछ तो सुधार कर लो ॥
[ध्रुव पद]

वनके महमान यहाँ पर आये हो,
वापिस जाने की टिकट लाये हो,
रहना थोड़ा है पर-उपकार कर लो ॥ इस० ॥ १ ॥
वैर-ज़हर से दिल को हटालो तुम,
प्रेम सबही के साथ में बनालो तुम,
जग में अच्छे सा व्यवहार कर लो ॥ इस० ॥ २ ॥
वेईमानी का पैसा मत लो तुम,
धोखा किसी को कभी मत दो तुम,
वेड़ा भव-जल से 'धन मुनि' पार कर लो ॥ इस० ॥ ३ ॥

क्रोध रो नशो

(लय—मन्दिर में कांई ढूंढती फिरै)

छोड़ो क्यूं कोनी क्रोध रो नशो
थारी आंख्याँ में लोहि रो उफाण ॥
थांरी अक-बक बकणै री पगड़ी बाण ।
दूजाँ नें कालै नाग ज्यूं डसो ॥

क्रोध बड़ो दुर्गुण दुनियाँ में, घट-घट में वसनारो ।
जिण घट में नहीं क्रोध निवासी, वो नर जगत सितारो ॥ १ ॥

पंचेन्द्रिय प्राणी री यद्यपि, करै न कतल विचारो ।
तदपि कषायी नाम कुपित रो, आगम-वचन निहारो ॥ २ ॥

प्रेम परस्पर दर पीढ्याँ रो, शिष्टाचार सदा रो ।
खिण भर में तिणखै ज्यूं तोड़ै, एक वचन कहि खारो ॥ ३ ॥

गाली सुण्याँ न हुवै गूमड़ा, छिदै न अवयव थांरो ।
थे ज्यो सहस्यो समभावाँ स्यूं, तो वो पिछतावण हारो ॥ ४ ॥

गालीवान कठै स्यूं ल्यासी, मांग मधुर वच प्यारो ।
थे तो मृदुल मनोहर भाषी, अपणो विरुद विचारो ॥ ५ ॥

जठै क्रोध है, अहंकार री नियमाँ तजै न लारो ।
सुण दृष्टान्त 'सन्त धोबी रो' मन री रीस उतारो ॥ ६ ॥

'विफल कियो कुल पुत्र रोष, ज्यूं झट बारह वर्षां रो ।
साची क्षमा धरै उर 'तुलसी' होवै सफल जमारो ॥ ७ ॥

फिर वीं रस्ते जाई नाँ

(लय—वन जोगी मन भटकाई नाँ)

नर-देही व्यर्थ गमाई नाँ।

कर्मां रो करज कमाई नाँ। नर०। विषयाँ में दिल विलमाई नां।

तूँ भटक्यो लख चौरासी में,
चढ्यो जनम-मरण री फाँसी में।
रह्यो काल अनन्त उदासी में,
अब फिर वीं रस्ते जाई नाँ॥ १॥

धन दौलत अरु सम्पत्ति सब को,
अस्तित्व बिजली रो झबको।
दृष्टान्त है पाण्डव-कौरव रो,
मगरूरी मन में ल्याई नाँ॥ २॥

मन मोहन स्त्री, परिजन न्याती,
स्वारथ में है सारा साथी।
बिन स्वारथ मार्‌यो सुत खाती,
मूरख ! ज्यादा मुरझाई नाँ॥ ३॥

आशा-आशा रै बन्धन में,
पंचेन्द्रिय विषय-निबन्धन में।
'शिर फूट पड्यो अभिनन्दन में,
वा काम इमारत आई नाँ॥ ४॥

है विषम करम-गति दुनियाँ में,
इक छिन में कुण गति कुण पामें।
मत राच लोभ अरु ललनाँ में,
'तुलसी' शिक्षा विसराई नाँ ॥ ५ ॥

त्याग तपस्या की गठड़ी

(लय—नगरी नगरी द्वारे द्वारे)

सुनते सुनते बीती सारी, तेरी रे उमरियाँ।
बान्ध बान्ध अब तो कुछ, त्याग तपस्या की गठरियाँ ॥
[ध्रुव पद]

आठ बरस का लगा था सुनने, साठ बरस का हो गया २
पोते से तूं बन गया दादा, पर परिवर्तन है कहाँ २
है काली की काली अब तक, तेरी रे चदरियाँ ॥ १ ॥
थे जो काले बाल होगये, वे बगुले की पाँख-से २
कानों से तूं सुन नहीं सकता, नहीं देखता आँख से २
बड़ा अचम्भा फिर भी तेरा, मन तो है चकरियाँ ॥ २ ॥
सुन करके कुछ असर अगर हो, तो सुनने का सार है २
इधर सुना और उधर निकाला, फिर सुनना बेकार है २
तर न सकेगी पाँच कोडियों वाली रे पुतरियाँ ॥ ३ ॥
काम क्रोध मद मोह लोभ तज, 'धन' मुनि समता धार ले २
दिल के आइने में परमेश्वर की तसवीर निहार ले २
तर जायेगी भव-सागर से तेरी रे नावड़ियाँ ॥ ४ ॥

मौत आ रही

(लय—अफसाना लिख रही हूं)

नाजुक तेरे जीवन की, क्षण-क्षण है जा रही ;
नजदीक ही नजदीक, प्यारे! मौत आ रही।

[ध्रुव पद]

आया था क्या करने को—
क्या तू ने है किया···क्या तू ने है किया ?
अब जाग-जाग मत सो रे! घड़ियाँ जगा रही। नजदीक० ॥ १ ॥

तेरे इस पागलपन पर—
हैरानी होती है—हैरानी होती है।
हा !! यह कैसी मादकता, तेरे पर छा रही! नजदीक० ॥ २ ॥

तूं कहता मेरा सब कुछ—
कहते ज्ञानी कुछ नहीं···कहते ज्ञानी कुछ नहीं।
राही लोगों की प्रीति, झूठी-सी लखा रही। नजदीक० ॥ ३ ॥

जो जाना ही है तज कर—
तो प्रीति कौन-सी ? तो प्रीति कौन-सी ?
हा! हा! तो भी यह माया, क्यों तुझ को ढा रही? नजदीक० ॥ ४ ॥

अनमोल वस्तुओं से—
है तेरा घर भरा—है तेरा घर भरा।
'चन्दन' आशाकी उलझन, फिर क्यों सता रही? नजदीक

भूल सुधारो

(लय—म्हांनै चाकर राखो जी)

निज भूल सुधारो जी !

भूल सुधारो भूल सुधारो, ऊंडी बात विचारो।
अपनी-अपनी भूल सुधार्‌यां, सुधर जाय जग सारो ॥

[ध्रुव पद]

नुक्ताचीणी ओरां री तो, करण नयन मुंह फारो।
डूंगर बलती जग देखै पर, पगतल क्यूं न निहारो ॥ १ ॥

अपनी भूल भयंकर तो भी, ज्यूं त्यूं ढांकण ढालो।
कभी पराई राई जिति-सी, पहाड़ करै परबारो ॥ २ ॥

पीत रोग रो रोगी देखै, पीत रंग सगलां रो।
दोषी री भी आही हालत, दिये तलै अन्धारो ॥ ३ ॥

अपनी प्रकृति सुधार्‌यां ही, नें नर होवै सब प्यारो।
उदाहरण यदि सुणणो चावो, तो है 'सेठ सुता' रो ॥ ४ ॥

पहिलो ओ कर्त्तव्य भव्य जन, अपणो घर संभारो।
'तुलसी' हेतुभूत सन्त जण, (पर) निज स्यूं निज निस्तारो ॥ ५ ॥